भूमिका ।

वर्तमान समय के नवयुवकों की रुचि दिन ब दिन नई तर्ज़ के नाटकीय गाने आदि की तर्फ झुकी देख कर धर्म लाभार्थ जैन शास्त्र श्री उत्तराधयन जी सूत्र के नवें अध्यन के अधिकार का इस नाटक में समावेश किया है। मेरा इस नाटक रचने का प्रथम समय का ही परिश्रम है इससे संभव है कि अनेक दोष और त्रुटियां रह गई होंगी अतः सज्जन पाठकों से सविनय निवेदन है कि जो दोष उनकी दृष्टिगोचर हों कृपया दास को सूचना देकर कृतार्थ करें ताकि द्वितीयावृत्ति में उनके संशोधन करने का प्रयत्न किया जावे।

ग्रन्थकर्त्ता—

मनसाराम।

पात्र-परिचय ।

पुरुष

मनिरथ—मालवा देश के सुदर्शनपुर नगर का राजा।

जुगबाहू—मनिरथ का छोटा भाई ।

चन्द्रयश—जुगबाहू का बड़ा पुत्र ।

नमीराज—चन्द्रयश का छोटा भाई ।

बुधसैन—मनिरथ का मन्त्री ।

पद्मरथ—मिथिला नगर का राजा ।

सूरसैन—राजा पद्मरथ का मन्त्री ।

मनिप्रभ—विद्याधर ।

मनिरत्न चूड़जी—महात्मा (मनीप्रभ के पिता)

बहादुरसिंह—पहरेदार ।

कायरसिंह—पहरेदार ।

शक्रेन्द्र महाराज—पहले देवलोक के इन्द्र ।

ब्राह्मण—इन्द्र का बदला हुआ रूप ।

स्त्री

मदनरेषा—जुगबाहू की धर्म पत्नी ।

सुदर्शना—साध्वी ।

सुव्रता—मदनरेषा का साध्वी नाम ।

मदनवेगा—मनिरथ की रानी ।

पटरानी—नमीराज की स्त्री ।

मदनरेषा-नमीराज नाटक.

मनसाराम रचित ।

एक्ट १

राजा मनिरथ का मदनरेषा पर
आसक्त होना और जुगबाहू
को क़तल करना और
मदनरेषा का बन को
जाना ।

* श्रीजिनायनमः *

(नोट) चौथे काल अर्थात् सतयुग समय में भारतवर्ष के मालवा देश में सुदर्शनपुर एक बहुत सुन्दर रमणीक तथा बड़ा शहर था और वहां जैन धर्म कुल उत्पन्न राजा मनिरथ राज करता था।

सीन १

दरबार का परदा

१

महाराज मनिरथ व जुगबाहू का दरबार में बैठे हुये नज़र आना और परियों का श्रीजिनेन्द्र भगवान् का मङ्गलाचरण गाना।

चाल (नाटक) तू ला ला ला ला भर भर जाम पिला गुल का ला बनादे मतवाला।

प्रभू जय जय जय जय।

सङ्कट हरन॥ मङ्गल करन॥ स्वामी महावीर॥
त्रिलोक ईश है-मुक्ती अधीश है-अर्ज़ अहर्नीश है-
चर्णों में शीश है॥
भव जल अपार है॥ मेरी नाव मँझार है॥
तू तरन तार है॥ कर इसको पार है॥
प्रभू जय जय जय जय॥ सङ्कट०॥

सीन २

राज महल का परदा

२

मनिरथ का मदनरेषा के प्रेम में ग़मग़ीन मूरत बनाये हुए नज़र आना और बुधसैन मन्त्री का आकर उदासी का सबब पूछना।

चाल (इन्द्रसभा) घर से यहां कौन खुदा के लिये लाया मुझको।

चेहरा अफ़शुर्दा है क्यों, हाल तुम्हारा क्या है।
है झड़ी अश्क लगी, ख़याल तुम्हारा क्या है ॥१॥
आपकी देख के हालत हुवा, मुजतर मैं भी।
मुझको बतलादो सबब, मलाल तुम्हारा क्या है ॥२॥

३

मनिरथ का जवाब चाल नम्बर (२)

मदनरेषा की मुहब्बत का लगा तीर मेरे।
उससे मिलने का कोई ढङ्ग बतादे मुझसे ॥१॥
उसके दीदार बदूं जान चली जाती है।
जल्द तदबीर कोई करके मिलादे मुझसे ॥२॥

४

बुधसैन मन्त्री का राजा मनिरथ को समझाना।

चाल—कोई चातुर ऐसी सखी न मिली मोहे पीके द्वारे पहुंचादेती।

अजी राजन कहा मेरा मानो सही।

जो मैं कहता फरक इसमें पाना नहीं ॥
लफज आना जबां पर तो क्या जिक्र है ।
ऐसा वद ख्याल दिलमें भी लाना नहीं ॥१॥
मदनरेषा बड़ी शीलवंती सती ।
धर्म जिनराज में लीन और गुणवती ॥
शील खंडन नहीं कर सके सुरपती ।
आप अपनी हकीकत जताना नहीं ॥२॥
तेरे महलों में रानी भरी गुणापार ।
कुछ तो दिलमें करो अपने सोचो विंचार ॥
छोटे भ्राता की स्त्री को पुत्री सुमार ।
लाज दुनियां की बिलकुल गंवाना नहीं ॥३॥
कष्ट सतियों को देना नहिं है रवा ।
इसमें हरगिज न होगा तुम्हारा भला ॥
आपका इस जहां में कुयश छायेगा ।
मनसा नरकों सिवा फिर ठिकाना नहीं ॥४॥

५

राजा मनिरथ का जवाब ।

चाल—यार की गलियों में क्योंकर यार जाना छोड़दे ।

मंत्री कायल करो मत मुझको इस तकरीर से ।
जल्द तर मुझसे मिलावो कर अकल तदवीर से ॥१॥

न मिले जब तक वो प्यारी चैन मुझको है नहीं।
कुछ नहीं सूझे फंसा दिल, प्रेम की ज़ंजीर से ॥२॥

६

मन्त्री का राजा को समझाना।

चाल (पंजाबी) चेतन यह तो नरतन फेर मुश्किल पाना।

राजन छोड़ो विषय की बात मान कहना।
मदनरेषा प्यारी, सतवंती नारी, मानो कहन हमारी,
छोड़ो ऐसे ख़यालात मान कहना ॥१॥ राजन० ॥
पर नारी को जान-काली नागन समान-सब दुक्खों की
खान, तुमको कहत सुनात मान कहना ॥२॥ राजन० ॥
रावन महाराया, सिया हरके लाया, अति दुक्ख पाया,
सब जगमें है विख्यात मान कहना ॥३॥ राजन० ॥
देखो राजापद्मोत्तर-लाया द्रौपदिहर-गयानकोंमें मर
करके आतम की घात मान कहना ॥४॥ राजन० ॥
करो कीचकका ख्याल-जरादिलमेंभूपाल-सेठधवल-
काहालसही कैसी आफ़तमान कहना ॥५॥ राजन० ॥
होकरक्षत्रधारी - क्यायहबातविचारी - नहींयहशान
तुम्हारी मनसाभरम गंवातमानकहना ॥६॥ राजन० ॥

७

राजाका गुस्सा होकर मन्त्री से कहना (वार्तालाप)

अय नमकहराम मंत्री मेरे सामने से चले जाओ
और मुझे मुंह न दिखाओ।

८

मन्त्रीका जाना और राजाका ड्योढ़ीवान को पुकारना (वार्तालाप)

राजा—ड्योढीवान।

ड्यो०—(हाज़िर होकर) महाराज क्या हुक्म है।

राजा—जाओ और कमलादासी को बुलालाओ।

ड्यो०—जो हुक्म।

९

ड्योढ़ीवान का जाना और कमला दासी का हाज़िर होकर राजा से अर्ज़करना॥

चाल—यह तो मैं क्योंकर कहूं तेरे खरीदारों में हूं॥

दस्त बस्ता अर्ज़ दासी की प्रभु सुन लीजिये॥
है बजालाने को हाजिर जो हुक्म हो कीजिये॥१॥
खूं पसीने की जगह बहाने में क्या इंकार है॥
वास्ते सरकार के यह जान तक तय्यार है॥२॥

१०

राजा का जवाब॥

चाल-(ग़ज़ल) यह कैसे बालबिखरेहैं यह सूरत क्यों बनी ग़मकी॥

अरी बांदी तू ला इक थाल रत्नों का भरा करके॥
जवाहर से जड़ाऊ वस्त्र आभूषण सजा करके॥१॥
भरो दूजेमें मेवे फूल फल आदि यह सब वस्तू॥
मिठाई हरक़िस्मकी पान रखना भी लगा करके॥२॥
तूलेजा मदनरेषा पास फिर इन सबही चीज़ों को॥

यह तोफ़ा भेजा राजाने बचन कहना सुना करके ॥३॥
करो मंजूर खुश होकर मुरादें दिलकी पूरी हों ॥
अदाकर शुकरिया मश्कूर और ममनूं बना करके ॥४॥

* दासी का जाना *

सीन ३

मदनरेषा के महल का परदा।

११

मदनरेषा का बैठे हुए नज़र आना दासी का सामान लिए हुए हाजिर होकर अर्जकरना ॥

चाल—याद आता है परी नाज़ से आना तेरा ॥

लीजिये राजाने यह भेजा है सामां तुमको ॥
हो मुबारिक यह तुम्हें प्यारा मेहरबां तुम को ॥१॥
उम्र दराज होवे आपकी और राजा की ॥
साया यह उनका सदा रक्खेगा शादां तुमको ॥२॥

१२

मदनरेषा का अपने ज्येष्ठ के भेजे हुये तोफ़े को सत्कार के साथ रख लेना और दासी से कहना ।

चाल—नम्बर (११)

उनका मंजूर है सर चश्म से फ़रमां मुझको ।
अपनी रहमत से किया ज़ेरेबार अहसां मुझको ॥१॥

मेरी जानिब से नमस्कार अरज़ कर देना।
और कहना कोई खिदमत हो बताना मुझको ॥२॥

सीन ४

मनिरथ के महल का परदा।

१३

मनिरथ का बेताबी से दासी का इन्तजार करते हुये नजर आना।

चाल—नम्बर (११)

ख़्वाहिशे ख़बरे सनम मुझपे सितम ढाती है।
और फ़ुरकत में मेरी जान चली जाती है ॥ १ ॥
खटका है दिलको मेरे भेद न हो यह ज़ाहिर।
यह भी धड़का है मुझे क्या वोह ख़बर लाती है ॥२॥
आंखें हैं दरपे लगीं आई न अब तक बांदी।
हाय रह रह के तबियत मेरी घबराती है ॥ ३ ॥
प्रेम में फँस के मेरी जान मुसीबत में पड़ी।
गर ज़रा देर हुई तो मेरी क़ज़ा आती है ॥ ४ ॥

१४

सामने से दासी का आना और राजा का उससे कहना।

चाल—नम्बर (११)

क्या ख़बर लाई अरी दासी बतादे मुझ को।
माजरा गुज़रा है जो साफ़ सुनादे मुझ को ॥

१५

दासी का जवाब—चाल—नम्बर (११)

महल में जाके यह जब तोफ़ा दिखाया उसको ।
और जो हुक्म था महाराज सुनाया उसको ॥ १ ॥
करके ताज़ीम सुना सरखमे तस्लीम किया ।
आपके तोफे ने ममनून बनाया उसको ॥ २ ॥
अपनी जानिब से नमस्कार कही है तुमको ।
कोई सेवा हो अगर क़हदें कृपाया उसको ॥ ३ ॥

दासी का जाना ।

१६

राजा मनिरथ—स्वयम् (वार्तालाप)

दासी की बात से तो ऐसा प्रतीत होता है कि मदनरेषा भी मुझसे प्रेम रखती है। अब मुझे चल कर मदनरेषा से अपनी मुहब्बत को ज़ाहिर करना चाहिये ।

राजा का रवाना होना ।

सीन ५

मदनरेषा के महल का परदा।

१७

मदनरेषा का बैठे हुये नज़र आना और राजा मनिरथ का आना और मुहब्बत का इज़हार करना ।

चाल—(सारङ्ग) कोई चातुर ऐसी सखी न मिली मोहे पीके
द्वारे पहुंचा देतो।

प्यारी हिज्र में तेरी यह हालत हुई,
अब जियादा जुदाई गवारा नहीं।
मरमिटा प्रेम में मैं तो अब खूब ही,
बस बिंदू तेरे कोई सहारा नहीं ॥१॥
तेरे चेहरे की जब से ज़ियारत हुई,
खाना पीना छुटा नींद ग़ारत हुई।
प्रेम ज्वर की है पूरी हरारत हुई,
होगा दुनियां में रहना हमारा नहीं ॥२॥
देखकर मेरी हालत क्यों ख़ामोश हो,
दीदा दानिस्ता प्यारी न मदहोश हो।
किस तरह से भला मुझको संतोष हो,
नेह काभी ता होता इशारा नहीं ॥३॥
और कुछ बात नहीं अब सुहाती मुझे,
याद हरदम तुम्हारी रुलाती मुझे।
क्योंन दिल को सबर तू दिलाती मुझे,
वरना सरपे क्यों रखती दुधारा नहीं ॥४॥

१८

मदनरेखा का जवाब चाल नं० १७

कुछ समझ कर ज़रा मुंह से राजन कहो,
यह सखुन मुझसे कहना दोबारा नहीं।

ज्ञानकी पहिले से ऐसा पापात्मन्,
दर्श करती कभी भी तुम्हारा नहीं ॥१॥
तैंने बकवास जो की वह सब सुन चुकी,
तेरी सूरत व सीरत से बेज़ार हूं।
अबतू हटज़ा मेरे सामने से परे,
ठहरना तेरा यहां पर गवारा नहीं ॥२॥
जेष्ठ बंधव है बालम का जबकि मेरे।
इसलिये हूं समझती धरम का पिता।
बाज़ आ अब भी तू इस बदी से गुज़र,
वरना अच्छा नतीजा तुम्हारा नहीं ॥३॥
क्या मनुष्य जन्म लेने का यह सार है,
ऐसे अधर्म पर जो तू तय्यार है।
नाम जैनी पने को लजावे मती,
रहस्य इसका तो मनशा विचारा नहीं ॥४॥

१९

मनिरथ का जवाब—चाल—नम्बर (१८)

मदनरेषा नहीं वक्त उपदेश का,
लैक्चर जेब देता तुम्हारा नहीं।
तीर मुहब्बत का सीने में जाकर लगा,
ध्यान हिरदे से जाता विसारा नहीं ॥१॥

२०

मदनरेषा का जवाब--चाल—नम्बर (१८)

अरे पापी तू मुझको सुनाता है क्या,
बेहयाई की बातें बनाता है क्या।
खैंच लूंगी हलक से ज़बां को अभी,
नफ़स को तूने गर अपने मारा नहीं ॥१॥

२१

मनिरथ का जवाब—चाल—नम्बर (१८)

जानो दिल करचुका दोनों पहिले नज़र,
रक्खे फिरता हूं अबतो हथेली पे सर।
नाज़ बरदारी की मुझमें ताकत नहीं,
करना मायूस मुझको दिलारा नहीं ॥१॥

२२

मदनरेषा का जवाब—चाल—नम्बर (१८)

मैं समझती रही कि तू बाज़ आयेगा,
कर शर्म अपनी बातों पे पछतायेगा।
पाजी निर्लज्ज तुझको बिना ज़क दिये,
कहने सुनने से होगा सहारा नहीं ॥१॥

२३

मनिरथ का जवाब—चाल—नम्बर (१८)

हट हुई औरतोंवाली इस आन में,
लफ़ज़ कहती हो जो तुम मेरी शान में।

अबतो जाता हूं ख़ातिर तुम्हारी से,
आज़ुर्दा तुमको करूं माहे पारा नहीं ॥१॥

राजा का जाते हुये नज़र आना।

सीन ६

राजमहल का परदा।

२४

मनिरथ का मदनरेखा के वियोग में गाते हुये नज़र आना।

चाल-(नाटक) हाय अच्छे पिया मोहि दरश दिखाजा रैन में जी घबरावत है।

3

प्यारी तपत हृदय की आके बुझादे,
आग विरह की जरावत है॥
न कोई आता नज़र हाले जिगर किससे कहूं।
उमड़ के आता है दिल कैसे मैं ख़ामोश रहूं।
हैं रोते रोते लगे ग़श पे ग़श आने मुझको।
न ताब इतनी रही सदमा जुदाई जो सहूं॥
अब कोई घड़ी का मेहमां हूं जगमें,
जान चली अब जावत है॥ १॥
प्यारी तपत हृदय की० ॥

२५

बुधसैन मन्त्री का आना और राजा को समझाना।

चाल—नंबर (२४)

राजा नीती धरम पर गौर करो तुम,
कहां जिया भरमावत है ॥
यह आप कहते हो क्या सोचो और बिचारो तो।
ठिकाने होश करो आप को सम्भारो तो ॥
न रख के इसमें क़दम जिन्दगी बरबाद करो।
है नाम भी तो बुरा ग़ौर कर निहारो तो ॥
स्वामी ख्याल अनुचित दिल से निकालो,
क्यों सर आफ़त लावत है ॥
राजा नीती धरम पर० ॥१॥

२६

मनिरथ का जवाब

चाल (नाटक) जाओजी जावो किस नादान को बहकाने आए।

जचती है उल्टी सबही लगा है क्या मुझको समझाने ॥
बातें नहीं तेरी गवारा। इनसे नहीं होता सहारा।
मुशकिल अबजीनाहमारा। जब तक न मिलेदिलआरा
दिलमें लगी हो जिसके वोही जाने तू क्या जाने ॥१॥
प्रेम जालिम ने मुझे अबतो है लाचार किया।
गम अलमरञ्ज को हमदर्द व ग़मख्वार किया ॥

ज़िन्दगी तल्ख़ हुई जीने से बेज़ार किया।
जान दिल हमने भी अब उसपेही निसार किया॥
झेलूंगा आफ़त सारी। और होगी जो कुछ ख्वारी।
बिपता भी सब ही भारी। दिलमें है खूब बिचारी।
देखी है जब से मदनरेषा नहीं है होश ठिकाने॥२॥

२७

मन्त्री का राजा को समझाना।

चाल—(गज़ल) इलाजे दर्द दिल तुमसे मसीहा हो नहीं सकता।

जो सतियों को सताता है नहीं आराम पाता है।
यहां ज़िल्लत उठाता है नर्क में मार खाता है॥१॥
दुशाशन राजा रावन और कीचकने क्या दुक्ख पाया।
हुई आखिर गती क्या देखिये शास्त्र सुनाता है॥२॥
छुटा सब राज-पाट अपना बेगाना आशना जो था।
नसीहत देखकर दिलमें नहीं फिरभी क्यों लाताहै॥३॥
अभीतक कुछ नहीं बिगडा है मेरा मानले कहना।
विषय में होके क्यों अन्धा जन्म वृथा गँवाता है॥४॥
जो खुद समझे व समझाने से समझे वहभी आकिल है।
मगर मूरख तो जब समझे किया जब आगेआता है॥५॥
बहुत समझा चुका मनशा नहीं माने तेरी मरज़ी।
लोमेरा जयजिनेन्द्र आखिर को अब बन्दा तो जाताहै।६।

मन्त्री का जाते हुये नज़र आना।

सीन ७

जुगबाहू के महल का परदा।

२८

महाराज जुगबाहू और मदनरेषा का बैठे हुये नज़र आना और मदनरेषा का अर्ज़ करना।

चाल—(नाटक) सोहनी।

महाराज जङ्गलवाली कोठी,
जिसकी महिमा अपार है।
सोती थी दासी उस जगह,
निद्रा में हो सरशार है ॥ १ ॥
अरसा हुआ रात्री समय के,
स्वप्न का अधिकार है।
प्रवेश करते मुख में देखा,
चन्द्रमा सुखकार है ॥ २ ॥
आज उसी पूरण चंदर की,
चांदनी की बहार है।
उस बाग़ में ही दासी के,
क्रीड़ा का शबको विचार है ॥ ३ ॥

२९

जुगबाहू का जवाब—चाल—नम्बर (२८)

फिर मुझ को प्यारी आपके,
क्या हुक्म से इन्कार है।
मद्दे नज़र हर दम तेरा,
मंजूर ही इज़हार है ॥ १ ॥
वहां आप के लायक प्रिया,
सामान सब तय्यार है।
अब देर क्या चलिये हवा भी,
आज तो सुखकार है ॥ २ ॥

दोनों का जाते हुये नज़र आना।

सीन ८

बाग के महल का परदा।

३०

महाराज जुगबाहू और मदनरेषा का बैठे हुये नज़र आना।
और परियों का श्री नवकार मंत्र की महिमा गाते हुये नज़र आना।
चाल (नाटक) तोरी छलबल है प्यारी तोरी कलबल है न्यारी करो मोह से न वातें सांवरिया जान।

जपो मंत्र नवकार, है इसी का आधार।
होवे भव जलसे पार, मिले पद निर्वाण ॥
करो इसका ही ध्यान, यह है सब से महान।
सुख रत्नों की खान, नहीं इसके समान ॥

द्वादशांग बानीसार, जिन बैन चित्त धार।
सफल करो यह मनुष का अवतार॥
देवे कुमति को टाल, सात नरकों की झाल।
सुख रत्नों की माल, मिले मनशा ज्ञान॥१॥

३१

जुगवाहू—(परियों से) कोई और गाना सुनाओ।
परी—जो हुक्म।

३२

परियों का गाना।

चाल=हाय अच्छे पिया मोहि दर्श दिखाजा रैनमें जी घबरावतहै।

चेतनराय पे आके अज्ञानने कुमतिका परदा डारदिया।
इसके ही कारण काल अनादी भ्रमत २ गुज़ार दिया॥
चाहे मन्दिर में तू गिरजा में शिवालय में जा।
चाहे कावे में तू मसजिद में जिनालय में जा॥
चाहे गङ्गा में तू यमुना में तू पुष्कर में नहा।
चाहे गिरनार पे तू आबू शिखर पे तू जा॥
ज्यूं निज क्रांति बिन नहीं शोभा वृथाही सबशृङ्गारकिया॥
मिले तुम्हें जो ज्ञान दृष्टी से विचार करो।
हृदय के नैन खोल आप को निहार करो॥
इन्द्री पांचों करो वस में मन को मार करो।
दान शील तप और भाव का प्रचार करो॥

जिससे प्रगट हो रूप चिदानन्द मनशा जिसे तू बिसार रहा ॥

सीन ९

मनिरथ के महल का परदा ।

३३

मनिरथ का गाना ।

चाल—(ग़ज़ल) उलफ़त के ख़ार देंगे फ़ुरक़त के ख़ार देंगे ।

मोहब्बत में उसकी हम सब सदमे गुज़ार देंगे ।
रंजो अलम मुसीबत ख़्वाह वोह हजार देंगे ॥ १ ॥
पर दिल में एक खटका मेरे लगा हुवा है ।
होगा तो चैन जबही उसको निकार देंगे ॥ २ ॥
जुगबाहू को अगर यह मालूम भेद होगा ।
फिर न ख़बर वह मुझको क्या २ आज़ार देंगे ॥ ३ ॥
तख़्त और ताज का तो फिर ज़िक्र क्या है बल्के ।
तन से जुदा वह मेरे सरको उतार देंगे ॥ ४ ॥
जुगबाहू पे यह खुलने से पहिले राज़ अब हम ।
या उसको मार देंगे या जाँ निसार देंगे ॥ ५ ॥

३४

(वार्ता)

अब मुझे वे फ़िकर नहीं होना चाहिये जल्दी

ही कोई तदबीर सोचनी चाहिये जिससे जुगबाहू मारा जाये ।

(आसमान की तर्फ़ देखकर) अहा हा हा

(शेर)

क्या आरही छाई हुई काली घटा आकास पर ।
चमकाएगी बिजली चमक मेरा सितारा रास पर ॥

(वार्ता)

इस समय जुगबाहू और मदनरेषा बाग़ में हैं अब मेरे लिए भी बेहतर वहां जाना होगा यह अवसर आजमाना होगा अगर यह मौक़ा भी खवाना होगा तो फिर पछताना होगा नाहक़ जिल्लत उठाना होगा बल्कि मुझको ही जान तक गंवाना होगा ।

३५

चाल नं० ३२ (गाना)

कुछ ऐसा शुभ महूरत यह काम होवे मेरा ।
निर्विघ्न मनका चाहा अंजाम होवे मेरा ॥ १ ॥
जुगबाहू माराजाए मिलजाए वोह प्यारी ।
फिर खूब ही तो ऐशो आराम होवे मेरा ॥ २ ॥
चलता हूं अब मैं यहां से भगवन तेरे सहारे ।
चरनों में तेरे स्वामी पर नाम होवे मेरा ॥ ३ ॥

(मणिरथ का आते हुए नजर आना)

सीन १०

बाग के फाटक का परदा।

मनिरथ का आना और बहादुरसिंघ पहरेदार से कहना।

(वार्तालाप)

मनि०—बहादुरसिंघ इस वक्त जुगबाहू कहां बिराजमान हैं।

बहा०—कहिये आपका क्या फ़रमान है।

मनि०—मेरा इस वक्त उनसे मिलने का ध्यान है।

बहा०—श्रीमहाराज इस वक्त उनसे मुलाक़ात होना मुश्किल है क्यों कि उनका हुक्म महान है ख्वाह वह उनका कितना ही क्यों न प्यारा और मेहरबान है।

मनि०—नहीं नहीं तुमको जाना होगा और उनसे हमारा पैग़ाम सुनाना होगा।

बहा०—मैं ऐसा करने से मजबूर हूं क्यों कि मुझे अपने मालिक का ही हुक्म बजाना होगा आप जाइये इस वक्त हरगिज़ नहीं मिलना मिलाना होगा।

३७

महल के अन्दर से महाराज जुगवाहू का कायरसिंघ पहरेदार से कहना।

(वार्तालाप)

जुग०—कायरसिंघ।

कायर०—श्रीमहाराज।

जुग०—यह दर्वाज़े पर कैसा शोर सुना जाता है क्यों नहीं जाकर खबर लाता है।

कायर०—जो हुक्म।

पहरेदार का जाना और वापिस आकर कहना।

कायर०—श्रीमहाराज महाराज मनिरथ जी बाहर खड़े हैं बहादुरसिंघ उनके अंदर आने पर इसरार वलके तकरार कर रहा है।

जुग०—अच्छा तो मुझे खुद वहां जाना और उनको साथ लेकर आना होगा।

३८

मदनरेषा का एकदम चेहरा उतरा हुआ देखकर जुगवाहू का सवब पूछना।

चाल(ग़ज़ल) यह कैसे बाल विखरे हैं यह सूरत क्यों बनी ग़मकी।

जुग०—सवव मुझको वता प्यारी,
क्यों चेहरे पर मलाल आया।
उदासी किसलिये छाई,
कहो तो क्या ख़याल आया ॥१॥

मद०—नहीं इस वक्त अच्छा,
आपका मिलना मेरे स्वामी ।
ज़रूरी इस वक्त कोई,
बनाकर है यह जाल आया ॥२॥
जुग०—बड़े भ्राता हैं वह मेरे,
दरश करना ही लाज़िम है ।
न रोको इस वक्त मुझ को,
मोहब्बत का उबाल आया ॥३॥
मद०—जो है उसकी मोहब्बत,
आज तक मैंने छुपाई है ।
इसे तो बदजुबां कहने से भी,
मुझ से न टाल आया ॥ ४ ॥
बहुत कोशिश करी उसने,
हुआ निष्फल है जब तो फिर ।
बनाकर आज आधी रात में,
यह कोई चाल, है आया ॥ ५ ॥
यह मान अर्दास दासी की,
कृपाकर जाइये अब मत ।
व गर्ना सच समझ स्वामी,
मेरे सर कुछ बवाल आया ॥ ६ ॥

जुग०—नहो तू इस कदर बेचैन,
और दिल में अधीर अपने।
ख़बर ले वापिस आता हूं,
वह क्या लेकर सवाल आया ॥ ७ ॥
वदी जो दिल में लाएगा,
वो वैसा फल उठाएगा।
समझले जल्द उसके सर भी,
आफ़त और जंजाल आया ॥ ८ ॥

जुगबाहू का बाहर जाना और मनिरथ का साथ लेकर आना।

३६

जुगबाहू और मनिरथ का आपसमें बात चीत करते हुए नज़र आना

मनि०—(वार्तालाप) प्यारे भाई आज आपके दिल में यह क्या समाया जो रात को ज़नाने के साथ अकेले ही जंगल की तर्फ़ क़दम बढ़ाया और किसी रक्षक तक के साथ लाने का ख्याल भी दिल से भुलाया।

गाना चाल नं० (३८)

मुझे मालूम होते ही लहूने जोश जो मारा।
तो बस मैंने भी सीधा बाग़ का ही रास्ता धारा ॥१॥
तुम्हारे प्रेम बंधनमें बंधा यहां तक चला आया।
हुवा है चैन दिलको अब तुम्हें जो सहकुशल पाया ॥२॥

४०

जुगबाहू का जवाब—चाल नं० (३६)

अती उपकार इस सेवक के ऊपर तुमने फ़रमाया ।
और अपना प्रेम बंधू पनका सच्चा मुझपे दरशाया ॥१॥
मगर इस दासकी ख़ातिर जो खुद को डाला ख़तरे में ।
तुम्हारा इस वक्त आना यह अलबत्ता नहीं भाया ॥२॥

४१

मनिरथ का जवाब चाल नं० ३६

नहीं क्षत्री पुरुष के कोई ख़तरा दिल में आसकता ।
हिफ़ाज़त के लिए भाई की नहीं परवाह लासकता ॥१॥

४२

जुगबाहू का जबाब (वार्तालाप)

यह बात सत्य है लेकिन जिसकी रक्षा के वास्ते आपने इतनी तकलीफ़ फरमाई-।

(चाल नं० ३६)

है क्षत्री पुत्र वह भी तो नहीं कोई डरा सकता ।
न उसके सामने आकर कोई ताकत दिखा सकता ॥१॥

४३

मनिरथ का जवाब (चाल नं० ३६)

जो होना हो चुका यह तज़करा तो अब हटादीजे ।
लगी है प्यास मुझको अब कृपाकर जल पिलादीजे ॥१॥

४४

जुगबाहू का जवाब (चाल नं० ३६)

हुकम जो आपका है मैं सर आंखों से बजाता हूं।
अभी शीतल सुगन्धित लाके जल तुमको पिलाता हूं॥१॥

जुगबाहू का पानी लाने के लिये चलना और पाछे से मनिरथ का उसकी गर्दन पर खन्जर मारकर भाग जाना। जुगबाहू का ज़मीन पर गिरना और अफसोस करना।

४५

ओ ज़ालिम क्या भाई का यही धर्म होताहै क्या इसी वीरता पर क्षत्री कहलाने का मुसतहक़ था अगर कुछ रनसूर कहलाने का दावा था तो मेरे सामने से भाग कर जाने की क्या ज़रूरत थी, मुझ नीम बिसमिल का भी तो हाथ देखना था आह न मालूम मेरे बाद प्यारी मदनरेषा पर क्या आफ़त आयेगी और इस पैदा होने वाले मासूम बच्चे की क्या गत बनाएगी यही बातें मेरे सीने में ख़ारकी तरह खटकती जाएगीं।

गाना चाल सोहनी।

अय मदनरेषा कुमार चंद्रयश,
व होगा मासूम लख़्ते सीना।
पडेंगे सदमे क्या जाने तुम पै,
यह ख़ार दिलमें खटक रहा है॥१॥

शरीर बदज़ात पाजी मनिरथ,
दग़ा से मुझको क़तल किया है।
दिखा तो सन्मुख बहादुरी को,
इसी से जी यह अटक रहा है ॥२॥

४६

मदनरेखा का आकर जुगबाहू को समझाना (वार्ता)

प्राणनाथ, इस समय यह आप क्या विचार कर रहे हैं आपका द्वेष करना व्यर्थ है रागद्वेष मोह ममता को तज कर श्रीजिनेन्द्र भगवान का सुमिरन और ध्यान करो और अपने ग्रहन किये हुए व्रत पचखाणादि का बिचार कर दोस की आलोना करके आख़ीर समय में आत्मा का सुधार करो सब जीवों पर क्षमा भाव रक्खो आपके किसी पूर्व जन्म के बैरका अंत हुआ है अब क्रोध कर और नया बैर मत बांधो प्राणाधार-आपका यह अंतिम समय श्रीपंच परमेष्ठी के चर्णाबिंद में लौ-लगाने के लिये है उनही के ध्यान से आपके सब कार्य सफ़ल होंगे इस संसार का तो सब झूठानाता है सिवाये धर्म के और कुछ साथ नहीं जाता है आगे तो जीव अपने कर्मों के अनुसार सुख दुख आदि फल पाता है।

गाना चाल सोहनी ।

धीरज धरो स्वामी हृदय सम भावका यह वक्त है ।
इस वक्त अंतिम कालमें क्या ख्याल दिलमें आगये ॥१॥
इसमें किसी का दोष क्या सोचो विचारो तो ज़रा ।
जो कुछ किये पिछले जन्म आमालउदय वह आगये ॥२॥
मैं आपकी अर्धांगना और पुत्र ऋद्धि आपकी ।
संसार है स्वारथ का सब किस मोह ज़ालमें आगये ॥३॥
इक पंच परमेष्ठी का ही शांति से स्वामी ध्यानधर ।
शांति से ही अनंते पुरुष हैं आवागमन मिटागए ॥४॥
सोमलने गजसुकमार के सर पाल कर अग्नी भरी ।
उस आगमें शांति से वोह कर्मों का बीज जलागए ॥५॥
प्रदेशी राजा को दिया रानी ने उनकी ज़हर जब ।
मालूम होने पर भी वोह शांति से दोष छिपागए ॥६॥
महावीर स्वामी जी ने देखो कष्ट शांति से सहा ।
शांति से ही खंदक रिषी कर्मों का फंद कटागए ॥७॥
अब भावना शुभ भाओ मनशा साथ येही जाऐंगे ।
और है सब भर्म यूंहीं तीर्थनाथ सुनागए ॥८॥

४७

जुगबाहु का जवाब (व र्ता)

मदनरेखा तुमको धन्य है तुम्हारे जैसी शील-
वान, सत्यवान, दयावान, क्षमावान, स्त्री का मैं

पति कहलाया इसलिये मुझे भी बार २ धन्य है, मदनरेषा-मेरी प्यारी मदनरेषा-धर्म जिनराज के दिपाने वाली मदनरेषा-मेरी आत्मा इस समय राग और द्वेष के संकल्प विकल्पों में फंसकर संसार सागर में डूबने के लिए तय्यार हो रही थी कि तुम इस वक्त समता क्षमारूपी नय्या लेकर आपहुंची अब मुझे विश्वास हुवा है मेरा जरूर कल्याण होगा।

(गाना—चाल.मुझे क्या काम दुनियां से मेरा श्रीपार्श्व प्यारा है)

तुम्हें धन्य है मदनरेषा स्त्री जन हो तो ऐसाहो।
पिता माता पुत्र भाई सषा जन हो तो ऐसाहो ॥१॥
हटा संसार से दिल को समय आखीर प्राणी के।
सुनाऐं धर्म का शर्णा धर्म जन हो तो ऐसा हो ॥२॥
सुनाऐं मोह राग और द्वेष की कोई न बात उसको।
करें ज़ाहिर नहीं दुःख को निकटजन होतो ऐसाहो ॥३॥
किये पापादि दोषों से निवृत्ति भाव दिखलाकर ॥
करें उद्धार को मनशा कुटंब जन हो तो ऐसा हो ॥४॥

परमात्मा के चर्णों में ध्यान लगाना और स्तुती करना।

चाल—मेरे-मौला मदीने बुलालो मुझे।

स्वामी चर्णों में अपने बुलालो मुझे।
प्रभू भक्ती में अपनी लगालो मुझे ॥
अनाथों का तू नाथ मैं अशर्णा तेरी शरण।

तुम्हीं खिवय्या नय्या के हो और तारन तरन॥
भव जलमें पड़ाहूं निकालो मुझे ॥१॥ स्वामी०
चौरासी लाख को तय करके था मनुष्य भव लिया।
यहां भी दाममें दुनिया के में फंसा ही रहा ॥
अबतो दुःखों से दुनियां के टालो मुझे ॥स्वा.॥२॥
जो पहिले से मैं यह संसार तर्क करदेता।
न आफ़तों में पड़ता और न ऐसे दुख सहता ॥
अबतो तेरा सहारा कृपालो मुझे ॥ स्वामी०॥३॥
हैं जितने प्राणी मन वचन से मैं खिमाता हूं।
मुआफ़ करना बार बार सर झुकाता हूं ॥
मनशा क्षमा करो सब दयालोमुझे ॥ स्वामी० ॥४॥

४८

(जुगवाहू का शरीर त्याग कर देवलोक में उत्पन्न होना)
और मदनरेषा का पति के वियोग में विलाप करना।

चाल—(मरसिया) खाली रह जायगा ग़मका बिस्तर।
आज दुनियां से अज़मे सफर है ॥

ओह आफ़त अचानक क्या आई।
मेरी वैभव जो छिन में लुटाई ॥
पिछले जन्म कर्म में कमाया।
वोही कर्म उदय आज आया ॥
प्राण पति से हुई जो जुदाई ॥मेरी०॥१॥

दोष संजम में होगा लगाया ।
या मरम हो किसी का दुखाया ॥
नीत परपुरुष पर हो चलाई ॥मेरी०॥२॥
धोड़ होगी किसी की मैं मारी ।
धर्म की निंदा की होगी भारी ॥
स्त्री पति में नाचाक़ी कराई ॥मेरी०॥३॥
नेम खन्डन किया होगा कोई ।
प्राणी की हिंसा या मुझसे होई ॥
आज करनी वही आगे आई ॥मेरी०॥४॥
प्राण प्रीतम सुरग को सिधारे ।
छोड़ा दासी को किसके सहारे ॥
हा करम क्या दशा यह दिखाई ॥मेरी० ॥५॥

४६

दासी का आकर समझाना ।

चाल—(भजन) करूं क्या तुझ बिन थागे यहार ।

सती अब दिल में समता धार ।
कर्म में यूंही लिखा था तुम्हार ॥
तुम हो रानी खुद ही सयानी, क्या कहूं मैं इसबार ॥
होनाथा जो हो चुका अबतो, रञ्ज दो दिलसे निवार ॥
तुम्हारे यही थे लेख ललार ॥ सती० १॥

लाख उपाय करो चाहे कोई, टरे नहीं होन हार ॥
कर्म शुभाशुभ किये जो सञ्चय, आप ही भुगतन हार ॥
यही है कर्मन का व्योहार ॥सती० ॥२॥
आज सुखी दीखे जो जगमें, रोता है कलको पुकार ॥
चारों तरफ़ को देखलो रानी, निज नेत्रन को पसार ॥
दुखी है सब दुखसे संसार ॥सती० ॥३॥
जन्मे सो तो मरे अवशही, क्या राजा सरदार ॥
मृत्यु समय पर कोई न जग में. प्राणी को राखन हार ॥
चाहे हो चक्रवर्ती अवतार ॥सती० ४॥
इसलिये तुम शोक को तज कर, धर्म करो सुखकार ॥
धर्म ही वस्तु सार है जग में, सुख शांति दातार ॥
चरण में अर्ज़ है बारम्बार ॥सती० ॥५॥

दासी के समझाने पर मदनरेपा का सबर करना ।
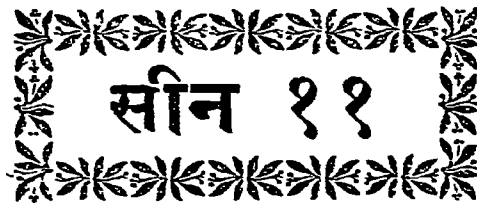
सीन ११

बाग़ के फाटक का परदा ।

५०

मनिरथ का जुगबाहू को मार कर भागते हुये नज़र आना और बहादुरसिंह (पहरेदार) का इसको गिरफ्तार करना और कहना । (वार्ता)

— अरे चांडाल अन्याई भाई की हत्या करने को

तेरा कलेजा पत्थर कैसे हो गया, जिस हाथ से गर्दन पर तलवार चलाई वह हाथ क्यों न टूट गया अब क्या तू मेरे हाथ से बचकर जीवित रहने की आशा रखता है ।

शेर—ठैर तो अब भागा जाताथा कहां बदकार है ।
खून करके नाथ का चाहताथा होना पार है ॥
ज़ालिमों को जुल्म रानीका समर तय्यार है ।
तेरे सर के खून की प्यासी मेरी तलवार है ॥

५१

पहरेदार का तलवार निकाल कर मनिरथ को मारने के वास्ते तैयार होना और पीछे से मदनरेषा का आकर उसको क़त्ल से रोकना ।

मदनरेषा—इसको मत मारो तुम्हें अब,
इससे क्या दरकार है ।
होना था जो हो चुका,
अब व्यर्थ की तकरार है ॥ १ ॥

पहरेदार—ज़िन्दगी पे ऐसे पाजी,
पापी की फटकार है ।
क़त्ल का बदला भी,
क़ातिल से फ़रज सरकार है ॥२॥

मदनरेषा—कर्म जो इसने किया है,
उसका खुद फल पायगा ।

अच्छे बुरे कर्मों का फल,
ख़ाली कभी नहीं जायगा ॥३॥
कुछ बैर पिछले जन्म का था,
जिसका बदला ले चुका ।
यूंही लिखा था कर्म में,
इसमें किसी का दोष क्या ॥४॥

पहरेदार—रानी जी सोचो ग़ौर कर,
यह आपने है क्या कहा ।
गर छोड़ दूं अब मैं यूंही,
फिर क्या मिली इसको सज़ा ॥५॥
बस इसलिये इसकी भी है,
अब मौतही लाज़िम सजा ।
यूं क़ातिलों का छोड़ना,
तो क़त्ल है इन्साफ़ का ॥ ६ ॥

५२

मदनरेषा का जवाब (गाना)

चाल़—नाटक-छोटी चड़ी सुइगां रे जाज़ी का मोरा काढ़ना ।

प्यारे सामंत जी देखो, दया नहीं दिल से हारना ॥
पिछले बैरका तो फल यह मिला है । फल यह मिलाहै ॥
आगे को बैर नहीं, नया है अब धारना ॥ प्या०॥१॥

जो कुछ होना था हो ही चुका है । हो ही चुका है ॥
जानेदो राजाको अब बेफ़ाइदा है मारना ॥ प्यारे० ॥२॥
अपने किये का फल भोगेगा खुद ही । भोगेगा खुद ही ॥
तुम क्यों बनो अपराधी यह चाहिये विचारना ॥
प्यारे सामंत जी देखो दया नहीं दिलसे हारना ॥३॥

५३

पहरेदार—लो यही मरज़ी मुबारिक है तो बंधन तोडदूं।
इसके ही आमालपर रानीजी अबतो छोड़दूं ॥

५४

पहरेदार का मनिरथ को छोड़ना और मदनरेषा का मनिरथ को समझाना ।

चाल—(ग़ज़ल) उलफ़त के खार देंगे फ़ुर्क़त के ख़ारदेंगे ।

ग़म देके औरको तू खुद दिल फ़िगार करले ।
खाने को तीर तू भी सीना तयार करले ॥ १ ॥
जो गैरको सतावे हरगिज़ वोह सुख न पावे ।
कुछ देरको तो बेशक दिल लाला ज़ार करले ॥ २ ॥
होकर विषय में अन्धा खैर आजतक किया जो ।
अब आगे के लिये तो अपना सुधार करले ॥ ३ ॥
जो पाप की मलीं है चेहरे पे तूने स्याही ।
धो पश्चात्ताप जलसे मुँह आबदार करले ॥ ४ ॥

गठरी गुनाहोंकी जो रक्खीहै सरपे भरकर।
इसमें से कुछ तो मूरख तू हल्का भार करले ॥ ५ ॥
है चन्दरोज़ा जीवन और उसपे दुष्करम यह ।
आख़िर है तुझको जाना कुछ तो विचार करले ॥ ६ ॥
भवसिन्धु से तरन को नय्या है जिन धर्म की ।
'मनशा' तू बैठ इसमें और बेड़ा पार करले ॥ ७ ॥

(मनिरथ का गर्दन झुका कर जाते हुये नज़र आना)

५५

पहरेदार का मदनरेषा की तारीफ़ करना ।

चाल-(ग़ज़ल) साफ़ आँखें फेरलीं मतलब निकल जाने के बाद ।

चमक का हीरेकी गुण कटने से भी जाता नहीं ।
दमक में सोने के तपने से फ़रक़ आता नहीं ॥१॥
घुलने और पिसनेसे भी नहीं छोडती मिश्री मिठास।
घिसनेपे भी चन्दन कभी खुशबूमें कुछ लाता नहीं ॥२॥
गर्ज जङ्गल में जो थी पिंजरे में भी है शेर की ।
हस्तिये गुल मिटने पर भी महक से जाता नहीं ॥३॥
वृक्ष पत्थर मारने वालों को भी देता है फल ।
दुष्ट के वह दुष्करम को ख़याल में लाता नहीं ॥४॥
नेकदिल सद आफ़तें आने पे भी हैं नेक ही ।
भाव दिल से रहम का उनके कभी जाता नहीं ॥५॥

धन्य तुमको दुष्टता के बदले में जो की दया।
'मनशा' से तो गुण सती तेरा कहा जाता नहीं ॥६॥

मदनरेषा का जाते हुये नज़र आना।

सीन १२
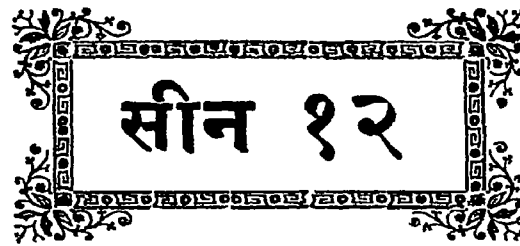
बाग़ के पिछले तरफ का परदा।

५६

मदनरेषा का चारदीवारी के पास खड़े हुये नज़र आना और अपने बचाव का विचार और अफसोस करते हुये नज़र आना।

शेर—कहां जा छिपूं मैं सभी ओर भय है।
हुई आज मेरे लिये तो प्रलय है॥

उफ़ यह रूप कैसा द्रोही है जिसने अपने रक्षक का ही नाश किया। जिस वृक्षकी छायामें इसे आराम और शांति मिलती थी उसी की जड़ को इसने काटा, अब तो दुष्ट मनिरथ निर्भय होकर अपनी पाप इच्छा पूरण करने की हर तरह कोशिश करेगा मुझको अब यहां पर रहने से दुःख का कारण है।

शेर—जब तक मैं यहां रहूंगी सताता ही रहेगा।
वह दुष्ट कुछ उपाए बनाता ही रहेगा॥

मगर मुझे कुमार चन्द्रयश को पिता के स्वर्ग-बास होने की ख़बर पाकर यहां आने से पहिले ही इस जगह से निकल जाना चाहिये ताकि मनिरथ को और दुष्टता करने का अवकाश ही न मिले और कुमार को भी कोई तकलीफ का कारण न हो।

शेर—स्वामी का अन्तकाल में उद्धार कर दिया।
था फ़र्ज़ आख़िरी के जो सुधार कर दिया॥
जिस रूपके प्रताप से मुझपे यह दुःख पड़ा।
और प्राण प्यारा है जुदा सरदार करदिया॥
मुझको भी भूख प्यास सहन करके अब इसे।
करना है नाश ठीक यह विचार कर दिया॥

मदनरेषा का बाग़ की चार दिवारी पर से कूद कर जाते हुये नज़र आना।

ड्राप —:०:— सीन

इति मनशाराम रचित मदनरेषा नमीराज नाटक का पहिला एक्ट समाप्तम्।

ॐ

मदनरेषा-नमीराज नाटक.

मनसाराम रचित।

एक्ट २

कुमार चन्द्रयश को महाराज जुगबाहू के स्वर्गवास होने का समाचार मालूम होना और मनिरथ का प्राण-त्यागना, व चन्द्रयश का राज सिंहासन पर बैठना।

॥ श्रीजिनायनमः ॥
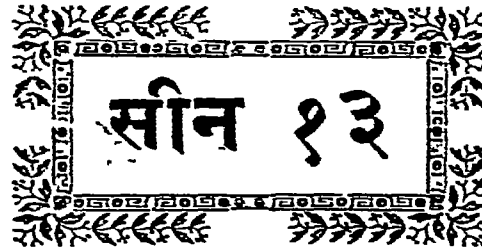
बाग के फ़ाटक का परदा ।

बहादुरसिंह और कायरसिंह पहरेदारों का आपस में बात चीत करते हुये नज़र आना ।

बहा०—मैंने बाग़ का कोना कोना छान लिया श्रीमती महारानी मदनरेषा न मालूम कहां चली गईं ।

काय०—मुमकिन है कुमार चंद्रयश की रक्षा के वास्ते महलों की तर्फ़ गई हों ।

बहा०—तो हमें भी महारानी जी की हिफ़ाज़त के लिये चलना चाहिये ।

काय०—हां हां-परन्तु महाराज जुगबाहू के मृतक शरीर को भी तो रक्षा में करते चलें ।

दोनों का लाश पर पहरा कायम करके शहर की तरफ़ रवाना होना ।

चन्द्रयश कुमार के महल का परदा।

५८

कुमार का पलंग पर लेटे हुए नज़र आना और बद स्वप्न देख कर यकायक चौंक कर उठबैठना।

गाना–चाल—घरसे यहां कौन खुदा के लिये लाया मुझको ॥

ख्वाबे बद क्या यह नज़र इसवक्त आया मुझको।
दिलको बेताब किया परेशान बनाया मुझको ॥१॥
स्वप्न का ध्यान जो करता हूं है फटता सीना।
और इस ख़यालने दीवाना बनाया मुझको ॥ २ ॥
ज़ोर से आंख भी बांई क्यों फड़कती है मेरी।
नेक अञ्जाम नहीं यह खूब समाया मुझको ॥ ३ ॥
देखा है स्वप्न में मनिरथ ने पिता को मारा।
माता जङ्गल में गई यह दृश्य दिखाया मुझको ॥४॥
यही अरदास है प्रभू ख्वाब ग़लत हो मेरा।
आके कर्मों ने है गरदिश में फंसाया मुझको ॥५॥

जङ्गल का परदा।

५६

बहादुरसिंह और कायरसिंह पहरेदारों का आपस में बात करते हुए नजर आना।

काय०—भाई आकाश पर बादल छाये हुए हैं। बिजली चमकती है, कैसा निर्जन बियाबान है, अन्धकारमय स्थान है, सब ओर सुनसान है, यहां पर तो ख़तरा और वबाले जान है।

बहा०—तभी तो आपका नाम कायरसिंह दर्बान है।

काय०—(बिजली की चमक में सामने परछाया देखकर) मुझे तो सामने भूत, प्रेतसा दिखाई देता है जिससे मेरे प्राण खुश्क होते जाते हैं आगे पांव रखना भी मुशकिल हो गया, अब कहीं छुपजाना चाहिये और अपने प्राण बचाना चाहिये।

बहा०—भाई डरपोक मत बनो हिम्मत बांधो, तुम

हमेशा शास्त्र सुनते हुये भी " कि देवता का साया नहीं पड़ता " कैसी मूर्खता की बातें कररहे हो यह तो तुम्हें यूं ही भ्रम हो गया है। बिजली की चमक में मुझे भी आदमी कासा परछाया नज़र आया था अब हमें आहिस्ता २ आगे चलकर उसका हाल मालूम करना चाहिये।

दोनों का आगे चलना यकायक किसी आदमी के जोर से गिरने की आवाज़ सुन कर दोनों का एक दरख्त की आड़ में छुप जाना।

६०

आवाज़—उफ ! होनी कैसी बलवान है, भगवान् की कृपा से मैं मालवा देश का राज्यराजेश्वर कहलाता था प्रजा मुझको प्रेम दृष्टी से देखती थी, मुल्क के इन्साफ की बागडोर मेरे हाथ में थी हज़ारों रानियों का स्वामी होने पर भी मुझे विषयान्ध होने की कैसे सूझी, रिआया, महारानी मदनबेगा, कुमार चन्द्रयश, मुझकों बिषय लालसा के बसीभूत होकर भाई की हत्याकरने वाला महापात-की हुवा सुनकर कितना धिक्कारेंगे, मैंने मंत्री

का कहा न माना मदनरेपा के भी समझाने पर कुछ ध्यान न दिया पुस्तकों में रावन दुःशासन आदि के दुश्चरित्र के इतिहास पढे थे क्रोध, मोह, विपय, विकार सेवन करने के फल सुने थे मैं स्वयं उपदेशक था और नीती और धर्म विरुद्ध ऐसे नीच कर्त्तव्य करने वाले अपराधी को दण्ड देता था, परन्तु आज खुद ही धर्म और नीती तथा लोक लाज तक को तिलांजुलि देदी तो मैं अब नगर में क्या मुँह लेकर जाऊंगा अब तो यहीं पत्थर से सर फोड़कर मर जाऊंगा।

॥ गाना ॥

चाल—इक तीर फैंकताजा तिर्छी कमान वाले।

कुमती ने मुझको खोटी बुद्धि दिलाके छोड़ा।
विषयोंने ख़ाक में ही आख़िर मिलाके छोड़ा॥१॥
जब मैंने तेग़ उठाई सर अपना क्यों न काटा।
गर्दन पे भाई के जो ख़ंजर चला के छोड़ा॥२॥
सरसे हटाया साया पिता का चन्द्रयश के।
सतवंती इक सतीको दुखिया कहलाके छोड़ा॥३॥
दरबार राज लशकर रनवास और रिआया।
आख़िर समय में सबको मुझसे भुलाके छोड़ा॥४॥

पैदा में क्यों हुवा था करने को कुल कलंकित।
मस्तकपे टीका अपने अपयश का लाके छोड़ा॥५॥
दयालू मदनरेषा मुझ पापी दुष्ट को क्यों।
दरबान को भी समझा मुआफ़ी दिलाके छोड़ा॥६॥
अपने किये की मुआफ़ी न हूं मांगने के क़ाबिल।
घरके चिराग़ ने जब घरको जलाके छोड़ा॥७॥
अब मरके यहां से आगे नरकों के दुःख सहूंगा।
मानुष जनम को 'मनशा' बृथा रुलाके छोड़ा॥८॥

६१

बहादुरसिंघ पहरेदार का मनिरथ की आवाज़ पहचान कर दरख़्त की आड़ से निकल कर मनिरथ के पास आकर कहना।

(वार्ता)

बहा०—महाराज इतने अधीर न हूजिये कर्मों की बड़ी विचित्र गति है जो होना था हो चुका अब ब्यर्थ जान खोने से क्या प्रयोजन है इस समय तो आपका सदक़ दिलसे पश्चात्ताप करना ही बहुत है।

शेर—जो होनी है वो अन्मिट है नहीं मिटती मिटाने पर।
दिमाग़ो होश बुद्धी कुछ नहीं रहती ठिकाने पर॥

६२

मनि०—(बहादुरसिंघ से) कौन बहादुरसिंघ।

बहा०—हजूर।

मनि०—तू अपने रस्ते लग तेरा कहना मुझे मान्य नहीं हो सकता मेरे जैसी अपवित्र आत्मा और दुष्ट शरीर का इस लोक में नहीं रहना ही उचित है, अब मैंने यह निश्चय कर लिया है—

मिटाया है जो भाईको तो खुदको भी मिटाउंगा।
जो काटा सीस है उसका तो अपना भी कटाउंगा॥

६३

बहा०—महाराज,धैर्य धारन करो विचार को काम में लावो, स्वामी जुगबाहू का तो हमसे बियोग हुवा ही है अब आपके भी न रहने से हमारी क्या दशा होगी।

गर होगया वियोग तो यह जानना निश्चय।
वेमौत हम मर जायेंगे इसमें नहीं संशय॥

६४

मनि०—बहादुरसिंह, मैं अब स्वामी और महारांज नहीं हूं, नीच और नराधम हूं मुझे पापी-

राज, और चण्डालराज कहो, मुझे मरने दे और तुम पीछे से मेरे इस कलंकित शरीर पर थूकना और मुरदार पशू की तरह मेरी लाश को नगर मेंसे घसीटते हुए लेजा कर जङ्गल में फैंक देना—

कि ताके यह तने नापाक कव्वे चील खा जावें।
दशा दुर देखकर मेरी जो शिक्षा और पाजावें॥

६५

बहा०—राजन आपके इस अत्याचार का ही यह परिणाम हुवा है जो आप अन्तःकरण से पश्चाताप कर रहे हैं और मरने को तैयार हो रहे हैं, अब आप सेवक का कहना मान कर कुमार चन्द्रयश जी के पास चलिये यक़ीन है दयालू मदनरेषा भी उसी जगह पर गई होंगीं और आप के पश्चाताप का समाचार सुन कर दोनों ही आपके अपराध को क्षमा कर देंगे।

वो धर्मबीर कर्मबीर और सुजान हैं।
बलवान क्षमावान और दयावान हैं॥

६६

मनि०—यह बात सत्य है, सती मदनरेषा और कुमार

चन्द्रयश महान क्षमावान, दयालू, करुणा-
सागर हैं, परन्तु—
कर्तव्य भ्रष्ट हूं मैं क्या मुँह लेके जाउंगा।
और कौनसे अपराध की मुआफ़ी कराउंगा॥

६७

बहा०—वह वक्त था वही जो अत्याचार होगया।
पर अब तो दिल में बहुत फेरफार होगया॥
मनि०—तेरे बचन के मन्त्रने मजबूर कर दिया।
मरने का ख्याल दिल से मैंने दूर करदिया॥
बहा०—इतनी कृपा करी जहां यह और कीजिये।
चलिये कुमार पास अब देरी न कीजिये॥
मनि०—गो दिल नहीं यह मानता कि मैं वहां चलूं।
पर होके अब लाचार यह तेरा कहा करूं॥

मनिरथ, बहादुरसिंह, कायरसिंह, तीनों का जाते हुये
नज़र आना

कुमार चन्द्रयश के बाग़ और महल
का परदा।

६८

मनिरथ को बाग़ीचे में छोड़कर बहादुरसिंह व कायरसिंह पहरेदारों का महल की ड्योढी पर आना और ड्योढीवान से कहना।

बहा०—कुमार चन्द्रयशजी से जाकर अर्ज़ करदीजे कि बहादुरसिंह पहरेदार जङ्गलवाली कोठी से आया है और निहायत ज़रूरी पैग़ाम लाया है।

ड्यो०—भाई तुम सोचो तो सही इस समय कुमार आराम में हैं किसकी जान है जो वहां जाकर तुम्हारा समाचार सुना सके और सोते हुए शेर को जगा सके।

६९

कुमार का पहरेदारों की आवाज़ सुनकर महल से ड्योढ़ी पर आना।

कुमार—(तअाज़ुब से) बहादुरसिंह तुम इस समय यहां कहां?

बहा०—(चुप खड़ा रहता है)

कुमार—भाई, तुम चुप क्यों खड़े हो। तुम्हारा चेहरा क्यों उदास है, और आंखों से आंसू क्यों जारी हैं। मेरा दिल तुम्हारी हालत देखकर दहला जाता है, क्या मुआमला है कुछ समझ में नहीं आता है।

बहा०--यह कहने के लिए किसकी ज़बान लाऊं कि महाराज जुगबाहू का..................

कुमार--कहो कहो जल्दी कहो, पिता जी का क्या हाल है।

बहा०--उनका देवलोक...............

कुमार का ग़श खाकर गिरना और मन्त्री का गश्त करते हुये आना और कुमार को होश में लाना और होश आने पर कुमार का कहना--(गाना)

चाल--(ग़ज़ल) इस इश्क ने यारो मुझे दुनियां से उठाया-दीवाना बना के।

आह ! कर्मने क्या इस समय सदमा यह दिखाया,
अफ़साना बनाके ॥
लहरों ने रञ्ज अलम की बहरे ग़म में गिराया,
दीवाना बना के ॥ १ ॥
हैं तात मेरे चल बसे मैं अब करूं कैसे,
बस रहगया अनाथ ।
इस तीरने दुख के मुझे ज़ख्मी है बनाया,
निशाना बनाके ॥२॥
ग़म की घटा छाई कोई देता न दिखाई,
जो दुख में देवे साथ ।
मैं कर दिया अकेला सूना राज कराया,
वीराना बनाके ॥३॥

(वार्ता)—उफ़ ! कर्म तूने यह क्या किया किस जन्म का बदला लिया जो पिता का मेरे सरसे साया हटाया, मुझको अनाथ बनाया मैंने तो जबसे स्वप्न देखा है दिल उमडा आता था, और ग़म के दरिया में डूबा जाता था।

मंत्री—महाराज जुगबाहू तो महारानी मदनरेषा के साथ सकुशल आज की रात क्रीडार्थ जङ्गल वाली कोठी में पधारे थे, फिर यह क्या कारण हुवा।

७०

बहा०—आधी रातके समय राजा मनिरथ वहां पर आया, मैंने अन्दर न जाने के वास्ते बहुत इसरार जताया; यह तकरार सुनकर महाराज जुगबाहू ने स्वयं उसको अन्दर बुलाया। न मालूम मनिरथ के दिल में क्या समाया, कि महाराज जुगबाहू की गर्दन पर ख़ंजर चलाया, और खून आलूदा तलवार लिए हुवे भागता आया, मैंने गिरफ्तार कराया, मैं सर तन से जुदा करना ही चाहता था, कि इतने में महारानी मदनरेपा ने आकर मेरे हाथ से छुड़ाकर के रुख़सत कराया, थोड़ी

देर के पीछे मैं कोठी में गया तो रानी को वहां पर न पाया मैंने कौना कौना तलाश कराया, जब कुछ पता न पाया तो कुमार को ख़बर करने की ख़ातिर यहां आने के लिये क़दम बढाया, रास्ते में मनिरथ को इस दुष्ट कर्म से पछताते बलकि पत्थर से सर फोड़कर मर जाने को तय्यार देखा मैंने समझाया और अपने साथ लाया।

सीन १७

बाग का परदा।

७१

मनिरथ का बाग़ में बैठे हुये नज़र आना और अपने बुरे आमाल पर अफ़सोस करना।

(गाना)

चाल—सिया राम अजुध्या बुलालो मुझे।

कुछ धर्म में वक्त बसर न हुआ।
ध्यान चर्णोंमें श्री जिनवर न हुआ॥
मनुष्य जन्म पाके विर्था यूं ही हार दिया।
कुमत के रस्ते लगके सब समय गुज़ार दिया॥

राहे रास्त से अब तक गुज़र न हुआ ।
कुछ धर्म में वक्त बसर न हुआ ॥ १ ॥
कथा सुनी थी साधू सन्तों के उपदेश सुने ।
व नीतीवान धर्मवीरों के इतिहास सुने ॥
आह! दिलपर किसीका असर न हुआ ।
कुछ धर्म में वक्त बसर न हुआ ॥ २ ॥
ख्याल जब कि नर्क के दुखों का आता है ।
कलेजा मुँह को आंखों में अन्धेरा छाता है ॥
उफ़ ! पहिले से क्यों बाख़बर न हुआ ।
कुछ धर्म में वक्त बसर न हुआ ॥ ३ ॥
विषय की वासना में फँस के मैं हुआ हूं अचेत ।
क्या पश्चाताप से हो चिड़िया चुगगई जब खेत ॥
'मनशा' पहिले से ख्याल मगर न हुआ ।
कुछ धर्म में वक्त बसर न हुआ ॥ ४ ॥

मनिरथ की गर्दन पर दरख्त से सांप का गिरना और जगह २ से काटखाना और मनिरथ का बेताबी से पुकारना ।

बहादुरसिंह—बहादुरसिंह !

७२

कुमार चन्द्रयश, मन्त्री बहादुरसिंह के कान में यकायक आवाज़ सुनाई देना और सबका तलवार लिये हुये आवाज़ की तरफ़ दौड़कर आना । मनिरथ को ज़मीन पर पड़े हुये देख कर बहादुरसिंह का सबब पूछना.

बहा०—है क्या कारण मनिरथ जी,

पुकारा भीत भय होकर।

पड़े हो क्यों ज़मी पर आप,

ऐसे मूर्छामय होकर॥

मनि०—बहादुरसिंह मैं दरख़्त के नीचे ससताने के लिये बैठा ही था कि ऊपर से सर्प गिरा और मेरी गर्दनमें लिपट कर मुझको जगह जगह से काट खाया जिससे मेरे अङ्ग में विषप्रवेश कर गयाहै। अब मैं थोड़े समय का मेहमान हूं। तुम्हारे समझाने से मैं आत्म हत्या करते रुक गया। तुमने मेरे दुष्कृत कर्म को छिपाने की बहुत कोशिश की मगर—

परमात्मा से परदा कब और किस का रहा है।

दुष्टों की गुप्त दुष्टता सब देख रहा है॥

और अच्छे बुरे शुभाशुभ कर्मों का फल कभी पास को नहीं जाता।

जो खाई खोदे और को कूंवा उसी को त्यार है।

इसहाथ दे उसहाथ ले कर्मों का यह ब्योहार है॥

कुमार चन्द्रयश मैंने ऐसा कर्तव्य नहीं किया है, जिसके लिये तुमसे क्षमा मांग सकूं तोभी दयालू

मदनरेषा ने जिस तरह मेरा अपराध क्षमा किया- आप भी मुझ दुष्ट का अपराध क्षमा करना।

(गाना)

चाल—क़त्ल करना मत मुझे तेग़ो तबर से देखना।

है बदी का फल बुरा आंखों से अपनी देखलो।
जैसी करनी वैसी भरनी मेरी हालत देखलो ॥१॥
कहना मन्त्री का न माना पापमें तत्पर रहा।
क्या हुई मेरी दशा प्रत्यक्ष सब कुछ देखलो ॥२॥
मदनरेषा ने किया अपराध को मेरे क्षमा।
पहरेवाले से रिहा मुझको कराया देखलो ॥३॥
और जब मैं रास्ते में मरने को तय्यार था।
करते आतम घातसे फिर भी बचाया देखलो ॥४॥
आख़िरश अपने किये ही का तो फल 'मनशा' मिला।
मरके यहां से जाता हूं आगे नरक में देखलो ॥५॥

(मनिरथ का प्राण त्यागना)

कुमार चन्द्रयश का महाराज जुगबाहू और मनिरथ के शरीर का अग्नि क्रिया करना और मदनरेषा का तलाश करने पर पता न मिलना।
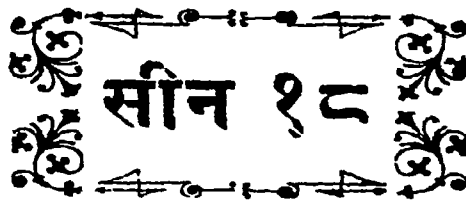
कुमार के महल का परदा।

७३

कुमार का माता पिता के वियोग में रंज करते हुवे नज़र आना।

चाल—बिजलियां चमका रहे हैं फूल बरसाने के बाद।

आह! क्या यह यकबयक आफ़त का घेरा होगया।
जो चार दिन रही चांदनी और फिर अंधेरा होगया॥१
किसको कहूं मैं अब पिता माता की भी नहिं कुछ ख़बर।
मेरे लिए सब सून्य जग मुशकिल बसेरा होगया॥२
अब चैन है मुझको न दिनको रातको आराम है।
बस रोते रोते स्याम से मुझको सवेरा होगया॥३
क्या अजब इस रञ्जो ग़ममें ही निकल जाऐं यह प्राण।
सूख कर यह तन बदन कांटा सा मेरा होगया॥४
संसार में होगा नहीं मुझसा भी कोई बद नसीब।
जो मनशा जीना दुनियां में दुश्वार मेरा होगया॥५

७४

मन्त्री का कुमार को समझाना (वार्ता)

प्यारे कुमार यह संसार असार है जो पैदा हुवा एक दिन ज़रूर मरेगा संसार का स्वरूप मुसाफिर ख़ाने के मानिन्द है शाम को चारों तर्फ़ से आकर मुसाफिर इकट्ठे होजाते हैं, और सवेरा होते ही अपने अपने रास्ते लग जाते हैं, इसी तरह इस संसार में चारों गतिसे जीव आते हैं, और आपस में माता

पिता बंधू स्त्री पुत्र कहलाते हैं, अपने कर्मों के अनुसार सुख दुख भोग कर और आयू पूरण कर चले जाते हैं, दुनियां सब स्वार्थ की है सब अपने सुख को याद करते हैं यह कोई नहीं ख़याल करता कि मरने वाले की क्या गति हुई होगी आपका और महाराज जुगबाहू का इतना ही संस्कार था अब आपका शोक और दुःख करना ब्यर्थ है, मोह को तजकर शांति करो।

(गज़ना)

चाल—जो कि ज़ालिम है वह हरगिज फूलता फलता नहीं।

यह सब जहां है नासमां रहना यहां दायम कहां।
जाएगा हर फ़रदे बशर पैदा हुवा जो है यहां ॥१॥
जग सराए है मुसाफिर हैं जो इसमें जीव सब।
चारों तरफ को चल दिये सुबह का जब आया समां ॥२॥
कौन है माता पिता बंधव पुतर दारा पती।
झूठे सभी नाते हैं यह स्वारथ भरा है सब जहां ॥३॥
सुखके तो साथी हैं सभी जब दुख पड़ा आकर कहीं।
फिरतो न हमदम है कोई ग़मख़्वार मूनिस राज़दां ॥४॥
आया अकेला जीव है जाएगा भी यह ऐकला।
रह जायंगे सबही पड़े दौलत महल लश्कर मकां ॥५॥

दुख शोक तज जिनराज भज और मोह दिलसे दूरकर।
मनशा जो हो शांति तुम्हें है और सब झूठा गुमां ॥६॥

मन्त्री के समझाने से कुमार का शोक निवारना और प्रजा के अर्ज़ करने पर कुमार का राज-सिंहासन पर बैठना।
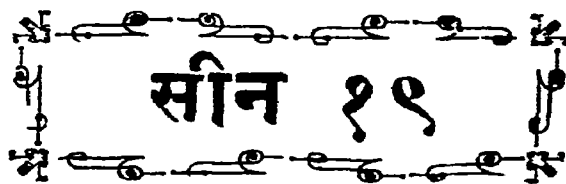
दरबार का परदा।

७५

महाराज चन्द्रयश का दरबार में बैठे हुये नज़र आना और परियों का मुबारिकबाद गाना।

चाल-[नाटक] आज प्यारी देखो गुलशन में आई बहार ॥

आज सखी देखो गुलशन में आई बहार ॥
सुदर्शनपुर खूब सजा है, खुश हैं सभी नर नार-
नार प्यारी० ॥ १ ॥
कैसा मुबारिक आज का दिन है,
हो जाएं हम सब निसार-
निसार प्यारी० ॥ २ ॥
श्री चन्द्रयश सिंहासन विराजें,
लगा हुआ है दरवार-
दरवार प्यारी० ॥ ३ ॥

रहें यह शादां जग में हमेशा,
महिमा हो अपरम्पार-
पार प्यारी० ॥ ४ ॥
रहे रिआया भी खुशो खुर्रम,
'मनशा' हो धर्म प्रचार-
प्रचार प्यारी देखो गुलशन में आई बहार ॥ ५ ॥

ड्राप सीन

इति मनशाराम रचित मदनरेषा नमीराज
नाटक का दूसरा एक्ट समाप्तम् ।
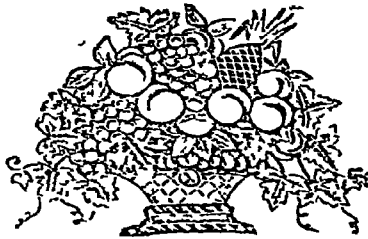
मदनरेषा-नमीराज नाटक.

मनसाराम रचित।

एक्ट ३

मदनरेषा का बन में आना और उसके पुत्र उत्पन्न होना, मदनरेषा को विद्याधर का विमान में बैठा कर लेजाना और उसके पुत्र को राजा पद्मरथ का लेजाना, मदनरेषा का मुनिराज के दर्शन को नन्दीश्वर द्वीप में जाना जुगबाहू का देवलोक से मदनरेषा को नमस्कार के लिये आना, मदनरेषा का मिथला नगर में जाना और दीक्षा ग्रहण करना।

॥ श्रीजिनायनमः ॥

सीन २०

बन का परदा ।

मदनरेषा का दरख्त के नीचे बैठे हुवे नज़र आना और कर्मों की हालत पर अफ़सोस करना ।

७६

चाल—(इन्द्रसभा) कोई चातुर ऐसी सखी न मिली मोहे पीके द्वारे पहुंचादेती ।

करम के क़िस्से अजब ही हैं देखे,
घड़ी में जो चाहें सो करके दिखादें ।
ख़यालात दिलमें यह रखके तू अपने,
सितम और तकब्बुर जफ़ाको मिटादे ॥१॥

किसीका तू छुड़वाके तख़्त और ताराज,
बिकादे तू बाज़ार में ज़न पिसर को
किसीके तू सरपर चलादे दुधारा,
किसी के तू हाथ और पगको कटादे ॥२॥

कभी तू अग्नि कुण्ड जल कुण्ड करदे,
करे तू कभी सांप की माल गौहर।
गदाको कभी शाह क़रदे तू दम में,
गदा शाह को करके दर दर फिरादे ॥ ३ ॥
नज़ारे हों क़ाबिल जहां देखने के,
बनादे वहां पर तू जङ्गल बियाबां।
बियाबान गुल्शन रसीदा ख़िजां को,
कभी अज़सरे नौ चमन तू बनादे ॥ ४ ॥
कभी तो तू मानिन्द बुलबुल रुलादे,
कभी फिरतू मानिन्द गुलके खिलादे।
जहां पर बजें शादियाने व नौबत,
पलक में तू मातम सरा वां बनादे ॥ ५ ॥
कभी तू लगा करके असमत पे धब्बा,
करे सब अज़ीज़ो शहर से अलहदा।
कभी दामने आबरू पाक करके,
तू देरीना बिछुडों से जल्दी मिलादे ॥ ६ ॥
किये मैंने भी कर्म जो फल है पाया,
नहीं इसमें शिकवा शिकायत किसी का।
तुझे 'मनशा' बस अबतो लाज़िम यही है,
कि जिनवर के चर्णों में मस्तक झुकादे ॥७॥

(मदनरेषा का सोजाना) और जागने पर पुत्र उत्पन्न होना।

पुष्प वाटिका का परदा।

मदनरेषा का पुत्र को गोदी में लिये हुये नज़र आना और भगवान से प्रार्थना करना।

७७

चाल—[भजन] मैं हूं उन सन्तों का दास जिन्होंने मन मारलिया।

मैं हूं चेरी तेरी जिनराज करोजी मेरी सहाय प्रभू॥
तेरे बिन दूजा नहीं मेरा देखा चारों ओर।
शरण गहूं अब किसकी जाकर तेरे दर को छोड़—
करो जी मेरी० ॥ १ ॥
सीता जी के हुए सहाई कष्ट पड़ा जिसबार।
अग्नि कुण्ड का नीर किया सुर नभमें करें जयकार—
करो जी मेरी० ॥ २ ॥
किया सती सोमा के गले में नाग पुष्प की माल।
भुजाकटी कमलाकी तुम करी चूड़े सहित तत्काल—
करो जी मेरी० ॥ ३ ॥
सतियों के तुम सङ्कट टाले दुखियों के दुख दूर।
मेरी खबर लेओ अब जल्दी मनशा की अर्ज हजूर—

करो जी मेरी० ॥ ४ ॥

मैं हूं चेरी तेरी जिनराज करो जी मेरी सहाय प्रभू ॥

मदनरेषा का अपनी साड़ी में से वस्त्र फाड़ कर ज़मीन पर बिछाना और उस पर बच्चे का सुलाना और अपनी अंगुली से जुगबाहू नाम खुदी हुई अंगूठी निकाल कर डोरे से बांध बच्चे के गले में डालना और आप निकट के सरोवर पर शरीर साफ़ करने के लिये जाते हुवे नज़र आना।

सीन २२

सरोवर का परदा।

मदन रेषा का सरोवर पर खड़े हुए नजर आना और सामने से एक मस्त हाथी को अपनी तरफ आता हुआ देख कर परमात्मा से प्रार्थना करना। (गाना नाटक)

७८

चाल—भर भर के जाम पिलादे पिलादे साकिया-हां हां हां हां हां-

आकरके दर्श दिखादे, दिखादे साहिबा-हां हां हां हां हां
वक्त बद में नहीं कोई साथी, तू ही तो धीर बंधादे—
बंधादे साहिबा-हां हां हां हां हां ॥आकरके० ॥१॥
कर्मोंने आकर अब मुझे घेरा, इनका तो फन्द कटादे-
कटादे साहिबा-हां हां हां हां हां ॥आकरके ० ॥२॥

दुखियों के दुख में हुए सहाई, मनशा का कष्टमिटादे-
मिटादे साहिबा-हां हां हां हां हां ॥ आकर के० ॥३॥

हाथी का आकर मदनरेषा को सूंड में पकड़ना और ऊपर उछालना
मदनरेषाका बेहोश होना और आकाश मार्ग से जातेहुए विद्या
धर का मदनरेषा को कष्ट में फँसा देख कर विमान नीचा
करके अधर का अधर विमानमें बिठाकर लेजाना।

सीन २३

बैताड पर्वत का परदा।

७९

विद्याधर का गाते हुवे नज़र आना।

चाल—बिजलियां चमका रहे हैं फूल बरसाने के बाद।

मनुष्य जन्म है क़ौम की सेवा बजाने के लिये।
हर जीव से इज़हार हमदरदी जताने के लिये ॥१॥
इनसानका हैवां से दर्जा उच्च है तो किस लिये।
बस दुःख सुख के वक्त में ही काम आने के लिये ॥२॥
है फ़र्ज राजा का भी अव्वल कार्य सबही छोड़कर।
इक ग़मज़दों का रंजोग़म पहले मिटाने के लिये ॥३॥
अब इस लिये मैं भी कमी बाक़ी न रक्खूंगा कोई।
इसकी भी सेवा में तन मन धन लगाने के लिये ॥४॥

मनशा तरक्की हिंद में फिर धर्मोक़ौम की क्यों नहो।
तैयार हों आपस में जब दुःख सुख बटाने के लिये ॥५॥

८०

मदनरेषा का लेटे हुए नज़र आना और विद्याधर का बूटी सुंघा कर उसको होश में लाना; मदनरेषा का एक अजनबी के क़ाबू में पड़ी देख कर कहना।

मद०—हाय अब भी यह कठोर प्राण नहीं निकले मैंने तो हाथी की सून्ड में पकड़ने के समय ही जान लिया था कि मेरे दुःखों का अब अन्त हो जाएगा परन्तु नहीं खबर अभी और कर्म में कहां तक दुख सुख पाना लिखा है।

[विद्याधर से] शेर।

परिचय पाने की आशा है अपने उपकारी के।
बचाये प्राण आकर जिसने इस विपताकी मारीके ॥

८१

जवाब विद्याधर का —गाना।

चाल—इलाजे दर्द दिल तुम से मसीहा हो नहीं सकता।

मैं हूं इक राजा विद्याधर मनिप्रभ नाम है मेरा।
गिरी वैताड़ के ऊपर रतनवाह धाम है मेरा ॥ १ ॥
रतन चूड़ामनी महाराज जो कि हैं पिता मेरे।
कुछ अरसे से लियाहै जोग इस दुनियांसे चित फेरा ॥२॥

विराजे हैं मुनीश्वरनन्द ईश्वर द्वीप में प्यारी ।
हुये हैं चार ज्ञान उत्पन्न तप करने से बहुतेरा ॥ ३ ॥
दरश कल करके आया था वहीं फिर अब भी जाता था।
कि जाते जाते देखा तुमको गजने फन्दमें घेरा ॥४॥
किया बेमान नीचा और अधर तुमको उठा लाया ।
समझले बहन सबदुःखों का अब अन्तआगया तेरा ॥५॥
तुझे अब महलमें लेजा हिफ़ाज़त सब तरहसे कर।
बाद दर्शन को जाने का हुआ मनसूबा है मेरा ॥६॥
रहो सुखमें यहां सामान जो चाहो करूं हाजिर ।
बजालाऊं सर-आंखों से जो हो मनशा हुक्म तेरा ॥७॥

८२

मद०—मुझे सुखकी नहीं इच्छा,
न सामा चाहिये तेरा ।
दरश मुनिवर के करवा दो,
यही अरदास है मेरा ॥ १ ॥
मनि०—नहीं शक्ती वहां जाने की,
तन कमज़ोर है तेरा ।
करो हठ दूर चल महलों में,
कहना मान लो मेरा ॥ २ ॥
मद०—मैं कैसी मन्द भागिन हूं,
मुकद्दर है बुरा मेरा ।

मनोरथ भी मुनी दर्शन का,
न पूरा हुआ मेरा ॥ ३ ॥

यह सोचा था दरश मुनि के,
मैं कर कृतार्थ होऊंगी।

मिटेगा भ्रम संशय सङ्कल्प,
विकल्प भी सब मेरा ॥ ४ ॥

विपत पहले तो थी जो थी,
हुई अब और यह कैसी।

नहीं मालूम कर्मों में,
लिखा है और क्या मेरा ॥ ५ ॥

कृपा कर हाल पर मेरे,
दरश मुझको करा दीजे।

न भूलूंगी उमर भर में,
कभी अहसान यह तेरा ॥ ६ ॥

मनि०—न दिलमें रञ्जकर तू गर,
यही असरार है तेरा।

तो चलिये देर क्या है बस,
हुक्म दरकार है तेरा ॥ ७ ॥

दोनों का विमान में बैठ कर जाते हुये नज़र आना।

सीन २४

जङ्गल और पुष्पवाटिका का परदा।

८२

ज़मीन पर एक कपड़े के ऊपर हाल ही में पैदा हुये बच्चे का लेटा हुआ नज़र आना और मिथला नरेश पद्मरथ का आना और बच्चे को देख कर खुश होना और कहना।

ईश्वर तुमको धन्य है, कोटानकोटवार धन्य है जो मेरे लिये जङ्गल में यह राजकुमार पहुंचाया। मुझे भी धन्य है जो यहां पर आया और पुत्र का दर्शन पाया। अपने दिल की पज़मुर्दा कली को खिलाया।

(गोद में उठा कर)

अहाहाहा क्या चन्द्रमा के समान कान्तिधारी और सूर्य के समान तेजस्वी कुमार है, क्या दीदार है कि देखते २ तबियत सैर नहीं होती, अब इसे जाकर रानी को दूंगा और नगर में गुप्त प्रसव होना ज़ाहिर करूंगा।

(गाना) चाल-यह कैसे बाल बिखरे हैं यह सूरत क्यों बनी ग़मकी।

तुम्हें धन्यवाद है स्वामी,
बड़ी महिमा तुम्हारी है।

करो तुम शाह इक छिन में,
जो कङ्गाल और भिखारी है ॥१॥

चमन सूखा हुआ था अज़ सरे,
नौ कर दिया ताजा ।
दिखाया जो समर उसमें,
खुली किस्मत हमारी है ॥ २ ॥

हुआ अर्मान पूरा आज,
मुद्दत से जो दिल में था ।
बड़ी मुशकिल से अब यह,
पुत्र की सूरत निहारी है ॥ ३ ॥

प्रतापी कान्तिधारी चन्द्र,
सूर्य जैसा बालक है ।
इसे दूं जाके रानी को,
खुश होगी लेके भारी है ॥ ४ ॥

करूं किस मुँह से 'मनशा',
बड़ाई आपकी भगवन् ।
तुम्हारे चरण में जिनवर,
धोक हर दम हमारी है ॥ ५ ॥

कुमार को लेकर जाते हुए नज़र आना ।

राजमहल का परदा।

८४

रानी का बैठे हुये नज़र आना और राजा पद्मरथ का कुमार को गोद में लिये हुये आना और रानी को देना और गुप्त गर्भ से पैदा होना ज़ाहिर करने के वास्ते कह कर चले जाना। दासी का आना और रानी का कुमार उत्पन्न होने की सूचना देने के लिये दासी को दरबार में भेजना, दासी का जाते हुये नज़र आना।

सीन २६

८५

राजा पद्मरथ का दरबार में बैठे हुये नजर आना, दासी का आना और मुबारिकबाद गाना।

चाल—मुझे नहिं काम दुनियां से मेरा श्री पार्श्व प्यारा है।

घड़ी यह आज की आना मुबारिक हो मुबारिक हो।
सदा दरबार शाहाना मुबारिक हो मुबारिक हो ॥१॥
मैं लाई हूं खुशख़बरी थे ख़्वाहां जिसके अरसे से।
हुई मनोकामना पूरी मुबारिक हो मुबारिक हो ॥२॥

कुवँर पैदा हुआ है आपके महलों में अय राजन ।
बधाई लेके यह आना मुबारिक हो मुबारिक हो ॥३॥
करो अरमान पूरे आज दिलको खोल कर अपने ।
मुबारिक की सदा आना मुबारिक हो मुबारिक हो ॥४॥

८६

राजा का दासी से यह खबर सुनकर खुश होना और भगवान का धन्यवाद करना—(गाना)

चाल—मादरे हिन्द की है आंखों का सितारा गांधी ।

शुक्र मालिक का है जो दिन यह दिखाया मुझको ।
बांदी ने आके यह मुज़दा सुनाया मुझको ॥१॥
राज और जिन्दगी का कुछ न था अब तक मज़ा ।
बाग़े दिल आज खिला करके दिखाया मुझको ॥२॥
यही थे महल जो सुन्सान नजर आते थे ।
आज जलवा है परिस्तां नजर आया मुझको ॥३॥
होगया रञ्जो अलम दूर मेरा ग़म सब ही ।
गौहरे मक़सद से दामन भरा पाया मुझको ॥ ४ ॥

८७

राजा—(पहरेदार से) जाओ और पंडित जी को बुलाकर लाओ ।

पह०—महाराज अभी जाता हूं (जाना) और पंडितजी को साथ लेकर आना ।

राजा—(पण्डित से) पंडित जी प्रणाम हो।

पंडित—महाराज की जय हो।

राजा—पंडित जी आज महल में कंवर पैदा हुआ है आप जन्मकुण्डली तय्यार करके ग्रहों के फलादेश को फ़रमाइये।

पण्डित का जन्म लगन लगा कर फलादेश अर्ज़ करना—(गाना)

८८

चाल—(ग़ज़ल) मेरे नालों का ज़रा उन पर असर होने तो दो।

शाहा दुआथी रात दिन यह मुज़दा पानेके लिये।
इस चमन पज़मुर्दा में गुञ्चा खिलाने के लिये ॥१॥
खूबिये क़िस्मत से राजन यह हुआ पैदा कुमार।
नाम दुनियां में तेरा रोशन कराने के लिये ॥२॥
ताक़त कलम में है कहां लाऊं कहां से मैं ज़बां।
जन्म लग्न के शुभ ग्रहों का फल सुनाने के लिये ॥३॥
है मुबारिक शुभ महूरत में हुआ इसका जनम।
कौम कुल और देश की सेवा बजाने के लिये ॥४॥
दीर्घ आयू पुन्य शाली श्रेष्ठ गुण यह कुमार है।
जन्म धारा वंश की शोभा बढाने के लिये ॥५॥
बत्तीस लक्षण पुरुष के बहत्तर कला में हो निपुन।
दुःख दुखियों का रहे हरदम मिटाने के लिये ॥६॥

रुकेगा 'मनशा' यह कदम फिर धर्म जिनकी राहमें।
डूबते भवसिन्धु से प्राणी बचाने के लिये ॥७॥

(राजा का पंडित को इनाम देना)

८६

राजा का मन्त्री को कुंवर पैदा होने की खुशी में शहर में जलसा वगैरा करने के वास्ते हुक्म देना।

चाल—यह तो मैं क्योंकर कहू तेरे खरीदारों में हू।

आज मिथिला देश में आनन्द मनाना चाहिये।
आरास्ता कर खूबही दुलहन बनाना चाहिये ॥१॥
छोड़दो कैदी सभी भूखों को भोजन दो खिला।
और धर्म कारज के लिए धनको लगाना चाहिये ॥२॥
खोलदो इक जैन कालिज पुस्तकालय आशरम।
विद्याको पढ़ने के लिए गुरुकुल बनाना चाहिये ॥३॥
धर्म करने के लिए बनवादो अस्थान इक बड़ा।
दानशाला औषधालय भी खुलाना चाहिये ॥४॥
जीव की हिन्सा न होने पाए मेरे राज में।
यह मुनादी सब जगह मंत्री कराना चाहिये ॥५॥

९०

(मन्त्री का अरदास करना)

(वार्ता)

धन्य है महाराज आपके उच्च विचार को और ख़याल पर उपकार को आजकल मुल्क में धर्म-

शास्त्र सीखने के लिये गुरुकुल, लौकिक विद्या हासिल करने के वास्ते कालिज, अनाथ बालकों की रक्षा के लिये अनाथाश्रम, पुस्तकालय, विद्यालय, धर्म-शाला, दानशाला, औषधालय; जीवों की रक्षार्थ पिंजरापोल गऊ-शाला आदि की अति आवश्यकता है, और इनके लिये दान करने का उत्तम और शुभ फल है, आपके हुक्म की तामील में आज़ से ही शुरू करूंगा।

६१

परियों का आना और मुबारिकबाद गाना।

चाल (नाटक)

आज प्यारी देखो गुलशन में आई बहार।
गुलों को फ़स्ले बहारी मुबारिक,
और राजा को होवे कुमार—
कुमार प्यारी देखो गुलशन में० ॥१॥
पज़मुर्दा चमन में गुंचा दिल खिला है,
आई खिज़ां में बहार—
बहार प्यारी देखो गुलशन में० ॥२॥
रिआया को वलीअहद होवे मुबारिक,
कहो सब मुबारिक पुकार—
पुकार प्यारी देखो गुलशन में० ॥३॥

उमर दराज़ होवे प्यारे कंवर की,
यही दुआ है हरबार-
हरबार प्यारी देखो गुलशन में० ॥४॥

(दरबार बिसर्जन होना)

सीन २७

नन्दीश्वरद्वीप का परदा ।

९२

मुनिराज़ रत्न चूड़जी का बैठे हुए नज़र आना, मदनरेषा और मनिप्रभ का आना और नमस्कार करके बैठ जाना, महात्मा रत्न चूड़ जी का व्याख्यान फरमाना ।

चाल—मेरे शम्भू कैलाश बुलालो मुझे ।

बिषय भोगों से मन को हटाया करो ।
प्रभू चर्णों में चित को लगाया करो ॥
क्रोध लोभ मद और मोह बुरें हैं चारो ।
राग द्वेष दोनों छोड़ शांति को धारो ॥
कुछ धर्म में वक्त लगाया करो ॥ बिषय० ॥१॥
आह का तीर खाली जाये कभी मुमकिन है ।
कोई इस वार से बचजाये कभी मुमकिन है ।
मत प्राणी के दिलको दुखाया करो ॥ विषय० ॥२॥

जो पिछले कर्म किये सुख दुख उतना मिलता है।
क्यों रात दिन तू पड़ा आफतों में पिलता है॥
मत तृष्णा को ज्यादा बढाया करो ॥विषय०॥३॥

शिकार हिन्सा चोरी जुवा मांस और मदिरा।
है वैश्या विष से भरी इसका जहर सबसे बुरा॥
पर नारी से प्रीती न लाया करो॥ विषय० ॥४॥

दिलमें गर नहिं है दया सारी इबादत बेकार।
चाहे सहो भूख प्यास सरको झुकावो सौबार॥
सब जीवों की रक्षा कराया करो॥ विषय० ॥५॥

खान पान मकां वस्त्र सेज का देना।
है पुन व सभ को नमस्कार करके जस लेना॥
मन बच तन शुभ कार्यमें लाया करो॥ विषय० ॥६॥

बस में इन्द्री करो मनको क़ाबू मार करो।
दान शील तप और भाव का प्रचार करो॥
'मनशा' सुमति से प्रीती बढ़ाया करो॥ विषय० ॥७॥

६३

सभा का मुनिराज की स्तुति करना।

[चाल—इलाजे दर्द दिल तुम से मसीहा हो नहीं सकता।

मुनी रतन चूड़जी स्वामी, स्वामी जन हों तो ऐसे हों।
करें सब जीव की रक्षा ऋषी जन हों तो ऐसे हों॥१॥

करें साधू बृती धारन-धरम उपकार के कारन ।
किया परचार सब जापर-परम जन हों तो ऐसे हों ॥२॥
करी हैं इन्द्रियां बस में व मन को मार कर काबू ।
और अपनी आत्मा जीती जती जन हों तो ऐसे हों ॥३॥
क्षुधा तिरषा उश्न और सीत आदि सबही दुख सहकर ।
करे हैं साधना तपकी तपी जन हों तो ऐसे हों ॥४॥
दया सागर कृपासिंधू क्षमा समता के धारी हो ।
हैं उत्तम श्रेष्ट गुण ब्यापक गुनी जन हों तो ऐसे हों ॥५॥
लगाकर ध्यान चरनों में निरञ्जन सिद्ध ईश्वर के ।
करे हैं मोनको धारन मुनिंजन हों तो ऐसे हों ॥६॥
नहीं संसार से मतलब है ख्वाहिश मोक्ष के सुख की ।
परिग्रह जगके सब त्यागे त्यागी जन हों तो ऐसे हों ॥७॥
सुधारे हैं अधरमी जन सुना उपदेश अमृत का ।
लगाया धर्म के मारग धरम जन हों तो ऐसे हों ॥८॥
हुई 'मनशा' कृतार्थ सारी नग्री दर्श से स्वामिन् ।
कथा उपदेश को सुनकर कथक जन हों तो ऐसे हों ॥९॥

९५

मदनरेषा का मुनिराज से अर्ज करना (वार्ता)

महाराज मेरे तुरत के जन्म पाए हुवे बच्चे का वृतांत वर्णन करें तो मेरी आत्मा को सुख और शांति का कारण हो ।

६५

मुनिराज का ज्ञान बल से यह जानकर कि मदनरेषा अपने पुत्र को सुख के ठिकाने पहुंचा समझ कर निश्चित मन से संजम धारन करेगी पूरब जन्म से लेकर भविष्य तक का वृतांत सक्षेप से वर्णन करना।

* दोहा *

पहिले समय जम्बूद्वीप में, पूर्व बिदेहके मांय।
पुष्प कलावती विजय में, मनितोरन नग्र बसाय॥

॥ चौपाई ॥

अमियश चक्र पति वहां राजा।
नित्य प्रति करे धर्म के काजा॥
पुष्पशिषर रतनशिषर कुमारा।
दोनों ने चार महा व्रत धारा॥
पूरब १६ लख संयम पाल।
बारवें लोक गए कर काल॥
फिर धातृ खगड भरत मंझार।
हरिषेन वासु के हुवे कुमार॥
सागरदेव सागरदत्त नाम।
दिक्षा ग्रहण करी उच्च प्रणाम॥
एक समय मुनि ध्यान लगाई।
बिजली कड़क गिरी दोनों पे आई॥

मरकर सातवें सुरपुर गए ।
देवलोक सुख भोगत भए ॥
एक समय बना अवसर आन ।
जिनवर को हुआ केवल ज्ञान ॥
बाईसवें प्रभू नेम महाराज ।
उनके केवल महोत्सव काज ॥
दोनों देव प्रमोद बढ़ाए ।
भरतखण्ड गिरनार पे आए ॥
प्रभु चरणों में शीश नवाया ।
विनय से प्रश्न किया मन आया ॥
आयू यह पूरण कर महाराया ।
जन्मेंगे हम कहां श्रीजिनराया ॥
उत्तर तब भगवन फरमाया ।
देवों का संशय तुरत मिटाया ॥
जन्मेगा एक नगर मिथला में ।
पदमरथ राजा कहलावें ॥
दूजा मालवदेश मँझारा ।
सुदर्शनपुर ले अवतारा ॥
जुगबाहू हों पिता सुजान ।
माता मदनरेषा गुणखान ॥

तिसकी कुक्ष में जन्में कुमार ।
पुत्र पदमरथ कहे संसार ॥
सुन वृतान्त देव सुखि भए ।
नमस्कार कर सुरपुर गए ॥

(वार्ता)

इन दोनों देवों ने मदनरेषा कभी का जन्म धारण कर लिया है । तेरे पुत्र को छोड़ कर चले जाने के बाद मिथिला नरेश पदमरथ सैर करते २ सुदर्शनपुर के जङ्गल में जानिकला और तालाब के निकट ही तेरे पुत्रको लेटा देख कर उसको उठा कर लेगया चूंकि उसके कोई सन्तान नहीं थी इस-वास्ते अपनी रानी चन्द्रप्रभा को जाकर दिया और रानी के कंवर पैदा होना मशहूर करके इस वक्त उसका जन्म उत्सव मना रहा है । मिथिला नगर में इस समय घर घर खुशी मनाई जारही है चारों तरफ़ से बधाई बधाई की आवाज़ आरही है । तेरा पुत्र अति भाग्यवान कुल को विख्यात और सूर्य के समान प्रकाशित करने वाला है तू उसकी तर्फ की विलकुल भी चिंता मत कर और अपने आत्म कल्यान के मनोरथ को सफल कर ।

९६

मदनरेषा का मुनिराज से अर्ज़ करना।

(वार्ता)

श्री महाराज धन्य है आपको और आपके पवित्र ज्ञान को जिससे मेरे चित्त का संकल्प विकल्प दूर होकर शान्ति और समाधि भाव स्थापित हुआ। (शेर)

भ्रम संशय हटा मेरा कही जो दास्तां मेरी।
नहीं कर सकती है बर्नन तुम्हारे गुण जबां मेरी॥
नरेन्द्र और सुरेन्द्र भी स्तुति कर करके हारे हैं।
करूं महिमा तुम्हारी नाथ है बुद्धि कहां मेरी॥

९७

मनिप्रभ का मदनरेषा से कहना।

मनि०—प्यारी बहन मार्ग में यदि इस सेवक से आपकी कोई अविनय हुई हो या कोई तकलीफ पहुंची हो तो उसके लिये मैं क्षमा चाहता हूं और आगे के वास्ते आपकी बतलाई हुई हरएक सेवा पूरण करने में अपना अहोभाग्य समझूंगा।

सेवाका तो क्या ज़िक्र है गर देह भी दरकार हो।
तो वास्ते तेरे बहन उससे भी न इनकार हो॥

९८

मद०—बीरा तेरे प्रताप से महात्मा के दर्शन हुए, दुखों का अन्त हुआ, मैं तेरे उपकार का बदला देने में असमर्थ हूं और सेवा की तो मुझे अब कुछ आवश्यकता नहीं है कारण कि मैं संसार का स्वरूप भली भांति देख चुकी हूं अब न संसारी सुखों की चाहना है न-ही संसार में कोई सुखिया नज़र आता है, इस जगत में लोभायमान होना मूरखता है।

(गाना) चाल—सिया राम अयुध्या बुलालो मुझे।

ग्यानी दुनियां में दिल को लगाता नहीं ॥
फंसे मूरख जो सुख कभी पाता नहीं ॥
चक्रवर्ती मण्डलेश राजा और हलधर।
संसार में जो होता सुख क्यों तजते तीर्थंकर।
पुन्यवान् उनसे तो ज़ियादा कहलाता नहीं ॥ ग्यानी०॥
न कोई हमने इस संसार में सुखी देखा।
है देखा जिसको ग़म अलम ज़दा दुखी देखा।
सुख देवता को भी नज़र आता नहीं ॥ ग्यानी० ॥
दुखी है निर्धनी तों साहूकार को भी खतर।
जो छत्रधारी राजा राना उसको भी है डर।
वक्त शांती से कोई बिताता नहीं ॥ ग्यानी० ॥

है पुत्रवान दुखी पुत्र के बिना भी दुखी ।
अकेला होने का दुख और कुटम्ब से भी दुखी ।
सबर किसी तरह से भी आता नहीं ॥ ग्यानी० ॥
किसी का मन दुखी है और बुढापा मौत का भय ।
बीमारी तनमें लगी जिससे ज़िन्दगी दुखमय ।
कोई करुणा भी उनकी लाता नहीं ॥ ग्यानी० ॥
ग़रज़ हैं दुख से दुखी सब ही जीव संसारी ।
सुखी वो आत्मा है दुनियां से जो है न्यारी ।
'मनशा' दुनियां से दिल क्यों हटाता नहीं ॥ग्यानी०॥

९९

आकाश से बिमान का उतरना और उसमें से एक तेजस्वी देवका निकल कर मदनरेषा के चरणों में गिरना और मनिप्रभ का उससे कहना ।

(वार्ता)

तुम कौन हो जो महात्मा के ऐसे पवित्र स्थान पर बेधड़क चले आये, तुम्हें मुनिराज के चर्णार-बिन्द छोड़कर बिषय बिकार के बशीभूत होकर इस सती के पावों में पड़ते हुये शरम नहीं आती ?

शेर—धिक्कार है तुमको भी,
और इस कामको धिक्कार है ।
धिक्कार क्या है इकदफा,
सौवार फिर धिक्कार है ॥

सच है बिभचारी पुरुष लोक मर्यादा और लज्जा को त्याग देता है ऐसे कामको बार २ लानत है।

(गाना)

चाल—इक तीर फैंकनाजा तिरछी कमान वाले।

अय काम तुझको लानत है रोज़ और शबाना।
फन्देमें तेरे फंस कर नालां है इक ज़माना ॥१॥
इस कामने सभी को तहे तेग़ कर दिया है।
कैसा ही सफ़ शकन हो जंगे बहादुराना ॥ २ ॥
राजों के राज छीने शांहों के ताज छीने।
और ख़ाक में मिलादी सब शान खुसरवाना ॥ ३ ॥
छोटे बड़े बिगाने अपने का भी नहीं है।
पासे अदब हया भी हो जाती है रवाना ॥ ४ ॥
जो आगे इसके आया बस कर दिया सफाया।
मिज़गां का तीर लगते ही बनगया निशाना ॥ ५ ॥
देवों का इन्द्र देखो इन्द्रानी के बस होकर।
पावों में रखता है वो अपना मुकट शाहाना ॥ ६ ॥
भड़की हुई हो जिसके सीने में विषय अग्नि।
जितने हैं काम उसके हैं सबही वहशियाना ॥७॥
धन्य है महात्मा को जो ज़द से इसकी बचकर।
'मनशा' उचारते हैं उपदेश फ़ाजिलाना ॥ ८ ॥

१००

मुनिराज का मनिप्रभ से कहना (वार्ता)

मनिप्रभ तुमको इस देव का हाल मालूम नहीं है इसीसे तुमने इस पर बिषयांध होने का दोष लगाया है यह देव इस सती का पती जुगबाहू है।

शेर।

पानीग्रहन जिसने किया था इसका अपने हाथ में।
यह नाथ इसका था इसे नाथा था नथकी नाथे में॥

अपने बड़े भाई मनिरथ के हाथ से मरने पर सती के वैराग्य उपदेश से संसार से मंनको हटाया परमात्मा के चरणों में ध्यान लगाया, सब प्राणियों पर क्षमा भाव जतलाया और आयू पूरण कर देवलोक में इस देव गति को पाया सो अब यह वहां से पहिले अपने उपकारी को नमस्कार करने के वास्ते यहां आया और चरणों में मस्तक निवाया।

१०१

मनि०—(देवना से) प्रिय देव तुम्हें धन्य है मैंने बगैर हालात सुने आपकी अविनय की है जिसके वास्ते मैं क्षमा अर्थी हूं।

देव—आपने जो कुछ भी कहा यह प्रत्यक्ष प्रमाण को लेकर कहा है इसमें दोष की क्या बात है और क्षमा का क्या काम है।

१०२

(गाना) मदनरेषा से।

चाल—हाए सय्यां पड़ूं मैं तोरे पय्यां सताओ काहे महिका।

मदनरेषा प्यारी, सतवन्ती नारी, तेरा होवे न एहसां अदा
तेरा उपकार है मुझ पे भारी,
मेरी अन्तिम अवस्था सुधारी,
सुधारी सती तूने—हमारी सती तूने।
करके बिचार, रञ्ज निवार, दुखको टार, समता धार।
देव गती यह मिली तेरे सहारे,
फिरजो दर्शन कर लिये आय,
तेरे गुण न वर्णे जांय।
तू है नार, धर्म शृङ्गार, गुण विस्तार, बारम्बार।
मदनरेषा प्यारी, सतवन्ती नारी, तेरा० ॥१॥

देवता—कुछ मेरे को सेवा की आज्ञा करो।

मद०—जहां तक तुम्हारे से बन सके जैन धर्म को उद्योत करने का प्रयत्न करते रहना ताकि यह देव आयुप पूर्ण करने पर उत्तम कुल में जन्म धारण करके निज आत्म का भली-भांति कल्याण कर सको।

देवता—मैं इस आपके परोपकारक शिक्षा पूरण कथन को सप्रतिज्ञा स्वीकार करता हूं—

(मुनिराज के चरणों में गिरकर)

श्री महाराज मैंने गुरुदेव को छोड़कर पहिले अपने उपकारी को नमस्कार किया, इस मेरी अविनय का अपराध क्षमा करें।

मुनि०—नहीं देव पहिले तुमको अपने उपकारी का ही सत्कार करना उचित था क्योंकि उसके ही प्रताप और उपदेश से यह गती और स्थान मिला है।

मद०—(मुनिराज से) महाराज मेरी दीक्षा धारण करने की अभिलाषा है।

मुनि०—जिसमें तुम्हारी आत्माको सुखहो वह काम करो, (देवता से) अब तुम इस सती को मिथिलानगर में सुदर्शना साध्वी के पास ले जाओ।

देवता—जैसा हुक्म।

मदनरेखा और देव का मुनिराज को नमस्कार करना और दोनों का विमान में बैठ कर जाते हुवे नजर आना।

सीन २८

मिथिलानगर का परदा ।

१०३

सुदर्शना महासती का स्थानक में बैठे हुवे नज़र आना मदनरेषा और देवता का आना और नमस्कार करके बैठ जाना साध्वी का ज्ञान बल से दोनों का हाल जानकर उपदेश देना ।

(वार्ता)

मदनरेषा इस जीव को प्रथम तो मनुष्य का जन्म ही मिलना अति कठिन है और आर्य देश उत्तम कुल रोग रहित देह आदि जो दस वस्तू शास्त्र में बतलाई हैं उनका मिलना तो बहुत ही पुन्य के उदय से होता है जैसे कहा है—

(गाना) चाल—उमराव थारी बोली प्यारी लागे महाराज

जिनराज थारी अमृत बानी का है आज आधार ॥
चारगती के चौक में चौरासी बाज़ार ।
सहे दुःख भ्रमते बहुत इन गलियों के मंझार ॥
जिनराज पाया दुर्लभ फिर यह मानुष जन्म सार ॥१॥
आरजदेश कुल सिरोमनि इन्द्री एक और चार ।
रोगरहित तनदीर्घ आयू श्रावक घर अवतार ॥

जिनराज संत समागम मिलना अति कठिन चितधार ॥२॥

दया धर्म का सुनना मुशकिल फिर शर्धा लाना दुश्वार।
धर्म में फिर तन मनको लगाना है खंजर की धार ॥
जिनराज मिलना इन दस बातों का मुशकिल हरबार॥३॥

अब के जीते जीत है और अब के हारे हार ।
अबभी जो संभले नहीं फिर इक बीस चौका त्यार ॥
जिनराज 'मनशा' शरण तिहारी करदो भव से पार ॥४॥

(वार्ता)

तथा इन सर्व समागमों के प्राप्त होने पर जीव को धर्म करना उचित है हर समय कर्मों से डरते रहना चाहिये न मालूम किस समय अशुभ कर्म उदय होजावें कर्मों के छोटे बड़े बालक वृद्ध राजा महाराजा राव रङ्क किसी का लिहाज़ नहीं है जैसे कहा है—

(गाना)

चाल—मालन बनाके लाई क्या लाजवाब सेहरा ।

करमों से डरते रहना इनकी है चाल न्यारी ।
क्या क्या करें यह छिनमें होता नहीं विचारी ॥१॥
पूरब करम किये जो फल उनका भोगना है ।
क्या तीर्थ नाथ चक्री बलदेव पदके धारी ॥२॥

भगवान आदी जिनवर के बंध कर्म का था।
दस और मास दो तक सही भूख प्यास भारी ॥३॥
महावीर स्वामी जी ने तकलीफ बहुत भोगी।
आकर के देवता ने क्या क्या दिये दुखारी ॥४॥
रघुबीर के तिलक की थी धूम अजुध्या जी में।
गद्दी के बदले होगई बनोबास की तयारी ॥५॥
शिशुपाल के तो करमें कंगना बंधा रहा ही।
रुकमन को ब्याह लेगये यादू पती मुरारी ॥६॥
कर्मों का ढङ्ग देखो खूंटी ने हार निगला।
बिक्रम के हाथ पावों काटे करी खुआरी ॥७॥
इनकी विचित्र रचना को दिलमें धार 'मनशा'।
पिछले करम को तोड़ो बांधो न अब अगारी ॥८॥

(वार्ता)

मदनरेषा दुनियां असार है, नासमान है जो पैदा हुवा एक दिन ज़रूर जाएगा, इस संसार में बड़े बड़े अवतारी चक्रवर्ती बलदेव वासुदेव राजा राना हो चुके आख़िर काल ने सबको खाया।

(गाना)

चाल—फूला जो गुल है बाग़ में वोभी कभी कुमलाएगा।

जीता जिन्हें है रागद्वेप वोह देव अर्हन हैं कहां।
नाथ थे छः खंड के वो चक्रवर्ती हैं कहां ॥१॥

हैं कहां वह बासु लछमन युद्ध में जो बीर थे।
सङ्ग थे हनुमंत भीषन बलके धारी हैं कहां ॥२॥
हैं कहां वह शालिभद्र रिद्धि सिद्धि के धनी।
इन्द्र ने मस्तक निवाया वह दसारन हैं कहां ॥३॥
सत्तबादी थे हरिचन्द छोड़ा राज कुटम्ब को।
धर्म पर क़ायम रहा जो वह हक़ीक़त हैं कहां ॥४॥
थोड़े दिनकी जिन्दगी है करले कुछ कारे सवाब।
पछतायगा 'मनशा' तू आख़िर यह मनुष तन है कहां ॥५॥

(वार्ता)

यह समझ कर धर्म कार्य जो कुछ भी हो सके जल्दी करना चाहिये और देर नहीं करनी चाहिये–

१०४

श्रोताजनों का साध्वी जी के चर्णों में अर्ज़ करना।

(वार्ता)

श्री महाराज कुछ धर्म तथा नीती मिश्रित उपदेश की कृपा करें यह हमारी अभिलाषा है।

१०५

साध्वी जी का उपदेश फ़रमाना।

१०६

चाल—(नाटक)

धर्म कार्य करने में ज़रा भी,
विलम्ब लगाना नहिं चाहिये।

दान सुपात्र तप करने में,
मन अकुलाना नहिं चाहिये ॥१॥
ग्रहन करी प्रतिज्ञा में कोई,
दोष लगाना नहिं चाहिये ।
झूठ कपट छल और अन्याय से,
दर्ब कमाना नहिं चाहिये ॥२॥
लेन देन भोजन वैद्य के,
सन्मुख शरमाना नहिं चाहिये ।
गाय कुमारी गुरु शास्त्र को,
पांव लगाना नहिं चाहिये ॥३॥
राजा गुरु स्त्री का माता से,
दर्जा घटाना नहिं चाहिये ।
दुख सङ्कट और क्लेश समय में,
धीर्य हटाना नहिं चाहिये ॥४॥
उत्सव भोजन त्यौहार छोड़,
परदेश को जाना नहिं चाहिये ।
धन बल और कुटम्ब मान से,
किसी को सताना नहिं चाहिये ॥५॥
निद्रा मैथुन न करे सन्ध्या समय,
भोजन खाना नहिं चाहिये ।

तपसी मन्त्र वादी रसोइया,
कभी कोपाना नहिं चाहिये ॥ ६ ॥
दूध दही घी तेल पानी को,
खुला रखाना नहिं चाहिये ।
हाकिम और धनवान नीच से,
बैर लगाना नहिं चाहिये ॥ ७ ॥
वैद्य नदी ब्योपारी धनिक न हों,
जिसजा ठिकाना नहिं चाहिये ।
बिन कारज और बिन आदर के,
पर घर जाना नहिं चाहिये ॥ ८ ॥
रोग, काल, शत्रु, सङ्कट समय,
भाई भुलाना नहिं चाहिये ।
माता, पिता, राजा, गुरु स्वामी का,
अवगुण गाना नहिं चाहिये ॥ ९ ॥
जैन धर्म मानुष तन पाकर,
पाप कमाना नहिं चाहिये ।
'मनशा' अवसर यह फिरना मिले,
व्यर्थ गँवाना नहिं चाहिये ॥ १० ॥

१०७

साध्वी जी का उपदेश समाप्त होने पर श्रोता जनों का भगवान् के चर्णों में अपने शुभ प्रमाणों के वास्ते प्रार्थना करना ।

चाल—[नाटक] इस तर्ज़ पर थियेट्रों, बोर्डिंगहाउस और स्कूलों में आम तौर से शुरू में परमात्मा की स्तुती मङ्गलाचरण हुआ करता है।

जै, महावीर, दयालू, कृपालू,
करुणा सिन्धू शिव सुख लीन।
आप दयाके सागर हैं,
हम अति दीन हैं और बल हीन ॥१॥
श्री जिनवर त्रयलोक्य पती,
हम दासों की पूरन कर आश।
समकित सूर्य प्रकाश करो,
जो मिथ्यातम का होवे बिनाश ॥२॥
नितप्रति उठकर कृपासिन्धु हम,
नाम तुम्हारा लिया करें।
रागद्वेष को दिल से हटाकर,
प्रेम परस्पर किया करें ॥३॥
श्रेष्ठ जनों की आज्ञा पालें,
गुरु की भक्ती करें हमेश।
क्रोध मोह रहे उपशम हमरा,
तृष्णा लोभ बढ़े न विशेष ॥४॥
ज्ञान ध्यान में चित को लगावें,
खोटे मार्ग न जायें कभी।

जिन-धर्म हमारा प्राण पियारा,

करें उन्नती मिलके सभी ॥५॥

हिंस्सा चोरी मद्य मांस से बचें,

न जूवा खेलें कदा ।

वेश्या पर स्त्री से भी हम,

मन बच तन से रहें जुदा ॥६॥

दुख से व्याकुल देख और को,

अपना सीना फ़िगार करें ।

अपने सुख आराम को तजकर,

बने जो पर उपकार करें ॥ ७ ॥

करें अनाथों की हम सेवा,

मोहताजों का रक्खें मान ।

कोई कार्य करें नहिं ऐसा,

जिससे जग में हो अपमान ॥ ८ ॥

दुष्ट करम यह चारगती,

और चौरासी में रहे रुलाय ।

हे ! जिनराज करो कृपा,

जो हम दीनोंका दुख मिटजाय ॥ ९ ॥

हाथ जोड़ मस्तक को झुका कर,
चरनन अर्ज़ गुज़ार रहे।
'मनशा' निज दासों के उरमें,
भव भव भक्ती अपार रहे ॥ १० ॥

मदनरेषा का उपदेश सुनकर सुदर्शना जी के पास संयम ग्रहन करना और दिक्षा महोत्सव होना।

सीन २९

दिक्षा मंडप का परदा।

१०८

महासती सुदर्शना जी और मदनरेषा और पबलिक का बैठे हुवे नज़र आना मदनरेषा का दिक्षा महोत्सव होना और सुव्रता साध्वी नाम रक्खा जाना और सभा का मुबारिकबाद गाना।

चाल—हसीनों का हर इक आलम में शोहरा हो ही जाता है।

यह जलसा जैन दिक्षा का मुबारिक हो मुबारिक हो।
महातम बीर शाशन का मुबारिक हो मुबारिक हो ॥१॥
जिनेन्द्र देव की बानी को सुनकर मदनरेषा ने।
तजा संसार सागर को मुबारिक हो मुबारिक हो ॥२॥

सुदर्शना जी के चर्णों में करी दिक्षा ग्रहन आकर ।
मिथिला नग्र में उत्सव मुबारिक हो मुबारिक हो ॥३॥
था पहले नाम महारानी मदनरेषा परन्तू अब ।
कहलाना सुव्रता साध्वी मुबारिक हो मुबारिक हो ॥४॥
हुई पूरी मनोबांछा जो थी मुद्दत से दिल अन्दर ।
घड़ीदिन आजयह शुभकी मुबारिकहो मुबारिकहो ॥५॥
सफल हो कामना 'मनशा' यही अरदास है स्वामी ।
करो कल्यान देवी का मुबारिक हो मुबारिक हो ॥६॥

[ड्राप सीन]

इति मनशाराम रचित मदनरेषा नमीराज
नाटक का तीसरा एक्ट समाप्तम् ।
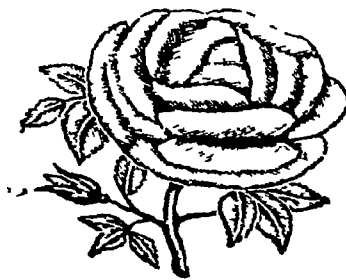
मदनरेषा-नमीराज नाटक.

मनसाराम रचित।

मिथिला नरेश के हाथी का भागकर सुदर्शन पुर में जाना, महाराज चन्द्रयश का पकड़ कर बांधना, नमीराज का चन्द्रयश पर चढ़ाई करके आना, सुव्रता साध्वीका आकर नमीराज को समझाना और दोनों सगे भाइयों की पहचान कराना, चन्द्रयश का नमीराज को राज्य देकर दिक्षा धारण करना।

* श्री जिनायनमः *

दरबार का परदा।

सुदर्शनपुर में महाराज चन्द्रयश का दरबार लगा हुआ नज़र आना
और कहीं से भाग कर आए हुये हाथी के देश में नुकसान
पहुंचाने से तंग आकर प्रजा का आना और राजा
से अर्ज करना—[गाना]

चाल—न दिलको आज कल पहलू में पाता हूं न जाना को।

महाराजा चन्द्रयश जी दुहाई है दुहाई है।
प्रजा दरबार में आज आपके फ़रियाद लाई है॥१॥

इकहाथी है नहीं मालूम किसका कहांसे आया है।
भरा है जोश आंखों में व मस्ती सिरपे छाई है॥२॥

करीं सब खेतियां बरबाद उजाड़ बाग़ो बग़ीचे।
और आफ़त उसने सारे देश में आकर मचाई है॥३॥

बन्दोबस्त कीजिये राजन रय्यत को जो सुख होवे ।
पडी आफ़त में है आइ हुई सारी खुदाई है ॥ ४ ॥

११०

राजा का जवाब चाल नं० १०६

प्रजा प्यारी रखो धीरज करो दिल में समाई है ।
मैं तय्यार हूं मिटाने को विपत जो तुमपे आई है ॥१॥
अभी पकड़े मँगाता हूं मैं उस बदमस्त हाथी को ।
रिआया प्राणप्यारी जिसने आकर यूं सताई है ॥२॥
करो आराम जाकर ख़ौफ़ मत दिलमें रखो हरगिज ।
रय्यत की भलाई में ही राजा की भलाई है ॥ ३ ॥

प्रजा का जाते हुए नज़र आना ।

१११

राजा—(चोबदार से) अरे चोबदार जाओ और सिपहसालार को बुलाकर लाओ ।

चोब०—बहुत अच्छा महाराज अभी जाता हूं ।

चोबदार का जाना और सिपहसालार को साथ लेकर आना ।

सिप०—श्री महाराज क्या हुक्म है जो सेवक को याद फ़रमाया ।

राजा—(शेर)

सिपहसालार मेरेपास यह फर्याद आई है ।
कि एक बदमस्त हाथीने धूम आकर मचाई है ॥

रय्यत तङ्ग करदी रौंदडाला आगे जो आया।
सदा चारों तरफ़ से है यही राजा दुहाई है॥
अभीजावो पकड़लावो करो बंद फीलखाने में।
न हो देरी हुक्म हमने दिया तुमको सुनाई है॥

सिप०—बहुत बेहतर महाराज मैं अभी जाता हूं और हाथी को पकड़ कर लाता हूं।

सिपहसालार का जाते हुए नज़र आना।

११२

सिपहसालार का हाथी को पकड़ कर फीलखाने में दाखिल करना और आकर राजा से अर्ज़ करना।

सिप०—श्री महाराज के प्रताप से हाथी को पकड़ कर फीलख़ाने में दाख़िल कर दिया है और जो हुक्म होवे ?

राजा—बस इजाज़त है आप आराम कीजे।

सिपहसालार का जाना।

नमीराज के दरबार का परदा।

११३
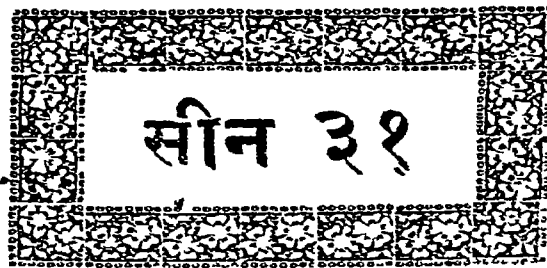
मिथिलानगर में महाराज नमीराज का दरबार लगाहुआ नज़र आना और राजा का मन्त्री से कहना।

(वार्ता)

राजा—मन्त्री जी हमारा हाथी जो मस्त होकर निकल गया था, मालूम हुवा है के राजा चन्द्रयश ने पकड़ कर उसको अपने फील-ख़ाने में दाख़िल कर लिया है हाथी लेने के लिये क्या तदबीर करनी चाहिये।

मन्त्री—हुजूर पैग़ाम देकर क़ासिद को भेज़देवें।

राजा—तुम्हारा ख़ियाल ठीक है, अच्छा तो पत्र लिख कर क़ासिद को रवाना करदो।

मन्त्री का पत्र लिख कर कासिद को देना और कहना।

मन्त्री--सुदर्शनपुर में जाकर महाराज चन्द्रयश को पत्र देना और कहदेना कि महाराज नमी-राज का हाथी वापिस देदो।

क़ासिद--बहुत बेहतर (पत्र लेकर रवाना होना)

चन्द्रयश के दरबार का परदा।

११४

सुदर्शनपुर में महाराज चन्द्रयश का दरबार लगा हुआ नज़र आना और क़ासिद का पैग़ाम लेकर आना।

(वार्ता)

क़ासिद—महाराज की जय हो, मुझे महाराज नमीराज ने आपके पास यह पत्र देकर भेजा है।

राजा—(मन्त्री से) मन्त्री जी पत्र पढकर सुनाइये।

मन्त्री का दूत से पत्र लेना और पढ़ कर सुनाना।

चाल—दिल हमने सनम को दिया नज़राना समझ कर।

स्वस्ती श्री सुदर्शन नगर शुभस्थान तुम्हारा।
हो राजा चन्द्रयश तुम्हें परणाम हमारा ॥१॥
कुशल क्षेम पूछने के बाद है अरज़ यही।
वापिस हमें देदीजिये गज श्याम हमारा ॥२॥
वरना नतीजा इसका न होगा भला अगर।
तामील न होगी जो है पैग़ाम हमारा॥३॥
महलो क़िले की ईंट से ईंटें बजाऊंगा।
बस आखिरी सुनलीजिये अहकाम हमारा॥४॥

११५

राजा—(दूत से) जाकर अपने राजा से कह देना अब हमारी तुम्हारी बात नोक ज़बान से नहीं बल्कि नोक शमशेर से मैदान जङ्ग में होगी।

राजा (मन्त्री से)

नमीराज के पत्र का जवाब लिखकर दूत को देदो।

मन्त्री का दूत को पत्र लिखकर देना और दूत का नमस्कार करके जाते हुवे नज़र आना।

नमीराज के दरबार का परदा।

११६

राजा का दरबार में बैठे हुए नज़र आना और दूत का पत्र लेकर आना और कहना।

(वार्ता)

दूत—(नमस्कार करके) महाराज की जय हो, आपका सन्देसा राजा चन्द्रयश को दिया उन्होंने बदले का उत्तर दिया है, और कहा है, कि हमको तुम्हारे पत्र का जवाब भली भांति समर स्थान में ही देना पड़ेगा।

(पत्र देना)

राजा—(मन्त्री से) पत्र लेकर पढ़ो।

मन्त्री का पत्र लेकर पढ़कर सुनाना।

११७

चाल—दिल हमने सनम को दिया नज़राना समझ कर।

मिथिला नरेश नमीराज आज तुम्हारा।
मालूम हुवा कुशल क्षेम पत्र के द्वारा ॥१॥
था एक तो अपराध कि हाथी नें तुम्हारे।
आफ़त मचाई देश में बाग़ों को उजारा ॥२॥
मुआफ़ी के बदले बल्कि दिखाते हो धमकियां।
यह दूसरा क़सूर हुवा और तुम्हारा ॥३॥
मैदाने जङ्ग में तुम्हारे सामने होकर।
उत्तर हमें लाज़िम है अब देना ही तुम्हारा ॥४॥
होते ही सन्मुख आयेंगे सब होश ठिकाने।
हो जाएगा नशा भी सब काफ़ूर तुम्हारा ॥५॥

११८

(वार्ता)

राजा—मन्त्री जी अब देर करने का समय नहीं है, लशकर को तय्यार करो और सुदर्शनपुर चलने का विचार करो।

(शेर)

है चन्द्रयश की मेरे आगे कहो क्या हस्ती।
आते ही सामने सब काफ़ूर होगी मस्ती ॥

मैंने ग़ज़ब से देखा जिसको जला के छोड़ा।
और ख़ाक स्याह उसको दम में बनाके छोड़ा॥

(गाना)

चाल—[सारङ्ग] कोई चातुर ऐसी सखी न मिली मोहे पीके द्वारे पहुंचा देतो।

प्यारे सालार जङ्ग और मन्त्री सुनो,
किस लिये और हम इन्तज़ारी करें।
लेके चतुरङ्ग सैना अभी साथ में,
बस सुदर्शन नगर की तयारी करें॥१॥
क़िला शकन जंगी लो तोपें सभी,
और क़बज़े में ख़ंजर कटारी करें।
चारों जानिब से घेरे में दे शहर को,
गोलाबारी का तूफ़ान जारी करें॥२॥
चन्द्रयश सामने मेरे है चीज़ क्या,
दूर से बैठा ही बातें भारी करे।
मैं जलाकर करूं शहर को ख़ाक स्याह,
जो न आकर मेरी ख़ाकसारी करें॥३॥
बस नहीं वक्त है अब ज़रा देर का,
जा के लशकर में अहकाम जारी करें।
कूच होगा सुदर्शन पुरी को सुबह,
हो कमी पूरी वह आज सारी करें॥४॥

सीन ३४

सुदर्शनपुर के बाहर लश्कर का परदा।

११६

सुदर्शनपुर के बाहर महाराज नर्मीराज का फ़ौजों से घेरा डाले हुवे नज़र आना और नगर के दरवाजे बन्द देखकर राजा का मन्त्री और सेनापति से कहना।

(गाना)

चाल—बहार आई है भरदे बादए गुलगूं से पैमाना।

यह राजा नीच है नहिं,
मुसतहिक़ क्षत्री कहलाने का।
न इसको ख़ौफ़ है दुशमन,
के भी सरपर चढ़ आने का ॥१॥
यह कायर सोया है अब तक,
इसे तो अच्छा लगता है।
बजाए तेग़ छूने के,
हाथ छूना ज़नाने का ॥२॥
भिखारी हो सवाली हो,
फैलाए हाथ जो आकर।

नहीं धनवान ख़ामोश,
होने से शोभा को पाने का ॥३॥
पकड़ लेने की हाथी को,
सज़ा तो इस को देंगे ही।
मज़ा दीगर चखायेंगे,
क़िले में बैठ जाने का ॥४॥

(वार्ता)

बहादुरो अब शत्रु के सन्मुख आने का कब तक इन्तज़ार करोगे शहर में प्रस्थान करो, और जब तक तुम्हारे प्राण शरीर में, शरीर में हाथ और हाथ में तलवार रहे शत्रु दल का घमसान करो, और जब तक—

(शेर)

धड़ पे है सर व सर में समर का जनून है।
तन में रगें रगों में बुजर्गों का खून है॥

अपने देश और बहादुर बुज़ुर्गों के नाम पर न्यौछावर होजावो, क़िले और महल की ईंट से ईंट बजादो, और क़िले में छुपे हुवे डरपोक दुश्मन को जङ्ग करना सिखलादो, मगर याद रखना बहादुरो—

(शेर)

प्रजा जो उसकी है वो अपनी ही परजा पियारी है।
रिआया उसकी वह भी मां बहन बेटी हमारी है॥१॥
प्रजा के मालोदौलत को समझना ख़ाक की ढेरी।
और उनके बाल बच्चे समझना संतान हमारी है॥२॥
धरम और नीती के अविरुद्ध मत करना ज़रा मात्र।
सिखादो शत्रु को किस तरह नीती दिलमें धारी है॥३॥

सिप०—सिरफ़ महाराज के हुकम का इन्तजार है।

१२०

राजा का सामने दो मूरतों का खड़ी देखकर
मन्त्री से कहना।

(शेर)

खड़ी हैं कौन ऐसे वक्त में क्यों दीं दिखाई हैं।
बुलालो इस जगह पूछें ख़बर क्या ताज़ा लाई हैं॥१॥

मन्त्री का जाना और उनसे कहना।

(शेर)

बुलाया आप को राजा ने कृपा कर पधारो तुम।
क्या कारण इस वक्त आनेका सो चलकर उचारो तुम॥

दोनों का राजा के पास जाना और कहना।

(शेर)

क्षमा अर्थी हैं अय राजन् हम इस अवसर में आने की।
हमारी आशा है कुछ भेद इस झगड़े का पाने की॥१॥

१२१

राजा-(शेर)

तुम्हारी शकलो सूरत से तो त्यागी ज़ान पड़ते हो।
तुम्हें संसार से मतलब है क्या क्यों आड़ अड़ते हो॥

साध्वी-क्या दिलमें बात रक्खोगे,
कि हम बिलकुल निस्वार्थ हैं।
कहेंगे आप से जो कुछ,
वह सब कुछ ही प्रमार्थ है॥१॥

राजा-हां यह तो साफ ज़ाहिर है,
कि तुम दुनियां के त्यागी हो।
नहीं संसार से मतलब,
सिरफ़ शिव पुर के रागी हो॥१॥
परन्तु देर तक बेचैन,
मत कीजे मुझे अब है।
कहो सब साफ़ यहां आने का,
जो दोनों का मतलव है॥२॥

साध्वी-मेरी बात इस वक्त नहीं,
ध्यान में तेरे समा सकती।
तुम्हारे जोश है जब तक,
नहीं तुमको बता सकती॥१॥

मगर इस जङ्ग से कहिये,
तुम्हारा क्या प्रयोजन है।
बतावो तो कृपा करके,
हमारा यह नियोजन है ॥२॥
राजा—नहीं तय्यार कहने को,
बचन बंध मैं न होने का।
पधारो यह समय नहीं,
आपका है व्यर्थ खोने का ॥१॥

१२२

(साध्वी का जवाब)

चाल—कहां ले जावुं दिल दोनों जहां में इसकी मुशकिल है।

सबर राजन सबर राजन,
तेरे हित को ही चाहते हैं।
जो कुछ हम काम करते हैं,
वो नेक ही फल दिखाते हैं ॥१॥
समर करने के कारन आप,
जो इस जा पे आए हैं।
नतीजा और दृश्य इसका,
जो है तुमको वताते हैं ॥२॥
तुम्हारी दोनों में से एक की,
हानी अवश्य होगी।

उमर भर रोवेगा जो,
जीतेगा तुझको जताते हैं ॥ ३ ॥
तू निश्चय मान लेना वो,
सगा तेरा ही भाई है ।
के जिसके मारने के,
वास्ते ख़ंजर उठाते हैं ॥ ४ ॥
हज़ारों निरपराधी और,
इलावा मारे जाएंगे ।
क्यों बच्चों को अनाथ,
अबलाओं को दुखिया बनाते हैं ॥ ५ ॥
तुम्हारे इस समर से कुछ,
न शुभ परिणाम निकलेगा ।
नहीं किस वास्ते दिलमें,
ख़याल अपने यह लाते हैं ॥ ६ ॥

१२३

राजा का जवाब ।

(शेर)

विचार और ख़याल तो हमने क़िले में बन्द करवाया ।
मगर तुमने भी तो शत्रु को बांधव कैसे बतलाया ॥ १ ॥

१२४

साध्वी का जवाब ।

(शेर)

यह बिलकुल सत्य है और मानना आख़िर तुम्हें होगा।
हमारे ही बचन को पालना आख़िर तुम्हें होगा॥१॥
तुम्हारे दोनों भाइयों की जन्म दाता भी मैं ही हूं।
इलावा उसके यह भी जानना आख़िर तुम्हें होगा॥२॥

१२५

राजा का जवाब ।

(शेर)

है यह तो गप अलफ़ लैला से ज्यादा जान पड़ती है।
हथैली पर मेरे आगे ही सरसों सबज़ करती है॥१॥
करो माता क्षमा मुझको पधारो अपना रस्ता लो।
मेरी बैचैनी बढ़ती है घड़ी जूं जूं गुज़रती है॥२॥

१२६

साध्वी का जवाब ।

(वार्ता)

राजन ऐसे क्यों अकुला रहे हो शान्ति करो धीर्य धारन करो, में तुम्हारा सब वृतांत सुनाती हूं, फिर तुमको खुद मालूम हो जाएगा कि मैं भाई के साथ क्या बर्ताव करने के वास्ते तय्यार हुवा हूं।

१२७

राजा का जवाब ।

(वार्ता)

सती जी मुझे इस समय कुछ नहीं सुहाता है, और न आपकी दासतान ही सुनने को दिल चाहता है, और मैं यह भी मानने के लिये तय्यार नहीं हूं कि सुदर्शन नरेश चन्द्रयश मेरा भ्राता है ।

१२८

साध्वी का जवाब ।

(वार्ता)

राजा यह हठ जाने दीजे युवा अवस्था की उमंग भरी ताक़तों का अभिमान छोड़ दीजे, अब तक कुछ नहीं बिगड़ा है बाद में पश्चात्ताप करते कुछ न बन पड़ेगा ।

(शेर)

अब भी कहना मानले कहूं तेरे हित हेत ।
फिर पछताए क्या बने जब चिड़ियां चुगगईं खेत ॥ १ ॥

१२९

राजा का जवाब ।

(वार्ता)

जो होगा देखा जाएगा मगर अब मैं अपने

इरादे से न हटूंगा, चाहे पानी में आग और आग में बाग़ भी क्यों न लग जावे।

(शेर)

इरादा दिल में ठाना है जो करके मैं दिखाऊंगा।
मज़ा दुशमन को उसके मान का अब मैं चखाऊंगा॥

१२०

साध्वी का जवाब।

(वार्ता)

ख़ैर यह तुम्हारी मरज़ी मानें या न मानें अपना तो फ़र्ज़ तुमको ऊंच, नीच समझाना और भविष्य का दृश्य दिखलाना था, अब हम नगर में जाती हैं, जब तक हम वहां से वापिस नहीं लौट कर आवें तब तक तो कृपा करके संग्राम न करें।

१२१

राजा का जवाब।

(वार्ता)

राजा—अच्छा इतना हुकम तो आपका मान सकता हूं, मगर आप के वापस लौट कर आने के वक़्त की भी तो पाबन्दी होनी चाहिये।

साध्वी—सिर्फ़ आधा घंटा।

राजा—बहुत खूब मुझे स्वीकार है परन्तु इस वक़्त
के अन्दर अन्दर ही आजाना।

साध्वियों का जाते हुये नज़र आना।
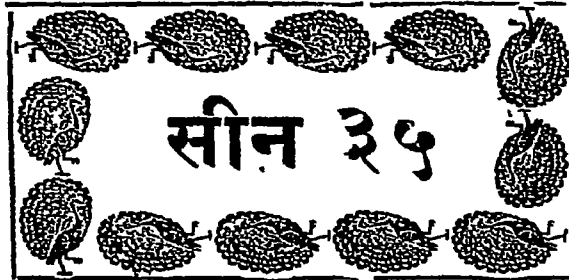
चन्द्रयश के दरबार का परदा।

१३२

महाराजा चन्द्रयश का दरबार में बैठे हुवे नज़र आना
और दरबान का दोनों साध्वियों को साथ लिये हुवे
आना महाराज चन्द्रयश का साध्वी भेष में अपनी
माता को पहिचान कर चरणों में गिरना
और कहना। (वार्ता)

उस परम परमात्मा का कोटान कोट बार धन्यवाद है जिसके परताप से माता जी आपके पवित्र दर्शन हुवे, और जो खुशी मुझको इस वक्त पैदा हुई है उसका बयान करना मेरी ज़बान की शक्ती से बाहर है, परन्तु मैं इस समय आपकी कुछ भी संसारिक सेवा और सहायता नहीं कर सकता, क्योंकि आप साध्वी वृत्ति धारण किये

हुए हैं इस अरमान के पूरा न होने का अवश्य दुःख है—

(शेर)

माता जी अच्छा आपने जो दिलमें बिचारा।
बैसे तो कहिये है प्रसन्न चित्त तुम्हारा॥

और माता जी आपके यहां से चले जाने पर मेरे भाई या बहिना क्या पैदा हुवा।

(शेर)

वह भाई बहन पैदा हुवा है जो हमारा।
दिक्षा के वक्त आपने कहां उसको बिसारा॥१॥
इस वक्त किस जगह हैं और आनन्द तो हैं वो।
मिलने के लिए आया उमड़ सीना हमारा॥२॥

१२३

साध्वी का जवाब।

(गाना)

चाल—दिल हमने सनम को दिया नज़राना समझ कर।

तू बारबार कहता है जो मेरा ही मेरा।
राजन किसी का तू नहीं न कोई है तेरा॥१॥
माता पिता बंधू व सुत दम्पती का नाता।
सब हो चुका अनंती दफा मेरा और तेरा॥२॥

फिर एक इस सम्बन्ध के तो टूटने से अब।
वृथा है शोक लीन चिंतातुर होना तेरा ॥३॥
जग के तो हैं रिस्ते सभी स्वारथ भरे झूठे।
नहीं साथ देवेगा कोई आखीर में तेरा ॥४॥

(वार्ता)

राजन् मेरा, तेरा संसारिक सम्बन्ध अनंती दफ़ा हो चुका, संसारिक स्वार्थ भरी सेवा से आज तक कुछ प्रयोजन सिद्ध न हुवा, निष्प्रयोजन और धार्मिक सेवा भक्ती भाव कर ताकि कारज सफल होवे, और मेरे बन में चले जाने के पीछे तेरा भाई पैदा हुवा था—

(शेर)

तेरे पिना के स्वर्गवास होने पर गई।
कुछ गुप्त भेद सोच के बनको निकल गई ॥१॥
निर्जन जगह पे सरके निकट पैदा यह हुवा।
बस कर्म के उसी समय अलहदा यह हुवा ॥२॥
पर अय कंवर करम की भी विचित्र माया है।
अब बंधू तेरा तेरे पुर के बाहर आया है ॥३॥

राजा का जवाब।

(शेर)

जब मेरा भाई माता जी यहां पर ही है आया।
फिर क्यूं न अब तलक मुझे दर्शन है कराया ॥१॥

१२५

(साध्वी का जवाब)

(गाना)

चाल—यह तो मैं क्यों कर कहूं तेरे खरीदारों में हूं।

भाई को लाने के लिये अगवानी जाना चाहिये।
कुछ स्नेह का जलवा भी तो अपना दिखाना चाहिये॥
ताके उसे मालूम हो है प्रेम प्यारा भाई तू।
अब शरबते मुहब्बत उसे जाकर पिलाना चाहिये॥
गुज़रे दुखों को छोड़कर आनन्द दिल में लाईये।
बस देर मत कर जल्द तर चलना चलाना चाहिये॥

१२६

राजा का जवाब।

(गाना)

चाल—(सोहनी)

आपका कहना सब भांति मन्जूर है।
जो हुकम दो खुशी से गवारा करूं॥
आज का रोज़ मेरे लिये धन्य है।
दरश भाई का और जो तुम्हारा करूं ॥१॥

इस वक़्त दर्शनों का तलबगार हूं ।
 और सब मामले से किनारा करूं ॥
लेके चतुरंग सेना अभी साथ में ।
 जाके भाई से मैं पेशकारा करूं ॥२॥
आंख के सामने शकल है भाई की ।
 मुंह से भी भाई भाई पुकारा करूं ॥
ध्यान दिल में सिरफ़ बस रहा भाई का ।
 न बिना भाई के अब गुज़ारा करूं ॥३॥
माता जाता हूं लेने को अब सामने ।
 चरण में आपके सर हमारा करूं ॥
आप रखना कृपा इस जगह पर अभी ।
 आके 'मनशा' दरश फिर दोबारा करूं ॥४॥

१३७

साध्वी का जवाब ।

चाल---(सोहनी)

हुवा था तेरे सामने चन्द्रयश जिस,
 वक़्त तक हमारा गुज़र ही नहीं ।
दे रहे थे हुकम जङ्ग का फ़ौज को,
 था सिवा इसके मद्दे नज़र ही नहीं ॥१॥
भूले जोशे मुहब्बत में भाई के सब,
 इसका तो अब रहा बस ज़िकर ही नहीं ।

अब करोगे लड़ाई को दुशमन से या,
भाई का आगमन यह ख़बर ही नहीं ॥२॥

१३८

राजा का मन्त्री से कहना।

(शेर)

मन्त्री जी हमको इस समय अब क्या बनाना चाहिये।
भाई के सन्मुख किस तरह मिलने को जाना चाहिये॥
मैं प्रेम में भूला सभी कुछ ध्यान न मुझको रहा।
शत्रु के होते किस तरह अगवानी जाना चाहिये॥

१३९

मन्त्री का जवाब।

(गाना)

चाल—हसीनों का हर इक आलम में शोहरा हो ही जाता है।

तुम्हें अब भाई से मिलना मिलाना ही मुनासिब है।
और उनका पहले शुभागमन कराना ही मुनासिब है॥१
खड़ा है गरचे शत्रु फ़ौज लेकर सर हमारे पर।
मगर हमको कोई ख़तरा न लाना ही मुनासिब है॥२
बजाये तेग नेजा तीर बरछी और कटारी के।
धजाऐं और पताका का सजाना ही मुनासिब है॥३
हमें इस भांति लख कर शत्रु हमलावर नहीं होगा।
अब इस जा से हमें होना रवाना ही मुनासिब है॥४

१४०

राजा का जवाब।

(शेर)

जो आप का विचार है उत्तम विचार है।
तेरी ही राय साथ मेरा भी इज़हार है ॥१॥
वह काम जिसमें शोभा हो हमारी अब करो।
हत्तुलवसह जो हो सके तैयारी अब करो ॥२॥

राजा का भाई से मिलने के
वास्ते तैयारी करना।

सुदर्शनपुर के बाहर लश्कर का परदा।

१४१

महाराज नमीराज का अपने मन्त्री
और सेनापति से कहना।

(गाना)

चाल—हटादे आइना आवे ज़रूरत देखने वाले।

न आई साध्वी अब तक वक़्त होने को आया है।
आध घंटे के टाइम में मिनट पांच ही बक़ाया है ॥१॥

मिनट तो पांच हैं ज़ियादा क़दर सैकिंड की चाहिये।
प्रभूने तो समय भी बेश कीमत ही फ़रमाया है ॥२॥
है आयू लाख कोटी वर्ष की जिस चलते प्राणी की।
समय में एक होती है जुदा जीव और काया है ॥३॥
है चढ़ती शुभ प्रणामों की लहर जिस वक्त चेतन के।
समय में ही उन्हें आकर के केवल ज्ञान पाया है ॥४॥
बुरे परिणाम में जिस वक्त लेश्याकृश्न आती है।
गती नर्कादि का बंधन समय में ही बंधाया है ॥५॥
करो 'मनशा' जो करना है समय नहीं ब्यर्थ खोने का।
समय गुज़रा हुवा देखो नहीं बापस फिर आया है ॥६॥

महाराज नर्माराज का जङ्ग की तैयारी के लिये बिगुल
देना और सामने से नगर का दरवाजा खुलना और
महाराज चन्द्रयश और उसकी तमाम फ़ौज का
हाथों में रङ्ग बरंगी झंडियां लिये हुवे नज़र
आना नर्माराज का यह देखकर आपही
आप कहना।

१४२

(वार्ता)

हैं ! क्या मैं यह स्वप्न तो नहीं देख रहा हूं, शत्रु सैना के हाथों में बजाए चमकती हुई तलवारों के झंडियां फर्रा रही हैं, बड़ी बड़ी ध्वजाएं लहरा रही हैं, और मुबारिकबादी की सदाएं आ रही

हैं (दिल में साध्वी की बातों का ध्यान करके) माता ! साध्वी भेष में माता !

(शेर)

तुमने ही इस वक़्त यह चमत्कार दिखाया ।
घाती बने हुवे को तुम्ही ने है हटाया ॥१॥
मैं सच्च कह रही हूं वो है तेरा ही भाई ।
इन आपके लफ़्ज़ों ने अब दीवाना बनाया ॥२॥
वो भाई ही है सामने मेरी नज़र में है ।
इक भाई भाई भाई का उन्माद सर में है ॥३॥

यह कहते कहते दौड़ कर महाराज नमीराज का महाराज चन्द्रयश से बाथ भर कर मिलना एक तर्फ़ की चमकती हुई तलवारों और दूसरी तर्फ़ की लहराती हुई गुलाबी झंडियों के अक्स से सब के चेहरे गुलाबी नज़र आना ।

दरबार का परदा ।

१४३

महाराज चन्द्रयश और नमीराज का दरबार में बैठे हुवे नज़र आना और परियों का आना और मुबारिकबाद गाना ।

चाल (नाटक) गावोरी सब मिलके बधय्यां ।

आवोरी सब मिलके सजनियां ।
समय सुहाना कैसा है आया ॥
आपस में उत्सव मनायें हम ।
बधाई गाएं हम, सरको झुकाएं हम ॥
सब मिलके सजनियां ॥ आवोरी० ॥

१ परी—लगा दरबार देखो, बैठी सरकार देखो ।
चन्द्रयश महिपार देखो, शोभा अपार है ॥
२ परी—बायें बिराजे देखो, नमी महाराजे देखो ।
सरताज साजे देखो, देता बहार है ॥
३ परी—राजा हमारे देखो, हैं प्राण प्यारे देखो ।
आंखों के तारे देखो, सबको सुखकार है ॥
४ परी—श्री महाराज देखो, सारी समाज देखो ।
सुख से रहे राज देखो दुआ हरबार है ॥
आओरी सब मिलके सजनियां ॥१॥

सीन ३८

महल का परदा ।

१४४

महाराज चन्द्रयश और महाराज नमीराज का बैठे हुवे नज़र आना और चन्द्रयश का नमीराज से कहना ।

(गाना)

चाल (सोहनी)

जो साध्वी जी का अचानक यहां पे आना होगया।
तो रहने का संसार में अपना ठिकाना होगया ॥१॥
गर देर होती अब ज़रा नहीं पाप की थी इंतहा ।
था बाद में सारी उमर आंसू बहाना होगया ॥२॥
दुनियां के रङ्ग अजीब हैं छिनमें हुवा है क्या से क्या।
मुझको तो इब्रत खेज़ मेरा ही फ़साना होगया ॥३॥
दुनियां के धंधों में फंसा नहीं धर्म कुछ अब तक किया।
यूंही भटकते भटकते मुझको ज़माना होगया ॥४॥
बस होके क्रोध और मानके करता है अनरथ जीव यह।
और मोह जालसे फंसके दुनियां में दिवाना होगया ॥५॥
अब मैं ग्रहन दिक्षा करूं यह ताज तेरे सर धरूं ।
दिल मनशा लाज़िम दुनियां से मुझको हटाना होगया ॥

१४५

राजा का जवाब ।

चाल—(सोहनी)

यह ख़बर सुनकर तो सीना चाक मेरा होगया ।

बैठा है दिल आंखों के आगे भी अंधेरा होगया ॥१॥
जन्मते ही बाप मां से तो हुवा था मैं जुदा।
अब मौत से बदतर भी भाई जाना तेरा होगया ॥२॥
मैं क्या किसी को दोष दूं मेरे करम ऐसे ही हैं।
नहीं चार दिन रही चांदनी बस झट अंधेरा होगया ॥३॥
संसार मत त्यागें धरम जो बन सके यहां ही करें।
कौनसा अभी उमर का हिस्सा घनेरा होगया ॥४॥
आपके चरणों में सर है कहना मेरा मानलें।
अरदास करते शाम से 'मनशा' सवेरा होगया ॥५॥

१४६

चन्द्रयश का जवाब।

(गाना)

चाल—मेरे शिम्भू कैलाश बुलालो मुझे।

बचन लगते नहीं यह पियारे मुझे।
भाई कहते हो जो कुछ तुम्हारे मुझे॥
है बहरे हस्ती में यह कस्ती आरही इस दम।
भंवर में काल के आ डगमगा रही इस दम॥
डूवा लगने दो अब तो किनारे मुझे॥ बचन० ॥१॥
चौरासी लाख घाटियों से होके आया था।
वड़ी कठिन से यह मनुष्य जन्म पाया था॥
और सुख भी मुयस्सर थे सारे मुझे॥ बचन० ॥२॥

मगर मैं ख्याल दिलमें अब तलक न लाया हूं ।
कि मैं हूं कौन किस जगह से यहां क्यूं आया हूं ॥
अपने फ़रज़ सभी थे बिसारे मुझे ॥ बचन० ॥ ३॥
न पास ज़ादे सफ़र कुछ भी दूर है मंज़िल ।
मुझे यह वक्त ग़नीमत है कुछ करूं हासिल ॥
आगे लेजाये जो शिव द्वारे मुझे ॥ बचन० ॥४॥
है काल की ख़बर किसे कब उसने आना है ।
जवान बाल बृद्ध का न कुछ ठिकाना है ॥
'मनशा' किस समय आके पुकारे मुझे ॥ बचन० ॥५॥

(वार्ता)

भाई श्री बीतराग की कृपा से और अपने पुण्य के उदय से अचानक साध्वी जी का यहां पे आना होगया, जिससे अपना संसार मे मुंह दिखाने का और रहने का ठिकाना होगया. वरना जंग होने में क्या देर थी और नतीजा उसका हम दोनों में से एक की गर्दन पर शमशेर थी बाद में तमाम उमर के वास्ते पछताना था और आगे नरकों में ठिकाना था संसार में फंसे हुए प्राणी से बड़े २ अनर्थ होते हैं । जो मनुष्य जन्म पाकर उसको बृथा खोते हैं आख़िर काल आनेपर सर पकड़ कर रोते हैं मुझे इस अपने अफ़साने को देखकर बहुत कुछ सबक़ मिला है

अब मुझ संसार सागर में डूबते हुएको धर्म जिन-राज की किस्तीमें सवार होकर मुक्ति रूपी किनारे पर पहुंचने की कोशिश करते हुए न रोक। लो यह ताज तेरे सर रखता हूं।

(नमीराज के सर ताज रखना)

(गाना)

(चाल—ग़ज़ल कवाली)

तुम्हें रंजो अलम दिलसे हटानाही मुनासिब है।
हुकम जो है मेरा तुमको बजानाही मुनासिब है॥१॥
खुशी से दो मुझे आज्ञा करूं दिक्षा ग्रहण जाकर।
मेरा यह ताज अपने सर सजानाही मुनासिब है॥२॥
प्रजा की पालना करना यही है धर्म राजा का।
वक़्त कुछ धर्म में भी तुमको लानाही मुनासिब है॥३॥
क्षमा करना सभी 'मनशा' लो बस अब मैं तो जाताहूं।
समय अब व्यर्थ ज्यादा नहीं बिताना ही मुनासिबहै॥४॥

महाराजा चंद्रयश का जाना
और दिक्षा ग्रहण करना

[ड्राप सीन]

इति मनशाराम रचित मदनरेषा नमीराज नाटक का चौथा एक्ट समाप्तम्।

मदनरेषा-नमीराज नाटक.

मनसाराम रचित।

महाराज नमीराज का मिथिला नगर
को जाना, और उनके दाह रोग
उत्पन्न होना, पटरानी के उपाय
करने पर शान्ति होना, और
कर कङ्कन के कारण से
वैराग्य उत्पन्न होना।

* श्री जिनायनमः *

सीन ३९

महल का परदा ।

१४७

महाराज नमीराज का बैठे हुवे नजर आना
मत्री का आना और चेहरा उदास
देखकर सबब पूछना ।

चाल—हुआ सुत राम दशरथ के बहादुर हो तो ऐसा हो ।

श्री महाराज की नासाज़ तबियत आज पाई है ।
उदासी की झलक कुछ चेहरे पर देती दिखाई है ॥१॥
सबब रंजो उदासी का कहें इस ख़ाके पासे भी ।
वजा इस दासके अब तक समझ में कुछ न आई है ॥२॥

१४८

जवाब राजा का ।

चाल—नंबर (१४७)

मेरे मिथिला नगर की आज दिलमें याद आई है ।
नहीं कोई ख़बर भी उस जगह की दी सुनाई है ॥१॥

हुवा अरसा हमें अपना पियारा नग्र छोड़े को।
महल रनवास और प्यारी प्रजा दिलसे भुलाई है॥२॥
अगर बाजू व पर होते इसी वक्त उनसे जा मिलता।
मोहब्बत और उलफत सीने में ऐसी समाई है॥३॥
नहीं मालूम कुछ मुझको कि उनपे क्या गुज़रती है॥
बहुत मुद्दत हुई 'मनशा' पड़ी उनसे जुदाई है॥४॥

१४९

मंत्री का जवाब।

चाल नंबर (१४७)

अगर मर्ज़ी मुबारिक चलने को मिथिला के आई है।
हुकम की देर है नहीं और देरी दे दिखाई है॥१॥

१५०

(राजा का जवाब)

चाल नंबर (१४७)

है यह तो ठीक लेकिन मुझको इक तसवीश भारी है।
सुदर्शनपुर की परजा होगी यह सुनकर दुखारी है॥१॥
मेरा जाना गवारा तो करेंगे क्या नहीं अब तक।
महाराजा चंद्रयश की याद दिलसे बिसारी है॥२॥

१५१

मंत्री का जवाब।

चाल नं० (१४७)

यह दें विश्वास के थोड़े समय में लौट आएंगे।

रिआया प्राण प्यारी दिलसे हरगिज़ न भुलाएंगे ॥१॥
नहीं परजा को पीछे से कोई तकलीफ़ होने की।
जुदाई से वो थोड़े काल की नहीं रंज लाएंगे ॥२॥

१५२

राजा का जवाब।

चाल नंबर (१४७)

बहुत अच्छा मैं पबलिक आम,
अब दरबार करता हूं।
और अपने सब ख़यालातों,
का वहां इज़हार करता हूं ॥१॥

सीन ४०

दरबार का परदा।

१५३

महाराज नर्मीराज का दरबार में बैठे हुवे नज़र आना और हाज़रीन दरबार से कहते हुए नज़र आना।

(गाना)

चाल—फूला जो गुल है बाग़ में वो भी कभी कुमलाएगा।

मुद्दत हुई मिथिला शहर की कुछ ख़बर पाता नहीं।

है दिल मेरा बेचैन इससे कुछ कहा जाता नहीं ॥१॥
इसलिये मेरा इरादा उस जगह जाने का है।
लौट आऊंगा मैं जल्दी देर वहां लाता नहीं ॥२॥
प्राण हो बाजू हो मेरे आंख के तारे हो तुम।
आपकी खुशनूदी का कभी ध्यान बिसराता नहीं ॥३॥
मेरे पीछे से रहेंगे हाल निगरां मन्त्री।
दुख ज़रा मातर तुम्हें होने कोई पाता नहीं ॥४॥
आपको यहां पर जमा करने का है कारण यही।
न कहो जब तक खुशी से 'मनशा' वहां जाता नहीं॥५॥

१५४

प्रजा और दरबारियों का जवाब।

(गाना)

चाल--(सोहनी)

है महाराज का प्रेम और परवरिश,
आप सत्कार इतना हमारा करें।
सेवकों की ज़बां में तो ताक़त नहीं,
स्वामी धन्यवाद भी जो तुम्हारा करें ॥१॥
सारी नगरी की राजन अरज़ है यही,
नहीं ताक़त जुदाई गवारा करें।
मगर इतनी भी हिम्मत हमारी नहीं,
जो अदूले हुक्म भी तुम्हारा करें ॥२॥

आप मिथिला को तशरीफ़ लेजारहे,
जल्द वापस वहां से किनारा करें।
आप जब तक न आकर पधारें यहां,
याद में वक्त हरदम गुजारा करें ॥३॥
आपका हो गमन शुभ महूरत घड़ी,
सिद्ध कारज श्री जी तुम्हारा करें।
भूलना मत हमें जल्द करना कृपा,
आपसे अर्ज़ 'मनशा' दोबारा करें ॥४॥

दरबार बरखास्त होना और महाराज नमीराज का लश्कर लेकर मिथिला नगर को रवाना होना।

सीन ४१

मिथिला नगर का परदा।

१५५

महाराज नमीराज का नग्र में प्रवेश करना और नगर वासियों का अर्ज़ करना।

(गाना)

चाल—[सारङ्ग] कोई चातुर ऐसी सखी न मिली मोहे पीके द्वारे पहुंचा देती।

है महाराज शुभ और मुबारिक यह दिन,
आपके आज हमको हुवे हैं दरश ।
चन्द चकवी की मानिंद बेताब थे,
आपके दीद को हम रहे थे तरस ॥१॥
जाके महाराज तो वहां विराज गए,
यहां हमारे सभी सुख साज़ गए ।
ध्यान इक था तुम्हारे चरन में लगा,
राह तकते हमें होगया इक बरस ॥२॥
आज घर घर हुवे मङ्गलाचार हैं,
कुछ न आनन्द का भी रहा पार है ।
आपके आगमन की है इतनी खुशी,
अपनी आंखों का राह में बिछादें फरश ॥३॥
जिनके परताप से दिन हमारे फिरे,
धन्यवाद उस दयालू प्रभू का करें ।
बजरहा जिनकी शोहरत का डंका यहां,
और 'मनशा' ज़मीं से लगाता अरश ॥४॥

१५६

राजा का जवाब ।

(चाल नम्बर १५५)

आपका कहना प्यारी प्रजा ठीक है,

मैंने लेकिन वक़्त को गंवाया नहीं।
क्या करूं मैं भी कारण से लाचार था,
आज तक जो यहां पर मैं आया नहीं॥१॥
मेरे को आपकी हर वक़्त याद थी,
था तुम्हारा भरोसा व इमदाद थी।
मैं जुदा तुमसे जितने समय तक रहा,
तुमको दिलसे ज़रा भी भुलाया नहीं॥२॥
कहिये पीछे से आनन्द मगन तो रहे,
राज दर्बारियों से प्रशन तो रहे।
कन्या वानी की बारिश हुई या नहीं,
और दुःख तो कोई तुमने पाया नहीं॥३॥

१५७

प्रजा का जवाब।

(गाना)

चाल—यहां भी होते जाना यार काली काली जुल्फों वाले।

तुमरे चरणों के प्रताप हमनें दुक्ख ज़रा नहीं पाया।
पीछे से भी तुम्हारे जनाब, कन्या वानी बर्षा आव।
फूले नर्गिस गैंदा गुलाब, वृक्षों ने फल बहुत उपजाया॥
तुमरे चरणों के प्रताप० ॥१॥
न कुछ हुवा रोग और भय, आपस में रहे आनंद मय।

गुज़रा सुख से सब का समय,
अदना आला हाकिम रिआया ॥
तुमरे चरणों के प्रताप ॥२॥
आप के राज्य में जो सुख पावें,
ताक़त ज़बां में नहीं जो सुनावें।
हरदम 'मनशा' गुण को गावें,
देवें दुआ तुम्हें महाराया ॥
तुमरे चरणों के प्रताप० ॥३॥

सीन ४२

रनवास का परदा।

१५८

वहुत समय तक सुख शांति से राज्य करने के बाद अचानक करमों के जोग से महाराज नमं राज के शरीर में दाह रोग उत्पन्न होना महाराज का वेदना से व्याकुल होकर अपने दुख का इज़-हार करते हुवे नज़र आना।

(गाना)

चाल—घर से यहां कौन खुदा के लिये लाया मुझको।

रातभर मेरेको दाह रोग ने सोने न दिया।

उदय हुवे कर्म अशुभ जोगने सोने न दिया ॥१॥
शमा की तरह मेरी रात कटी सूली पर ।
आंखको बन्द ज़रा मात्र भी होने न दिया ॥२॥
दाह से सारा बदन मेरा जला जाता है ।
नीम बिसमिल सा है तड़फाया व सोने न दिया ॥३॥
सारी शब दर्दे जलन से मैं कुराहता ही रहा ।
खुद तो क्या मैंने किसी और को सोने न दिया ॥४॥

बड़े बड़े वैद्य हकीम डाक्टरों के इलाज़ करने
पर भी कर्मों के जोग से आराम न होना

१५९
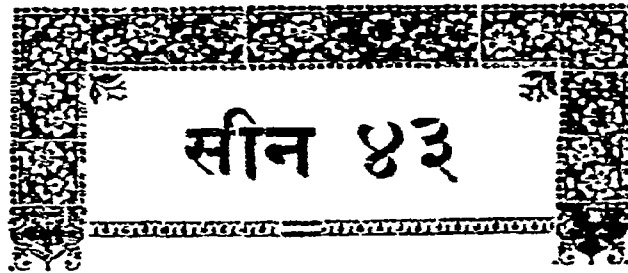
महाराज नर्पीराज का पलंग पर लेटे हुवे नज़र
आना और रानियों का इर्दगिर्द खड़े हुवे नज़र
आना और पटरानी का अर्ज करना ।

(गाना)

चाल—मेरे शिम्भू कैलाश बुलालो मुझे ।

होवे कैसे यह रंज गवारा हमें ।

देखें ब्याकुल दुखी जहां आरा तुम्हें ॥
हज़ारों वैद हकीम फिरते मारे मारे हैं ।
बहुत सी कोशिशें करके आखीर हारे हैं ॥
नज़र आया न कुछ भी सहारा तुम्हें ॥ होवे० ॥१॥
तुम्हारी बेदना को किस तरह मिटाऐं हम ।
नहीं समझ में आता क्या उपाय बनाऐं हम ॥
दुःख पाते दिवस हुवे बारा तुम्हें ॥ होवे० ॥२॥
खड़ी हैं हाथ जोड़ दासी नैन खोलो तो ।
यही भरा है दिलमें अरमां मुखसे बोलो तो ॥
कुछ हाथ से कीजे इशारा हमें ॥ होवे० ॥३॥
शरीर दाह रोग से जला जो जाता है ।
उपाय एक दासी की समझ में आता है ॥
'मनशा' जिससे मिले छुटकारा तुम्हें ॥ होवे० ॥४॥

पटरानी का जाना और रत्न जड़ित स्वर्ण पात्र में चन्दन का रस लेकर आना और नमीराज के शरीर मे मर्दन करना मर्दन से शान्ति मालुम होना और आंख झपकना परन्तु यकायक चौंक पड़ने से रानियों का पटरानी से कहना ।

१६०

(गाना)

चाल—कोई चातुर ऐसी सखी न मिली मोहे पीके द्वारे पहुंचा देती ।

रानियां—आंख मुद्दत में झपकी जो सरताज की,
धन घड़ी वास्ते यह हमारे बहन।
पर चौंकाया इन्हें आके जिस बातने,
क्या सबब इसका है यह बिचारें बहन ॥१॥

पटरानी—कारण इसका समझ में यही आता है,
शोर कर कङ्कनों का नहीं भाता है।
हाथ रख चूड़ी एक एक सोहाग की,
बाक़ी और चूड़ियां सब उतारें बहन ॥२॥

रानियां—है बजा आपने जौ के फ़रमाया है,
दासियों की समझ में भी यही आया है।
करती तामील हैं हुक्म की आपके,
काम बिलकुल हैं यह तो सुखारे बहन ॥३॥
करके लाखों यतन सारे ही हारे थे,
वैद्य माहिर सभी देश के सारे थे।
आपके चन्दनादि की मालिश ने तो,
बस चमत्कार से कर गुज़ारे बहन ॥४॥

तमाम रानियों का हाथ में एक एक सोहाग की चूड़ी
रखकर बाकी चूड़ियां उतारना और मर्दन करना।

१६१

महाराज नमीराज के मर्दन बदस्तूर होना और आवाज़
सुनाई न देने से पटरानी से कारण पूछना।

(गाना)

चाल—नंबर (१६०)

राजा—आपकी मुझको मालिश से सुख मिल रहा,
बात्त लेकिन समझ में यह आई नहीं।
हो रहा है बदस्तूर मर्दन मेरे,
क्या सबब शोर देता सुनाई नहीं ॥१॥

पटरानी—हाथ के कङ्कनों की यह आवाज़ थी,
आपके चित्त को जो सुहाई नहीं।
यह समझ कर उतारी हैं सब चूड़ियां,
शोर दे आपको जो सुनाई नहीं ॥२॥
हाथ में एक चूड़ी है सोहाग की,
क्योंकि रखनी थी ख़ाली कलाई नहीं।
आप आराम कीजे करें मालिश हम,
आपको नींद मुद्दत से आई नहीं ॥३॥

१६२

यह कारण मालूम होने पर महाराज नमीराज का
अपने आप विचार करना और कहना।

(वार्ता)

ओह! जब तक एक से ज्यादा कङ्कन हाथों में रहे शोर होता ही रहा, अकेला कङ्कन रह जाने से शोर बन्द हुवा, और कानों को शांति हुई, जहां

पर एक से ज्यादा हुवे वहां अशांति का कारण हो जाता है, यह मैं जरूर जानता था, मगर इस का असली वैराग्य से पूरित मतलब मेरी समझ में आज ही आया, अर्थात् आत्मा अकेली होने से और उसमे आधी, व्याधी, उपाधी दूर होने से जीव को शांति होती है !

(शेर)

निगाह कर देखलो सबही यह जग स्वप्ने का मेला है।
सुखी होता है तब ही जीव जब होता अकेला है ॥

इस लिए अब मुझे भी सुख का मार्ग ग्रहन करना चाहिये ।

१६३

(गाना)

चाल—(रसिया) कांटो लागोरे देवरिया मोहपे सङ्ग चलो न जाय।

आत्मन् ! अनेकत्व को त्याग, मगन अद्वेतानंद में होय।

आत्म के सङ्ग लगी उपाधी ।
रागद्वेप और मोह की व्याधी ॥
चित को होती नहीं समाधी ।
निजगुण को दिया खोय ॥ आत्मन अनेकत्व• ॥१॥
अकेला कङ्कन शोर न लावे ।
दो होने खड़बड़ मिच जावे ॥

घना समूह जंजाल बधावे ।
सुखी अकेला होय ॥ आत्मन अनेकत्व० ॥२॥
अपने दिल में सोच अलबेला ।
यह संसार स्वारथ का मेला ॥
जीव है तीनों काल अकेला ।
सहाई हुवा न होय ॥ आत्मन अनेकत्व० ॥३॥
स्नेह रङ्ग जब तक तू रंगेगा ।
तब तक आवागवन करेगा ॥
चौरासी में रुलता फिरेगा ।
कभी न शान्ति होय ॥ आत्मन अनेकत्व० ॥४॥
अब तो 'मनशा' दिल में ठानी ।
झूठे जग से प्रीत हटानी ॥
चाह लगी शिव की सुख दानी ।
जिससे अक्षय सुख होय ॥ आत्मन अनेकत्व० ॥५॥

यह कहते कहते सोजाना ।

ड्योढी का परदा ।

१६४
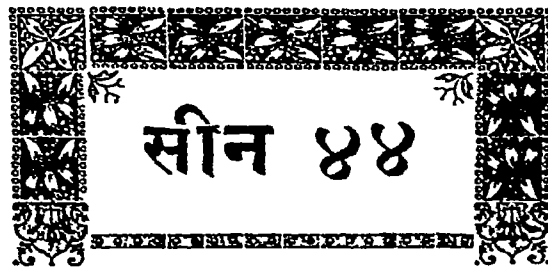
प्रातःकाल के समय ड्योढ़ी की बालाई मंजिल पर नक़ा-
रचियों का साज़ के साथ मधुर स्वरों में सूर्य महाराज
का स्वागत करते हुवे नज़र आना।

(गाना राग प्रभाती)

चाल–[भजन] देख रूप रघुबर का बोली सखियन से वह राजदुलारी।

निद्रा टारो, नैन उघारो, ध्यान धरो श्रीजिन केरारे।
काल अनादी बिताय दिया है।
लाख चौरासी में दे फेरारे ॥
अब तो मनुष तन पाकर प्राणी।
जन्म सफल करले तेरारे ॥
निद्रा टारो, नैन उघारो० ॥ १ ॥
जग का स्वरूप मुसाफिरखाना।
चिड़िया रैन बसेरारे ॥
कहां से आया, गया किधर को।
ना कुछ रहता है बेरारे ॥
निद्रा टारो, नैन उघारो० ॥ २ ॥
थोड़े समय तक चेहल पहल है।
पीछे पड़ा खाली डेरारे ॥
अपने अपने पंथ लगे सब।

होने को आया जब सवेरारे ॥
निद्रा टारो, नैन उघारो० ॥ ३ ॥
अब तो 'मनशा' आलश त्यागो ।
मिटा मिथ्यात का अन्धेरारे ॥
समकित सूर्य प्रकाश हुवा जब ।
कार्य सरे सब ही तेरारे ॥
निद्रा टारो, नैन उघारो० ॥ ४ ॥

यह आवाज़ सुनकर महाराज नमीराज
का नींद से बेदार होना ।

महल का परदा ।

१६५

महाराज नमीराज का पिलङ्ग पर बैठे हुवे नज़र आना
सामने ६५ का यन्त्र तसवीर रूप में दीवार पर
लटका हुवा नज़र आना राजा का अपने इष्टदेव
२४ जिनराज की स्तुती यंत्र के मुताविक करना ।
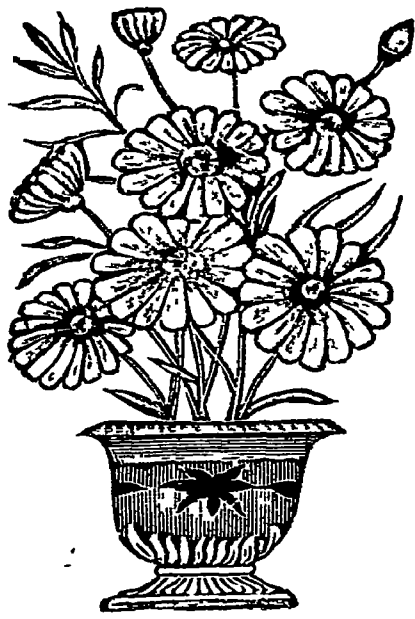
(चाल—(स्तुती । तृभंगी छन्द १०-८ ८-६ ।)

श्री [१५]धर्मजिनेशं, [८]चन्द्रप्रभेशं, [१]रिषभमहेशं, [२४]वीरेशं ।
[१७]कुन्थभदेशं, [१६]शान्ति चक्रेशं, [१४]अनंत पोतेशं, परमेशं ॥
[७]सुपार्श्वदयालं, [५]सुमतिकृपालं, [२३]बामाकेलालं, जनपालं ।
[२२]नेमशुक्रमालं, [२०]सूव्रतटालं, भवदुखजालं, [१३]विमलालं ॥
[६]पद्मकल्यानं, [४]अभिनंदानं, [३]शम्भूसध्यानं, [२१]नमीजानं ।
[१९]मल्लीप्रधानं, [१२]बासुमहानं, [१०]शीतलभानं, गतमानं ॥
[९]पुष्पकुमारं, [२]अजित अवतारं, गुणविस्तारं, [२५]संघसारं ।
[१८]अरह सुखकारं, [११]आंश आधारं, शिवदातारं, जगसारं ॥
जपनित जापं, स्थिरकर आपं, दुख संतापं, दलपापं ।
हरन है वापं. शिवसुख थापं, 'मनशा' अलापं, यह जापं ॥

स्तुति कर चुकने के बाद अपने त्वरित के आए हुवे स्वप्न को याद करके विचार करना ।

"मैं सुफेद अष्टदंत हाथी पर सवार होकर मेरु पर्बत के पांडुक बन की सैर कर रहा हूं". इस स्वप्न का फल तो बहुत ही उत्तम कल्यान

कारी और श्रेष्ठ है, तथा मुझे यह भी याद पड़ता है किसी वक्त में वाक़ई मैंने इस जगह की स्वप्न के मुताबिक़ हूबहू सैर की है मगर कब—

यह विचार करते करते जाति सुमिरन ज्ञान उत्पन्न होना और अपने पिछले जन्म का हाल मालूम करके कहना।

मैं एक समय सातवें देवलोक में था और श्रीजिनेन्द्र महाराज के जन्म कल्यान के अवसर पर उत्सव मनाने के लिए मेरु पर्वत पर पांडुक बनमें गया था, और वह देव गती मुझको साधूव्रति पालने के प्रताप से प्राप्त हुई थी, तो अब भी मुझे बहुत जल्दी सञ्जम धारन करना चाहिये।

१६६

रानियों का आना और चर्णों में नमस्कार करके पटरानी का अर्ज़ करना।

(वार्ता)

पटरानी—प्राण नाथ इस समय तो आपके शरीर में किसी प्रकार की पीडा नहीं है।

राजा—श्रीजिनेन्द्र देव की कृपा और आपके मर्दन के परिश्रम के प्रभाव से इस वक्त मेरी तबियत में बिलकुल शांति और सुख है।

पटरानी-प्राणेश्वर दासियां इस उपमा के योग्य कब हैं, यह तो भगवान की दया और आपके शुभ कर्म व पुण्य का ही प्रताप है, जो हमारे को यह मङ्गल कारी घड़ी प्राप्त हुई।

(शेर)

स्वामी का जामे सेहत पी करके झूमती हैं।
चर्णों में सिर झुकाकर क़दमों को चूमती हैं॥

राजा-प्राण प्रिये! मुझे कर कङ्कन के कारण से वैराग उत्पन्न हुवा, और मैं संसार का स्वरूप भली भांति देख चुका।

(शेर)

न शादां है कोई जग में यह दुनियां देखी भाली है।
न कोई भी बशर ऐसा जो रंजो ग़म से ख़ाली है॥
यह लक्ष्मी रानियां बैभव का सुख तो है क्षणक मातर।
धर्म वस्तू ही ऐसी है जो सङ्ग में जाने वाली है॥

इस लिए मेरा अब संसार को त्यागकर दिक्षा धारन करने का मनशा है।

(गाना)

चाल (ग़ज़ल) रङ्ग लाती है हिना पत्थर पे पिस जाने के बाद।

राज का तो भार है यह दुख उठाने के लिये।
है फ़क़ीरी धारना आराम पाने के लिये ॥१॥
दुनियां में रहती है ज़मीं जोरु व ज़र से बेकली।
है यही ज़रिया सिरफ संतोष लाने के लिये ॥२॥
दुश्मने जां से नहीं है चैन दम भर भी यहां।
ख़्वाहिशें मौजूद रहती हैं सताने के लिये ॥३॥
लाव लश्कर होते भी हर वक्त रहता है ख़तर।
है क्षमा का खड्ग ही अब डर मिटाने के लिये ॥४॥
देखकर होता था खुश ग़ैरों के थ्येटर रात दिन।
अब अपना ही जीवन तमाशा है रिझाने के लिये ॥५॥
क़ीमती पौशाक भी तन को सुहाती ही नहीं।
स्वेत बस्तर काफ़ी है तन को छुपाने के लिये ॥६॥
हीरे लालों से जड़ाऊ जेवर अब फबते नहीं।
इक-ब्रह्मचर्य ही भूषण है शोभा सजाने के लिये ॥७॥
कमख़्वाब अतलस के गदैले सख्त लगते हैं मुझे।
घास सूखी काफ़ी है मेरे बिछाने के लिये ॥८॥
बरतनों से सोने चांदी के नहीं अब प्रेम कुछ।
पात्र बस है काष्ट का निर्वाह चलाने के लिये ॥९॥
नेमतें दुनियां की सारी मेरे आगे हेच हैं।
निर्दोष भोजन काफ़ी है क्षुधा मिटाने के लिये ॥१०॥

सैर से गुलज़ार की भी जी मेरा उकता गया।
ज्ञान बाग़ीचा बहुत है दिल लुभाने के लिये॥११॥
तीर्थ यात्रा स्नान को जाने के एवज़ अब तो है।
तीर्थ इन्द्री निग्रह जपतप नहाने के लिये॥१२॥
नाच मुजरा देखने में दूसरों के महव था।
नाच है कर्मों का अब मुझको नचाने के लिये॥१३॥
छोड़ 'मनशा' सारे झगड़े अबतो बस तन-मन है यह।
चर्णों में जिनराज के लौ को लगाने के लिये॥१४॥

१६७

पटरानी का जवाब।

चाल—बसु के लाल गिरधारी जो चातुर हो तो ऐसा हो।

कहा है आपने जो कुछ यह फ़रमाना मुनासिब है।
करें कल्यान आतम का ये ख्याल आना मुनासिब है॥
मगर दिक्षा में सरदी गरमी भूख आदि बहुत दुःख है।
गृहस्थाश्रम में रह कर ही धरम ध्याना मुनासिब है॥

१६८

(राजा का जवाब)

चाल नंबर (१६७)

न गृहस्थाश्रम में रह कर,
धर्म पूरासा बन आए है।

इसी से तो तिर्थंकर,
चक्रवर्ती तज के जाए हैं ॥ १ ॥
जो दुःख की कहती हो हैं,
सीत गर्मी भूख प्यास आदी।
अनन्ती बार इससे भी,
बहुत ज्यादा उठाए हैं ॥ २ ॥
अनादि काल से परबश तो,
चेतन कष्ट सहता है।
मगर स्वः बश नहिं निज.
आत्मा से ज़ोर लाए हैं ॥ ३ ॥
इसी से काल खोया है,
अनन्ता जीव ने इतना।
पड़े संसार सागर के,
भंवर में गोते खाए हैं ॥ ४ ॥
मुझे यह बात कहना है,
तुम्हारा 'मनशा' ला हासिल।
के ज्यूं परकाश में सूरज,
के दीपक को दिखाए हैं ॥ ५ ॥

१६९

रानी का जवाब।

नाज़—जज़ कैसे भरूं मैं गहरी नदिया।

जाने दो हठ कहा मानो सांवरिया।
हाथ जोड़कर बिनती करत हैं।
झुका झुका कर मस्तक धरत हैं॥
बार बार तोरे चरण सांवरिया।
जाने दो हठ कहा मानो सांवरिया॥१॥
जब से खबर दिक्षा की सुनपाई।
तन-मन की सब सुध बिसराई॥
कल न पड़त अहर्निश पलघरिया।
जाने दो हठ कहा मानो सांवरिया॥२॥
जूं वर्षा बिन पपीहा निराशा।
चन्द्र बिना है चकोर उदासा॥
तड़फत है बिन नीर मछरिया।
जाने दो हठ कहा मानो सांवरिया॥३॥
यूं तड़फें तुम दर्शन प्यासी।
एक हज़ार खड़ी हैं दासी॥
बस रहा चित्त चरण में तुमरिया।
जाने दो हठ कहा मानो सांवरिया॥४॥
मानो कहन यह स्वामी हमारी।
दिक्षा ग्रहन नहीं करनी सुखारी॥
'मनशा' इस पंथ की बिकट डगरिया।
जाने दो हठ कहा मानो सांवरिया॥५॥

१७०

राजा का जवाब।

चाल—हमें क्या काम दुनियां से हमारा ढङ्ग निराला है।

मुझे लाज़िम है दुनियां से जो दिल अपना हटावूँ मैं।
तजूं स्वारथ की दृष्टी हो जो परमारथ बनावुं मैं॥१
दिखाए हों मुझे सुख स्वर्ग के जब पहले संयम ने।
भला कुर्बान अब उस पर कहो क्यों कर न जावुं मैं॥२
फंसा गर मैं रहूँ यूँही करूं नहीं आत्मा सिद्धी।
जब आये काल सर पे तब जतन फिर क्या करावुं मैं॥३
यह तो तुम जानते हो एक दिन तुमसे जुदा हूँगा।
नहीं मालूम बिछुड़ो पहले तुम या विछड़ जावुं मैं॥४
तो फिर तो आज तुमसे आत्मा कल्यान कारण ही।
बिदा अ होता हूँ देखो ज्ञान कर तुमको जतावुं मैं॥५
हमारा चुक गया आपस का लेना देना अब तक तो।
नया नौता नहीं आइंदा को अब फिर चलावूँ मैं॥६
तुम्हें खुश चाहिये होना बजाए रञ्ज करने के।
जो शिव की राह में 'मनशा' क़दम अपना बढावुं मैं॥७

राजा का दिक्षा धारन करने के वास्ते चलने को तैयार होना।

[ड्राप सीन]

इति मनशाराम रचित मदनरेषा नमीराज नाटक का पांचवां एक्ट समाप्तम्।

मदनरेषा-नमीराज नाटक.

मनसाराम रचित।

इन्द्र महाराज का देवलोक से
महाराज नमीराज की परी-
क्षार्थ आना, और ब्राह्मण
रूप धारण करके
उनसे प्रश्न उत्तर
करना।

* श्री जिनायनमः *

सीन ४६

देवलोक का परदा।

पहले देवलोक में शक्रेन्द्र महाराज का दरबार लगा हुवा नज़र आना और परियों का श्री जिनेन्द्र भगवान का मङ्गलाचरण गाते हुवे नज़र आना।

चाल—नाटक (सिंध भैरवी) हाए सय्यां पड़ूं मैं तोरे पय्यां सतावो काहे मद्दीका।

हमारे स्वामी, भगवन हो अंतरयामी,
करो जी हमें भव सिंधू से पार।
प्रभू हम हैं शरण में तुम्हारी।
तेरी भक्ती हृदय में है धारी॥
धारी मोरे स्वामी, तुम्हारी मोरे स्वामी।
दिन रतियां, तुम बतियां; शिव पतियां, बसी छतियां॥
हमारे स्वामी, भगवन हो अंतरयामी, करो जी०॥१॥

तृशला दुलारे, हूँ तेरे सहारे।
'मनशा' चौरासी फिर आए, अबतो फेरी दो मिटाए।
कर निस्तार, दुखको टार, भव से पार, अय अवतार।
हमारे स्वामी, भगवन हो अँतरयामी, करो जी०॥२॥

इन्द्र महाराज का ज्ञान बल से जम्बूद्वीप के हालात देखना और
मिथिला नरेश नमीराज के दिक्षा धारन करने के उज्वल
प्रणाम देखकर उनकी परिक्षा के वास्ते रवाना होना।

मिथिला नगर के बाहर उद्यान का परदा।

१७२

महाराज नमीराज का उद्यान में खड़े हुवे नज़र आना
इन्द्र महाराज का ब्राह्मण का रूप धारन करके आना
और नमीराज से प्रश्न करना।

(गाना)
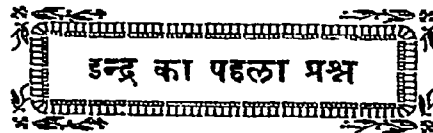
चाल—[सारङ्ग] कोई चातुर ऐसी सखी न मिली मोहे पीके
द्वारे पहुंचा देती।

हे दयालू ! दया आज कहां जावसी,
नीती और रहम दिलसे भुलाया कहां ।
सारी परजा का इक तू ही आधार था,
आके मझधार बेड़ा डुबाया कहां ॥ १ ॥
अब कहो तेरे बिन आश्रय किसका लें,
और दुःख जो पड़े जाके किससे कहें ।
धर्म था करता परजा की तू पालना,
लेना संयम का दिल में समाया कहां ॥ २ ॥

१७३

(नमीराज का उत्तर)
चाल नंबर (१७२)

मालवा देश में एक उद्यान है,
वृक्ष है एक उस जापे फूला फला ।
आके आराम पाते हैं पँखी पशू,
मनुष जन करते बिश्राम हैं उस जगहा ॥ १ ॥
वृक्ष आंधी के कारण गिरा इक समय,
सूख कर टूटे सब डाले और टहनियां ।
धूप तृषा से ब्याकुल वहां आए पथिक,
देखा तो साए का था न नामो निशां ॥ २ ॥
वृक्ष से बोले मूरख कहां जाएं हम,
हमको निरधार कर शांति से सो रहा ।

अब कहो सोचकर तुम ही दिलमें जरा,
वृक्ष का इसमें अय बिप्र है दोष क्या ॥३॥

१७४

॥ दोहा ॥

ब्राह्मण—दोष क्या इसमें वृक्ष का स्पष्ट है यह तो बात।
मूरखता है यह पशू, पक्षी की साक्षात ॥१॥

॥ दोहा ॥

नमीराज—तब तो मेरा भी कहो, बिप्र क्या इसमें दोष।
मुझ पर जो वृथा करें, मेरे आश्रित रोष ॥२॥

१७५

इन्द्र का नगर में आग लगी देखकर
(खुद वैक्रयमइ आग लगा कर)

नमीराज से दूसरा प्रश्न करना

चाल—(सोहनी)

राज क्षत्री लखो नग्र को ग़ौर कर,
सामने शहर में क्या दशा छारही।
है कोई जो बचाए बचाए हमें,
यह सदा हर सिमत से सुनो आरही ॥१॥
आपका जल रहा शहर परजा सभी,
महल मन्दिर भस्म भूत हैं हो रहे।

भस्म निर्दोष प्राण हुवे जारहे,
रानियां आपकी कैसी बिलला रहीं ॥२॥
हैं मदद के यह ख़्वाहां तुम्हारे सभी,
जाके इमदाद करके बचाओ अभी।
जोग लेना तो लाज़िम है पीछे तुम्हें,
दूर करके यह आफ़त जो सर छारही ॥३॥

१७६

(जाति सुमरण ज्ञान से बेक्रयपड़ अग्नि लगी जानकर)
नमीराज का जवाब देना।
चाल—(सोहनी)

विप्र यूंही तुम्हें यह भरम होरहा,
कान आंखें तुम्हारी ख़ता खारहीं ॥
आग दिखती नहीं लफ़ज़ सुनता नहीं,
शहर में सबको शांति नज़र आरही ॥१॥
आपके कहने को मानलूं भी अगर,
तो भी बस्तू नहीं मुझपे जो के जले।
आत्मा मेरी गलती व जलती नहीं,
और क्या शय है फिर जो जली जारही ॥२॥
आप करते हैं सम्बन्धियों का ज़िकर,
मेरा सम्बन्धी मैं हूं नहीं दूसरा।
आत्मा है अकेली तिहूं काल में,
सोच तो बुद्धि क्यों आज भरमा रही ॥३॥

१७७

चाल—इलाजे दर्द दिल तुम से मसीहा हो नहीं सकता।

शरम तुमको नहीं आती जो दिलमें क्षत्री कहलावो।
के ऐसे नग्र सुन्दर को बिना स्वामी किये जावो॥
तुम्हें मालूम नहीं क्या राज देख हाथों में बालक के।
करेंगे हमला दुश्मन कुछ जतन इसका तो करजावो॥
प्रथम तो कोट पत्थर का शहर के गिर्द बनवावो।
और उसके साथ चौड़ी और गहरी खाई खुदवावो॥
और आगे खाई के हो बाड़ कांटेदार वृक्षों की।
क़िले और महल दर्वाजों पे संगीं तोपें चढ़वावो।
चढ़ा दर्वाजों में मज़बूत तू जोड़ी किवाड़ों की।
हिफाज़त शत्रु से कर पहले यह फिर दिक्षा मनलावो॥

१७८

(नमीराज का उत्तर)

चाल—नंबर (१७७)

उपाय तुमने जो शत्रु,
से रक्षा के बताए हैं।

वह तो अय विप्र मैंने,
पहिले ही से सब बनाए हैं ॥ १ ॥
यह कैसे किस तरह से सोभी,
मैं समझाता हूं तुमको ।
है आत्म ज्ञान पुर मेरा,
व कोट इसके कराए हैं ॥ २ ॥
क्षमा, निर्लोभ, मद, मर्दन,
सरलता, सत्य, सञ्जम, तप ।
परिग्रह, त्याग, ब्रह्मचर्यः,
शौच्य, यह दस बनाए हैं ॥ ३ ॥
सम, संवेग, निर्बेगी; दया,
और आस्ता इसमें ।
बहुत मज़बूत सुन्दर,
पांच दर्वाज़े लगाए हैं ॥ ४ ॥
बाह्य और अभ्यन्तर तप,
चढ़ाए दो किवाड़ उनमें ।
जो फोड़ें मान गज का सर,
द्वादश कीले जड़ाए हैं ॥ ५ ॥
खुदी है गिर्द कोटों के,
बचन शुभ योग की खाई ।

पवित्र ज्ञान रूपी उसमें,
निर्मल जल भराए हैं ॥ ६ ॥
और उसके आस पास,
अविनय व नय के वृक्ष कंटक हैं।
गहन गम्भीर रोपी है,
घटा ऐसे लगाए हैं ॥ ७ ॥
कषाए और प्रमाद अव्रत,
अशुभ मित्थ्यात्व योगादि ।
यह दुशमन इस मेरी तदबीर,
से नहीं बल दिखाए हैं ॥ ८ ॥
कदाचित ऐसा पक्का,
इन्तज़ाम होने के ऊपर भी।
कुमत रूपी जो मन्त्री की,
सलाह से दुशमन आए हैं ॥ ९ ॥
तो हरदम तोप काया योग,
युद्ध की तय्यार रहती है।
है गोलन्दाज़ आतम बल,
जो तप गोले चलाए हैं ॥ १० ॥
कोई शत्रू नहीं "मनशा",
मेरी नगरी में आने का ।

किये हैं जो जतन मैंने,
तुम्हें विप्र सुनाए हैं ॥ ११ ॥

१७६
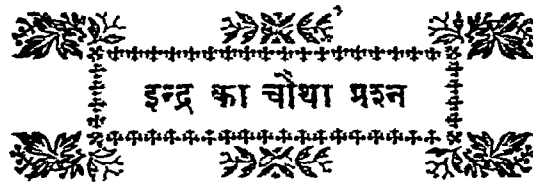
इन्द्र का चौथा प्रश्न

चाल—(चौपाई)

तुम हो राजन पती महाराया ।
चाहिये राज चिन्ह दिखलाया ॥
याद सदा की जो रह जावे ।
आगे नसल तेरी सुख पावे ॥ १ ॥
अती सुन्दर महलात बनाओ ।
मनोहर बाग बाड़ी लगवाओ ॥
जिससे प्रगट होवे चतुराई ।
दूर देश में होवे बड़ाई ॥ २ ॥
उदारचित्त राजन कहलावे ।
नहीं तो कंटक प्रजा बतावे ॥
जो देखे यश तेरा गावे ।
बहुत समय तक नाम रह जावे ॥ ३ ॥
मान कहा मेरा अब लीजे ।
इस कारज में विलम्ब न कीजे ॥

पीछे जो होवे "मनशा" तुम्हारा ।
भोगो राज करो ख़ाह किनारा ॥ ४ ॥

१८०

(नमीराज का उत्तर)
चाल—(चौपाई)

बिप्र यह जो तुमने फ़रमाया ।
मेरे मन को अति ही भाया ॥
मुद्दत से था बिचार यह मेरा ।
करूं महल तय्यार अनेरा ॥ १ ॥
पर ऐसा नहीं ज़ो जल जावे ।
पड़े कभी पानी गल जावे ॥
इनसे बचे समय कोई आवे ।
होय पुराना खुद गिरजावे ॥ २ ॥
क्यों कि देख तुम्हीं अब पाए ।
अब तक जो थे महल बनाए ॥
जलते बलते तुमने देखे ।
कहो अब आए वह किस लेखे ॥ ३ ॥
अब मैं क्यों मूरख बनजाऊं ।
ऐसे फिर महलात बनाऊं ॥
तब फिर कैसा महल बनाऊं ।
सुनो भेद तुमको समझाऊं ॥ ४ ॥

॥ दोहा ॥

शिव रूपी तो महल है, जिसके बनाने काज।
मुनिव्रत साधन कर करूं, जमा पूंजी महाराज ॥१॥
पूंजी जब तक जमा न हो, नहीं करूं आराम।
इन महलों को तज करूं, जङ्गल में विश्राम ॥२॥
रहना तो उस महल में, जो है अनुपम अभिराम।
कोई भी जहां भय नहीं, सदा अचल सुख धाम ॥३॥

१८१

इन्द्र का पांचवां प्रश्न
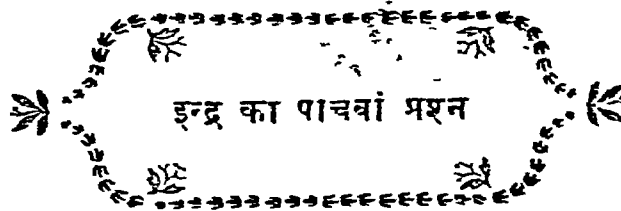
चाल—सितम से बाज़ आ ज़ालिम क़यामत होने वाली है।

तुम्हारे राज में जो दुष्ट हों और उनके रागी हों।
दमन कर उनको पहले आप पीछे से जो त्यागी हों॥
बदी रुक जाएगी होती हुई गर नग्र में राजन।
तो परजा तेरे इस उपकार की अत्यन्त भागी हो॥

१८२

(नमिराज का उत्तर)

चाल नंबर (१८१)

तुम्हारा है बजा कहना,
मुझे इन्साफ़ प्यारा है।

दमन दुष्टों को कर क़ायम,
अमन करना विचारा है ॥ १ ॥

जो मुझ चेतन की नगरी को,
न कुछ तकलीफ फिर होवे।
पता और खोज उनका,
खोजना करके निकारा है ॥ २ ॥

कर्म हैं आठ पांच इन्द्री,
कषाये चार मन पापी ।
सताने से इन्हीं के जीव,
फिरता मारा मारा है ॥ ३ ॥

दमन यह दुष्ट बिन किरिया,
की शुद्धी के नहीं होंगे।
यही अब सोचकर तृकर्ण,
शुद्धि मार्ग धारा है ॥ ४ ॥

रहें सुख से हमेशा फिर,
न दुख सन्ताप बिलकुल हो ।
इसी के साधने में दिल,
लगा "मनशा" हमारा है ॥ ५ ॥

इन्द्र का छटा प्रश्न
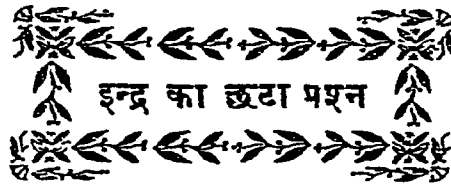
चाल—सवैया (२३)

मालवा देश का है तू अधिपती ।
सेवा में तेरे हैं राजे घनेरे ॥
केतक राजा तो होरहे आतुर ।
जाने को झंडे की छाया से तेरे ॥
ज्यादा समय तक जो ख़ामोश बैठे ।
तो खुद होंगे मुखत्यार मातहत तेरे ॥
इन्हें जीत मनवा के आन अपनी पहले ।
करो पीछे से जोग साधन भलेरे ॥१॥

१८४

(नमीराज का उत्तर)

चाल—सवैया (२३)

तपे हैं जो राजे, जो राजे सो नर्के ।
नहीं विप्र यह ध्यान में बात तेरे ॥
ज़मीं जोरु ज़र की जो तृष्णा में फंसके ।
करोड़ों मनुष्यों के सर काट गेरे ॥
नहीं बीर कहलाने के मुसतहिक वह ।
हैं घाती बने वोह मनुष्य जाती केरे ॥

मगर सूरमा योधा तो है वो प्राणी ।
जो निज आत्मा और मन जीत लेवे ॥ १ ॥
लड़े फ़ौज रन में रहे दूर राजा ।
दिखाने का स्व बल समय ही कम आवे ॥
मगर जब निज आतम से होती लड़ाई ।
किये आप संग्राम बिन जय न पावे ॥
लड़ाई है राजों की थोड़े समय की ।
आत्मिक युद्ध में अरसा ही बीत जावे ॥
बस अब तो मैं संग्राम ऐसा करूंगा ।
जो 'मनशा' सदा की ही जीत हाथ आवे ॥ २ ॥

(गाथा)

जो सहस्सं सहस्साणं, सङ्गामे दुज्जयेजिणे ।
एगेजिनेज अप्पाणं, एसस परमो जओ ॥

(अर्थ-शेर)

नहीं मुशकिल है कुछ भी जीतना दस लाख सुभटों का ।
मगर है आफ़रीं उसको कि जिसने अपना मन जीता ॥

इन्द्र का सातवां भजन
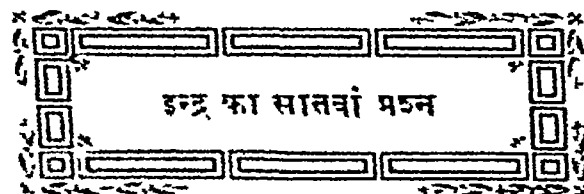
(वार्ता)

राजन ! परमात्मा ने सृष्टि रची है और आप को उस सर्वशक्तिमान् ने राजा किया है, तो आपका भी यही फ़र्ज है कि उसकी पालना करो, और आपका यह सिद्धान्त कि "तपे सो राजे और राजे सो नर्कै" बेशक मैं मानने के लिए तय्यार हूं, मगर राजा के नर्क के कर्म को निष्फल करने के वास्ते भगवान् ने अश्वमेधादि यज्ञ करना भी तो बताया है, सो आप अश्वमेधादि यज्ञ करें जिससे इस लोक में सुख और यश की वृद्धि हो और आगे स्वर्गों के सुख प्राप्त हों।

१८६

(नमीराज का उत्तर)

(गाना)

चाल—हटादे आइना ओ बे जरूरत देखने वाले।

ज़ो तुमने अश्वमेधादि यज्ञ करना बताया है।
यह करने का तो मैंने पहिले ही सामां बनाया है॥
शरीर है जिसमें वेदी यज्ञ करने वाला है आतम।
क्रोधादिक पशू हैं होम जिनका के कराया है॥
करम रूपी पड़ा ईंधन अज्ञान परचण्ड करने को।
लगाकर आग तप रूपी ज्ञान का घृत सिंचाया है॥

है यज्ञस्तंभ सत त्रिबेदी दर्शन ज्ञान चारित्र।
सरब जीवों की रक्षा दक्षणा में यह दिलाया है॥
यही मैं यज्ञ करने को हुवा तय्यार अब 'मनशा'।
यह पूरण यज्ञ होते ही मिले जो मनका चाहा है॥

१८७
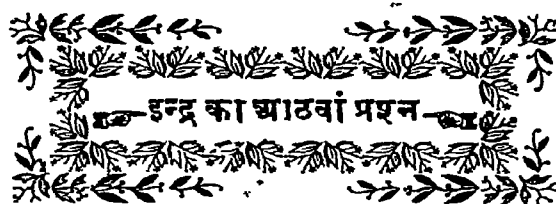
(गाना)

चाल—(मांड़) उमराव थारी बोली प्यारी लागे महाराज।

महाराज गृहस्थ धरम की महिमा न्यारी महाराज।
गृहस्थ धरम सब धर्म से, कहा अधिक परधान।
त्याग इसे साधू बनें जो, वो मूरख अनजान॥
महाराज वोह नहीं महिमा के अधिकारी महाराज।
महाराज गृहस्थ धरम० ॥ १ ॥
गृहस्थी तो धन ख़र्च कर, करे बहुत उपकार।
साधू भी तो मांगने, आवें गृहस्थी द्वार॥
महाराज गृहस्थ धर्म की ही बलिहारी महाराज।
महाराज गृहस्थ धरम० ॥ २ ॥
गृहस्थी तो परमार्थ के, कारज करे हज़ार।

त्यागी आलशी हो करे, बैठा सोच बिचार ॥
महाराज जाती देश के नहीं हितकारी महाराज ।
महाराज गृहस्थ धरम० ॥ ३ ॥

गृहस्थाश्रम का कठिन चलाना, जो समझें नरनार।
सिर मुंडवाना नंगे पांवों, करते अंगीकार ॥
महाराज पतीवर्ता वृद्धा नारी महाराज ।
महाराज गृहस्थ धरम० ॥ ४ ॥

सब धंधों से भिक्षा अच्छी, नये मिलें पकवान ।
एक पहर की मेहनत करनी, सात पहर सुख जान ॥
महाराज सोवें मज़े से पांव पसारी महाराज ।
महाराज गृहस्थ धरम० ॥ ५ ॥

इससे कहना मानलो, कहूं तुम्हें भोपाल ।
गृहस्थ धरम साधन करो, छोड़ साधका ख्याल ॥
महाराज जो हो तुमको सुख दातारी महाराज ।
महाराज गृहस्थ धरम० ॥ ६ ॥

१८८

(नमीराज का उत्तर)

(गाना)

चाल—(रमिया) कांटो लागोरे देवरिया मोहपे सङ्ग चलो ना जाय ।

जिनको त्यागी तुम वतलाते होते ऐसे त्यागी नांय।
तुमने गृहस्थ में सुख वतलाया ।

जिनवर दुःख का मूल फ़रमाया ॥
भरम में सदा रहे भरमाया ।
क्या उपकार बनाय ॥ जिनको त्यागी तुम० ॥१॥
गृहस्थी तो जग बीच फंसे हैं ।
लोभ मोह तृष्णा में धसे हैं ॥
साधू इन सब को बिनसे हैं ।
लगी सुख आतम चाह ॥ जिनको त्यागी तुम० ॥२॥
जग के धंधों में फंस जावें ।
खान पान में दिल ललचावें ॥
वोह तो साधू नहीं कहलावें ।
भीख मंगे कहलांय ॥ जिनको त्यागी तुम० ॥३॥
त्यागी के गुण सुनो बतावें ।
भिक्षा काज जो घर में जावें ॥
सूक्षम लें निर्दोष जो पावें ।
लेकर क्षुधा मिटांय ॥ जिनको त्यागी तुम० ॥४॥
फिर भी बयालीस दोष हटाते ।
गउ गौचरी करके लाते ॥
जैसे भंवर सुगन्धी पाते ।
पुष्प को नहीं दुखांय ॥ जिनको त्यागी तुम० ॥५॥
इस शरीर के निरबाह कारन ।

करते भोजन भूख निवारन ॥
लगें फिर आतम ज्ञान चितारन ।
प्रभू से ध्यान लगाय ॥ जिनको त्यागी तुम० ॥६॥
नंगे सिर और पांवों रहना ।
भूख प्यास आदिक दुःख सहना ॥
मुख से प्रिय बचन का कहनों ।
दिल न किसी का दुखांय ॥ जिनको त्यागी तुम० ॥७॥
ऐसे त्यागी पर उपकारी ।
भव से तारन के अधिकारी ॥
तिनके चर्नन धोक हमारी ।
'मनशा' शीश निवाय ॥ जिनको त्यागी तुम० ॥८॥

१८६
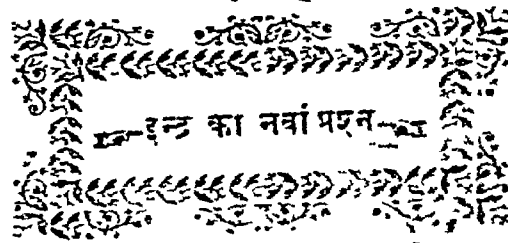
चाल—तरकारी लेलो मालन तो आई बीकानेर से।

पहले सुख भोगो साधू-व्रत धारन करना बाद में।
राज भंडार को सोने चांदी और रत्नों से भराई।
कञ्चन कामन अमृत तरु के भोगो फल सुखदाई॥
पहले सुख भोगो० ॥१॥

जब तक पूरण सुख न भोगो मन भटकत रहजाई।
जैसे धोबी का कुत्ता न घाट का न घर का ही॥
पहले सुख भोगो० ॥२॥
परतक्ष सुख को छोड़ के आशा परोक्ष सुख की लगाई।
वह भी मिले न मिले ख़बर नहीं अक़ल क्यों आज गंवाई॥
पहले सुख भोगो० ॥३॥

१९०

(नमीराज का उत्तर)

चाल—(सोहनी)

कञ्चन और कामनी ऐसी बस्तू हैं यह,
तृप्त इनसे कभी जीव पाया नहीं।
यह वो मदिरा हैं के पान करते ही झट,
बेशरम और पागल बनाया वहीं ॥१॥
इन संसारी सुखों की तो हालत है यह,
खाने में तो हैं किम्पाक फल के समान्।
मीठे स्वादिष्ट सुगन्ध मय बाद में,
एक रहती है जीव और काया नहीं ॥२॥
बिषय भोगों से शांति न होती कभी,
बल्कि बढ़ती है दिन-दूनी और चौगुनी।
ऐसे ही मालो दौलत जो ज्यादा बढ़े,
पार तृष्णा का फिर कुछ भी पाया नहीं ॥३॥

राज पदवी हज़ारों दफ़ा मिल चुकी,
देवता देवी के सुख मिले बारहा ।
सम्पदा धन अनन्ती समय हो चुका,
तो भी सन्तोष अब तक है आया नहीं ॥४॥
हमको हैरां परेशां हैं करते यही,
कनक कामन विषय भोग संसार के।
हाथ से इनके कोई न ऐसा बचा,
योनी नर्क और पशू में रुलाया नहीं ॥५॥
और यह तुम जो कहते हो परतक्ष क्यों छोड़,
सुख मोक्ष के हेत रखते क़दम ।
है ख़बर आगे सुख जो मिले न मिले,
भेद इसका समझ में कुछ आया नहीं ॥६॥
बिप्र कहना यह तेरा नहीं ठीक है,
ऐसा तो नास्तिक मत का है मानना।
मानता हूं मैं है आगे स्वर्गो नरक,
मोक्ष और बंध दिल से भुलाया नहीं ॥७॥
जीव कर्त्ता है जो कर्म फल भी मिले,
पुदगल आकाश आदि हैं षट द्रब्य भी।
है निरंजन निराकार परमात्मा,
ध्यान हिरदे से उनका गंवाया नहीं ॥८॥

कर्म अवतार हैं बासु बलदेव भी,
धर्म अवतार जिनराज भी हैं सभी।
चेतन और जड़ पदारथ हैं पुन पाप भी,
बिप्र इनका करो तुम सफाया नहीं ॥९॥
इससे 'मनशा' लगा दिल है वैराग में,
बिषय भोगों से अब मैं किनारा करूं।
आत्मिक सुख के सन्मुख मेरी नज़र में,
और सुख तो कोई भी समाया नहीं ॥१०॥

१९१

इन्द्र महाराज का अपना असली क्रान्तिकारक रूप प्रगट करके पांवों में गिरना और नमीराज महाराज का प्रशंसा करना।

(गाना)

चाल—हुवे सुत राम दशरथ के बहादुर हों तो ऐसे हों।

तुम्हें धन्य है नमीराजा राजय्या हों तो ऐसे हों।
लहर उज्वल प्रणामों की चढय्या हों तो ऐसे हों॥
किया सतधर्म का पालन क्षमा सागर गुणभूषण।
दयानिधि जैन मारग के दिपय्या हों तो ऐसे हों॥
परमारथ और निज कारज के साधन काज त्यागा जग।
धरम जिनराज नय्या के खिवय्या हों तो ऐसे हों॥
नहीं डर सरदी गरमी भूख तिरषा का ज़रा दिलमें।

सभी सुख दुःख के समता से सहय्या हों तो ऐसे हों।
मेरा अरमान था मैं बाद बल से तुमको जीतूंगा।
क़दम वैराग में लेकिन जमय्या हों तो ऐसे हों॥
किये जो जो प्रश्न मैंने पराजय कर दिया सब में।
ज्ञान वैराग उत्तर से जितय्या हों तो ऐसे हों॥
क्षमा अपराध करदीजे प्रभू तुम हो कृपा सिंधू।
तुम्हारी हो बिजय 'मनशा' बिजय्या हों तो ऐसे हों॥

इन्द्र महाराज का जय जयकार करते हुवे आकाश की ओर जाना और अदृश्य हो जाना।

[ड्राप सीन]

इति मनशाराम रचित मदनरेषा नमीराज नाटक का छटा एक्ट समाप्तम्।